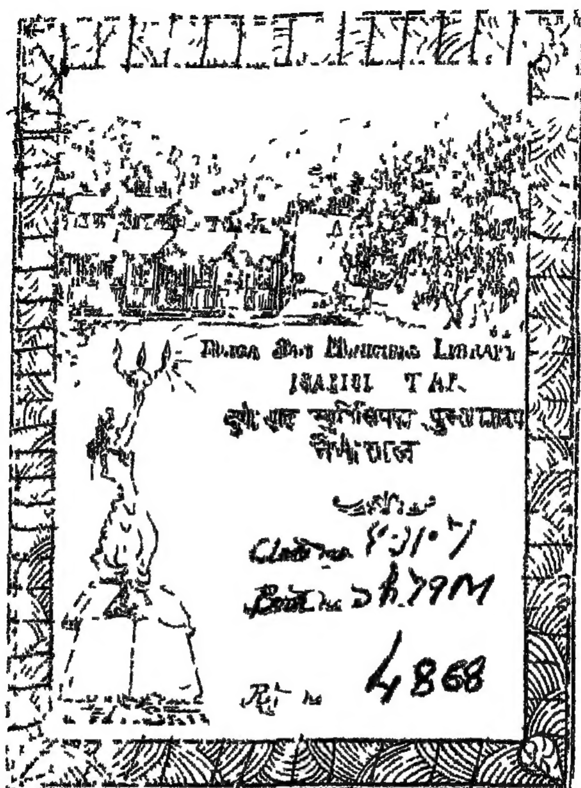

4868

मिर्ज़ा-बुक़रात

[चरित्र प्रधान उपन्यास]

शौकत थानवी

विक्रेता प्रकाशन संघ

दरीबा कलाँ—देहली ६

प्रकाशक
सुधीर प्रकाशन
दिल्ली ६



प्रथम संस्करण
१०००
नवम्बर १९५७



अनुवादक
श्री हरिहर शास्त्री



सम्पादक
श्री 'अग्र' साहित्यरत्न



मूल्य सजिल्द
दो रुपया ३७ नया पैसा



वितरक
विक्रेता प्रकाशन संघ
दरीबा कलां, दिल्ली ६



मुद्रक
सुरेश प्रिन्टिंग एजेन्सी द्वारा
कुमार फाइन आर्ट प्रेस,
देहली ६

मिरजा बुकरात

१

★★

छींकने के बाद अभी सम्भलने भी न पाए थे कि मिरजा साहब ने सिर थाम लिया। माथे को छूकर देखा, नब्ज देखी और साधारण जांच-पड़ताल के बाद कहा—"छींक रहे हैं आप ! नजला मालूम होता है। इस मौसम में जितने लोगों को बुखार आता है उसका प्रारम्भ इसी छींक से होता है।" दो-चार छींकें आईं, आंखें जलने लगी, बदन टूटने लगा और फिर बुखार देवता आ टपके। बुखार भी ऐसा कि तन-बदन का ध्यान नहीं रहता। अशग़ार हुसैन सेशन जज को तो जानते होगे, अरे भई वह अपने अशग़ार हुसैन जिनकी मौत परसों हुई है। आखिर उन्हें बीमारी कौन-सी थी ? बस एक छींक आई थी जिसके बाद वह इस दुनिया से कूच कर गये।

घबरा कर कहा—"आप भी बात का बतंगड़ बना देते मिरजा साहब ! छींकें तो आया ही करती हैं। आदमी एक-एक छींक पर चौंकता रहे तो जिन्दगी भार बन जाए।"

ऐनक के अन्दर ही अन्दर आंखें गोल करके बोले—न बाबा ! मैं तो डाक्टर को टेलीफोन करता हूँ। छींक का इस समय क्या काम और मैं तो आपकी आंखों का रंग भी देख

रहा है कि छींक आने के बाद ही लाली बढ़ती जा रही है। ऐसे अवसर पर प्रायः कुनैन दी जाती है किन्तु मैं कुनेन कभी भी न दूंगा क्योंकि आप वैसे ही दिल के रोगी ठहरे।"

चौंक कर कहा—दिल का रोगी कौन ? मेरा दिल के रोग से क्या सम्बन्ध ! तपाक से बोले—"कोई बात नहीं आपकी जानकारी में न होगा किन्तु मुझे तो मालूम है कि जनाब का दिल रूई के फाहों की तरह हल्का-फुल्का है। दिल क्या है ? छुई-मुई पौधे की भांति है क्षण में ताला क्षण में माशा की बात ठीक घटती है और भाई खुदा के लिये अपने पैरों पर दुशाला ही डाल लो। तुम्हें नहीं मालूम बड़ा बुरा मौसम है। बेढंगा मौसम और तुम्हारे जैसे प्रकृति का आदमी······।"

उलझ कर कहा—"क्या आप मुझे जबरदस्ती रोगी बनाए देते हैं मिरजा साहब ! मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। मुझे कोई दुःख नहीं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं अच्छा हूं।"

दुशाला पैरों पर डालते हुए बोले—"भाई मैं कब कहता हूं कि आप रोगी हैं, बीमार हों आपके शत्रु किन्तु मेरा मतलब तो यह है कि सावधानी रखनी चाहिये और इस बात से तो आप इन्कार नहीं कर सकते कि असावधानी तथा लापरवाही के शिकार हुए हो। भला बताइये दिल का रोगी हो और रात भर जागता रहे।"

आश्चर्य से कहा—"कौन जागा रात भर, कमाल करते हैं आप मिरजा साहब ! मैं कब रात भर जागा हूँ।"

मिरजा साहब ने आंखों में आंखें डालकर कहा—"परसों कवि-सम्मेलन से किस समय आए थे ?"

उत्तर दिया—"कोई बारह का समय होगा।"

मिरजा साहब ने कहा—"भला तुम्हारा स्वास्थ्य इस योग्य है कि तुम बारह-बारह बजे रात तक जागते रहो। इन बातों का प्रारम्भ में कुछ पता नहीं चलता किन्तु बाद में यही लापरवाही गजब ढा देती है। सुजाद हैदर के सम्बन्ध में आज तक पता न लग सका कि मर कर गिरे थे या गिर कर मरे थे।"

आश्चर्य से कहा—"सुजाद हैदर !"

कहने लगे—"जी हां, यही दिल की बीमारी थी जिसे सदैव टालते रहे।"

कमबख्त छींक को उस समय फिर आना था। अब की बार तो ज्ञात हुआ कि मिरजा साहब पर एटम बम गिरा है। वह उठे दुशाला खींचकर गरदन तक उढ़ा दी और तीर की तरह टेलीफोन की ओर डाक्टर को सूचना देने के लिये लपके।

मिरजा साहब से आप सब अपरिचित हैं और हम भी उन्हें इतना ही जानते हैं कि पिता जी के मौत की सूचना समाचारपत्र में पढ़कर रोते हुए हमारे पास आए थे और

लगातार दो दिन तक रोते रहे। यहां तक कि हम भी उतना नहीं रोये थे यद्यपि हम अनाथ हो चुके थे। अस्तु बिना उनसे पूछे गाछे ही कि वह कौन है हमें मानना पडा कि पिता जी के कोई अत्यधिक घनिष्ट मित्र होंगे। वह दिन और आज का दिन मिरजा गाहब हमारे साथ हैं, जहां हमारा पसीना गिरे वहां वह अपना रक्त बहाने के लिये तैयार रहते थे। पिता जी के मौत के बाद इतनी बडी सम्पत्ति हाथ आ जाने का परिणाम यह हुआ कि असंख्यों स्वार्थी मित्रों तथा सम्बन्धियों ने आकर घेर लिया। इसमें तनिक भी सन्देह न था कि किसो प्रियजन से सारी दौलत लुटा बैठते किन्तु ऐसे आड़े समय में मिरजा साहब ने मार्गदर्शन किया। उदाहरण के रूप में चाचा साहब के चंगुल में जाने से बचाया जो अपनी लड़की का विवाह हमसे करने के बाद सारी दौलत पर अधिकार करना चाहते थे। इसके बाद हमारे मामा साहब ने आक्रमण किया और वे संरक्षक बनना चाहते थे कि मिरजा साहब ने हमारी आंखें खोल दीं और हम मामा साहब के जाल में फसने से भी बच निकले। फिर कभी किसी मौसी, कभी किसी बुआ, कभी किसी भाई ने सम्बन्ध बनाने की इच्छा की किन्तु मिरजा साहब ने चुपके से चेतावनी दी कि—

"भाग इन बरदा फरोशों से, कहाँ के भाई।"

और वास्तव में यदि मिरजा साहब उनके प्राणों के ग्राहक न बन जाते तो वह हमें बेच डालते। सारांश यह है कि सभी भाई-बन्धु, रिश्तेदार-सम्बन्धी धैर्य धर कर बैठ गए

कि जब तक मिरजा साहब हैं उनका वश नहीं चल सकता। बहुत से सम्बन्धियों ने मिरज़ा साहब के बारे में तरह-तरह की विचित्र बातें उड़ानी प्रारम्भ कीं किन्तु मेरे ऊपर कोई प्रभाव न पड़ा। क्योंकि मैं जानता था कि मिरज़ा साहब के कोई नहीं है और उनका सभी कुछ हमारा ही घर है और हमें भी उनके अतिरिक्त किसी और की आवश्यकता अनुभव न हुई। विवाह के सम्बन्ध में मिरजा साहब का कहना था कि—"हमारे जीवन से शिक्षा लो फिर संसार में किसी वस्तु का घाटा नहीं, न स्त्री के नखरों से सम्बन्ध है और न बच्चों की चिन्ता अर्थात् वह विवाह की बात को टालना चाहते थे और कहते थे कि शादी के बारे में जल्दी नहीं करनी चाहिए। हमें भी कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि जो कार्य स्त्री करती है वह सब कार्य मिरज़ा साहब भली प्रकार निभाते थे। मिरज़ा साहब में मातृत्व की भावना इस प्रकार थी कि हम स्वयम् हैरान थे। उन्होंने अपने लाड़-प्यार द्वारा हमें सचमुच छुई-मुई बना दिया था। अब देख लीजिये कि केवल दो छींकें आई थीं कि आपने प्रति छींक के हिसाब से दो डाक्टर तैनात कर दिये। वे डाक्टर उन्हें विश्वास दिला रहे थे कि इन्हें कोई रोग नहीं किन्तु आप मानते ही न थे। उनसे विवाद कर रहे थे। विचित्र-विचित्र उदाहरण देकर नुस्खा ढूंढ़ने के लिए उन्हें दवाएँ समझा रहे थे और हम हैरान थे कि मिरज़ा साहब भी एक गोदाम हैं जिनके पास समस्त ज्ञान-विज्ञान की निधि है। वह प्रत्येक विषय पर अपना पूर्ण अधिकार समझते थे और चाहे जिस विषय पर भाग लेने लगें तो यही

ज्ञात होगा कि आप जीवन भर इसी विषय की छानबीन में लीन रहे। तात्पर्य यह कि जब डाक्टर देख भाल चुके तो आपने विचित्र मुस्कराहट के साथ कहा—कुछ समझे डाक्टर साहब ! नाड़ी की चाल और दिल की धड़कन में जो गति होनी चाहिये वह क्यों नहीं है ?

उनमें से एक डाक्टर जो व्यापार के तौर-तरीकों से परिचित न था आश्चर्य से कहने लगा—"यह आप क्या कह रहे हैं ?"

दूसरे डाक्टर ने जो मिरजा साहब के गुर से भली भाति परिचित था हँसकर कहा—"मिरजा साहब ठीक ही तो कह रहे हैं। यह वास्तव में नजला के आगमन का सूचक है। इस पर मिरजा साहब ने प्रसन्न होकर कहा—"आप रोग की तह तक पहुँच गए, नजला प्रत्येक रोग की मां है। यदि संसार के समस्त रोगों को मिटाना हो तो नजला का नामो-निशान मिटा देना पर्याप्त है। मेरी राय में इन्हें आराम करना चाहिये।"

डाक्टर ने मुस्करा कर कहा—"मैं इसकी व्यवस्था कर दूँगा।" किन्तु मिरजा साहब का अभी भी समाधान नहीं हुआ था। वह कहने लगे—"मेरी राय में पेशाब भी टैस्ट होना चाहिए।"

डाक्टर ने विश्वास दिलाया और चलते बने।

हमारी बीमारी ने इस सीमा तक तूल खींचा कि हमारे लिए यह आवश्यक हो गया कि हर समय दिल बहलाने का

सामान मौजूद रहे फलस्वरूप कभी मिरजा साहब की प्रधानता में गाने बजाने के उत्सव होते तो कभी फलश और रमी के खिलाड़ियों का जमघट। संक्षिप्त बात यह है कि हमें अपने स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने का कभी अवसर ही न दिया गया। सबसे बढ़कर बात यह कि मिरजा साहब ने हमें स्थायी भ्रम में डाल दिया था। वे प्रसन्न होकर प्राय: कहा करते थे कि—"साहब मैं चकित हूँ कि सुन्दरता का गर्व कहां छिप जाता है और शमा में परवानगी कहां से पैदा हो जाती है। अपनी पूजा कराने की इच्छा से आने वाले स्वयं पुजारी बनकर लौटे। इसका कारण यही है कि यहां उनके सौन्दर्य की उपेक्षा की जाती है, उनकी हार होती है और वह मुँह देखकर रह जाते हैं।"

अभी पिछले दिनों दावत के मौके पर गाने वालियों का एक दल आया। इसमें आफ़ताब नामक एक साहिबा थीं जो अच्छी खासी दिखाई देती थीं और उनके व्यक्तित्व में एक आकर्षण था। मिरजा साहब ने भांप लिया। दूसरे ही दिन परेशानी की हालत में उपस्थित हुए और कहने लगे—"न बाबा! कान पकड़ा इस प्रकार के उत्सव का प्रबन्ध करने से। मैं इसके लिये नहीं रह गया हूँ कि संसार भर की चिन्ताएँ समेटता फिरूँ।"

हमने चकित होकर पूछा—"कुशल तो है, बात क्या हुई मिरजा साहब!"

उसी गम्भीरता से बोले—"जी हां कुशल यह है कि उन

साहबज़ादी ने राह चलना बन्द कर रखा है। समझती हैं कि पत्थर पसीज जायगा। उस दिन यहां क्या आईं प्रलय हो गया। प्रातः से ही कागजी घोड़े दौड़ाने लगी। मैंने स्वयं जाकर समझाया कि वह हज़रत पसीजने वाले नहीं, इस बीमारी से कोसों दूर हैं। तुम्हारी उमंगों, इच्छाओं एवं कामनाओं का मूल्य नाकामयाबी के सिवा और कुछ नहीं। यह अरमान रेत के महल के समान सिद्ध होंगे।"

हमने उलझ कर कहा—"किसका ज़िक्र है मिरजा साहब! किसकी इच्छाएँ, किसके अरमान, आप तो पहेलियां बुझा रहे हैं।"

मिरजा साहब ने अपने बयान की पुष्टि करते हुए कहा—देख लीजिये, बिल्कुल ठीक कहा मैंने। यहां पता तक नहीं कि कौन घुली जा रही है। किसके अरमान हो सकते हैं। कौन इच्छुक है—यानी,

जिसे दर्दे दिल की खबर भी नहीं है।
वही दर्दे दिल की दवा जानता है ॥

हमने कहा—"अच्छा! तो इस कहानी से मेरा भी कुछ सम्बन्ध है।

मिरजा साहब ने हाथ मटकाते हुए कहा—"बलिहारी है साहबजादे! किसी को घायल कर रखा है और स्वयं को पता भी नहीं कि कौन तड़प रहा है।"

हमने मिरजा साहब को विश्वास दिलाते हुये कहा कि हमें कुछ पता नहीं। हम आपकी बात को समझ ही न सके

कि आप कौनसी रहस्यमयी बात कह रहे हैं।

मिरजा साहब ने विश्वास करते हुये कहा—"मुझे स्वयं विश्वास है कि तुम्हें ज्ञान नहीं। किन्तु कमाल है वह साहबजादी तो बेताब है। अल्लाह अकबर! क्या मान था, क्या सौन्दर्य था, बड़ों-बड़ों को खातिर में न लाया जाता था। अच्छे-अच्छे इसी इच्छा में रहते थे कि एकबार मुस्करा कर देख ले किन्तु वह मानिनी किसी की ओर देखती न थी और अब प्रकृति ने खूब बदला लिया है कि बहुत परिवर्तन दिखाई देता है। तीन दिन से न बनाव शृंगार न पानी न दाना!"

हमने खीझ कर कहा—"आप तो शायरी कर रहे हैं। कम से कम यह तो बता दीजिये कि वह है कौन ?

मिरजा साहब ने आंखों में आंखें डालकर कहा—"आफताब का जिक्र कर रहा हूं।"

हमने आश्चर्य से कहा—"वही आफताब जो उस दिन पियाजी रंग की साड़ी बांधे बैठी थी और जिसने अकबाल तथा ग़ालिब की पंक्तियां सुनाई थीं।"

मिरजा साहब ने सिर हिलाते हुए कहा—हां वही जो कुछ खोई खोई बैठी थी। वह अपने को सचमुच खोकर गई है और अपने सबसे पहले पत्र में लिखा है—

खुदा ऐसी गम गशतगी से बचाए
तेरी बिज़्म में हम तुझे भूल आए।।

हमने कहा—"बधाई हो मिरजा साहब! जो आपको भूल गई है और अब पाना चाहती है।"

मिरजा साहब ने घूर कर कहा—किसे ? क्या मुझे ? क्या खूब ! अरे वह पत्र तो आपके नाम था । यह देखिये वह पत्र । लिखती हैं—

मिरजा साहब ! तसलीम,

मेरा पत्र पाकर आप चकित होंगे । मैं इस समय जिस संसार में विचरण कर रही हूँ वहां आपके आश्चर्य की परवाह नहीं की जा सकती । मैं आपसे इसके अतिरिक्त कुछ नहीं चाहती कि आप मेरी ओर से एक पद्य साहब तक पहुँचा दें कि—

खुदा ऐसी गम गशतगी से बचाए
तेरी विज्म में हम तुझे भूल आए ।।

भूलने वाली
आफताब

हमने वह पत्र मिरजा साहब के हाथ से लेकर ध्यान से पढ़ा तो दिल धड़कने लगा और मिरजा साहब का यह वाक्य स्मरण हो आया कि तुम दिल के रोगी हो, छुई मुई सा दिल है जो घड़ी म तोला और घड़ी में माशा हो जाता है । वह पत्र मिरजा साहब को थमाते हुए हमने कहा—कमाल है साहब !

मिरजा साहब ने कहा—"आपको पत्र देख कर इतनी हैरानी हुई है । मुझसे पूछिये जो मिलकर आ रहा हूँ । ऐसा ज्ञात होता है जैसे किसी का काफिला लुट जाए । मेरे सैकड़ों प्रश्नों के बाद उसने केवल इतना कहा—काश ! वे इतने

धनवान न होते और उनके तथा मेरे बीच धन की खाई न होती।

हमने मन ही मन खुश होकर किन्तु मिरजा साहब के सामने बनते हुए कहा—"आपको कह देना चाहिये कि उन तिलों में तेल नहीं है।"

मिरजा साहब ने नाटकीय ढंग से कहा—"मुझे क्या आवश्यकता थी ? आपके व्यवहार से स्वय जान जाएगी किंतु जब उसने बहुत आग्रह किया तो मैंने केवल इतना वचन दिया है कि कल खाने के समय बुला लूंगा। वहां ही निपट लेना।"

हमने घबराहट का अभिनय करते हुये कहा—"यह क्या किया आपने ? अब वह स्वयं आएगी और इस प्रकार बात-चीत करेंगी तो......"

मिरजा साहब कहने लगे—"श्रीमान् ! यदि मुझे आपके चरित्र की उच्चता का पता न होता तो मैं अवसर ही क्यों देता कि वह यहां आ सके। मैं जानता हूं कि कुछ बनेगा नहीं किन्तु इसमें हानि ही क्या है कि वह आकर अपना भाग्य आजमा ले। वास्तव में बात यह है कि इस श्रेणी के लोग पहले तो दिल के सम्बन्ध में कभी मार नहीं खाते और जब मार खाते हैं तो प्रलय मच जाती है। यह वही आफताब है जिसने हिज हाईनेस महाराज जमुनापुर को अंगूठा दिखा दिया यद्यपि उन्होंने इसे प्राप्त करने के लिये रुपया पानी की भांति बहाया।"

महाराजा जमुनापुर की अपेक्षा हमें क्यों महत्व दिया गया है यह ज्ञात करने के लिये मिरजा साहब से पूछा—अच्छा ! महाराजा साहब को मुँह भी न लगाया, इतने साधन-सम्पन्न व्यक्ति को ठुकरा दिया।

मिरजा साहब ने कहा—बच्चों की भांति बातें करते हो। उसके पास धन सम्पत्ति की कमी ही क्या है और सम्पत्ति हर एक को मोल ले सकती है ऐसी बात नहीं। वास्तविकता तो यह है कि महाराजा जैसा भद्दा आदमी मैंने नहीं देखा इसलिए वह सफल नहीं हो सके।

हमने मिरजा साहब से कहा कहीं आप धोखे में तो नहीं हैं। इस पर उन्होंने रुखाई से कहा—"क्षमा कीजिये धोखा मैंने नहीं आफताब ने खाया है। पगली है और कुछ नहीं। अच्छा अब यह बताइए कि इस समय चाय की इच्छा है या काफी की। मेरी राय तो यही है कि चाय ही ठीक रहेगी। जब तक आप यह मासिक पत्रिका देखिये तब तक मैं चाय का प्रबन्ध करता हूं।"

और यह कह कर मिरजा साहब चाय का प्रबन्ध करने में लगे तथा हम पत्रिका उठा कर देखने लगे।

—o—

२

★★

मिरजा साहब ने इसका प्रबन्ध पहले से ही कर रखा था कि आज खाने के समय कोई और न रहे इसलिए ग्यारह बजते-बजते सब लोग चले गये। जब हमारे और मिरजा साहब के अलावा और कोई न रहा तो मिरजा साहब ने कहा—

"मैं यह अच्छा नहीं समझता कि आफताब के आने की किसी को खबर हो। बात यह है कि बेकार की बदनामी से क्या लाभ, लेना एक न देना दो, किसी को सन्देह क्यों हो कि दाल में काला है। वह अपने दिल के दर्द को कहने के लिए आएगी और मैं जानता हूँ कि नतीजा कुछ भी न निकलेगा।

फिर भी जरा उठकर खाने की मेज देख लो। आज खानसामा ने भी अपनी कला का जौहर दिखाया है। गुलाब के फूलों से सारी मेज पर दिल और तीर के चिन्ह बनाए हैं हालांकि उस बुड्ढे को कुछ भी मालूम नहीं कि मेहमान कौन है और दावत का तात्पर्य क्या है।

हम खाने के कमरे में जाने के लिये उठे ही थे कि मिरजा साहब ने फिर टोका और कहा—"कमाल करते हो या तो

सफेद पोशाक पहना न करो और यदि पहना करो तो ठीक ढंग से पहनने का प्रयत्न करो। एक सभ्य आदमी को सफेद पोशाक पहनने का अधिकार उसी समय तक है जब तक उसमें सिकुड़न न पड़े इसलिए पहले आप अपनी पोशाक जाकर बदल लीजिये।"

मिरजा साहब के बार-बार कहने पर हमने अन्दर जाकर नौकर को पुकारा और कपड़े निकालने के लिये कहा और अपनी देख-रेख में कपड़े निकलवा कर कुरता, चूड़ीदार पजामा और सलीमशाही जूता पहन कर तैयार हुआ। जब बाहर निकला तो मिरजा साहब ने सिर से पैर तक बार-बार हमको देखने के बाद कहा—"भाई अब तो आप की प्रशंसा करनी ही पड़ेगी।"

मिरजा साहब का व्याख्यान अभी समाप्त भी न हुआ था कि मोटर की आवाज आई और वह आफताब को उतारने के लिये लपके। इधर हम अपने दिल की धड़कनों को दबाए पढ़ने के कमरे में चले गये।

हमने पढ़ने वाले कमरे से देखा कि मिरजा साहब के साथ आफताब गोल कमरे में आई। वह सफेद शनील का सिलवार सूट पहने और उस पर सफेद शैफ़न का चुना हुआ दुपट्टा ओढ़े हुए थी। उसके बेढंगे बाल उसकी शोभा को चार चांद लगा रहे थे। मिरजा साहब ने उसे एक सोफा पर बिठाकर नौकर को आवाज देकर कहा कि साहब को सूचना दो कि गोल कमरे में आपका इन्तजार हो रहा है और यह

आवाज सुनते ही हम अपने दिल को मजबूत करके गोल कमरे की ओर चले। गोल कमरेमें पहुँचने पर परिचय आदि देने के बाद मिरजा साहब ने कहा—सुनिए साहब ! मैं तो इस बात का कायल हूँ कि—

जबकि दो मोज़ियों में हो खटपट
अपने बचने की फिक्र कर झटपट ॥

हमने कहा—"शह गलत है मिरजा साहब ! आप यहां से नहीं जा सकते। मिरजा साहब तो चुप रहे किन्तु आफताब ने कहा—"सचमुच ऐसे खतरे के समय आप इन बेचारों को छोड़कर कहां जाएँगे।" क्योंकि—

"लाजिम है दिल के साथ रहे पासबाने अक्ल"

मिरजा साहब ने फरमाया:—

"लेकिन कभी-कभी उसे तनहा भी छोड़ दे"

हमें अब भी आफताब ने बोलने न दिया। उसने कहा—"आप देख नहीं रहे हैं कि बेचारे कितने सहमे हुए बैठे हैं।"

हमने इस जल्दी में कि मिरजा साहब कुछ कहने न लगें कहा—"मैं गिरजा साहब को इसलिए रोक रहा हूँ कि अकेले पन में जहां एक मर्द और एक औरत हो वहां तीसरा शैतान अवश्य होता है।"

मिरजा साहब ने इसका अर्थ कुछ और ही निकाला और कहा—"जी हां, इसीलिए तीसरा शैतान अपने ऊपर स्वयं लाहौल बढ़ा रहा है।"

हम या आफताब कुछ कहें इससे पहले ही मिरजा साहब बाहर जा चुके थे और अब प्रश्न यह था कि आफताब से किस विषय पर बातचीत की जाय और किस प्रकार इस चुप्पी को तोड़ा जाय। आखिर बहुत कुछ सोचने के बाद हमने कहा—"उस रात मुझे पहली बार अनुभव हुआ कि आप कविता में रुचि रखती हैं।"

आफताब ने बड़ी गम्भीरता से हमारी मूर्खता का हमें अनुभव करा दिया। उसने कहा—"पहली बार अनुभव होना ही चाहिए क्योंकि आपने मुझे और मैंने आपको पहली बार देखा था।"

हमने जल्दी में कहा—"जी नहीं मेरा मतलब यह कि मैंने इससे पहले गाने वाली का ऐसा उच्चारण न देखा था।"

आफताब ने उसी गम्भीरता से कहा—"और मैंने भी उस रात से पहले किसी गाना सुनने वाले को ऐसा निष्ठुर न देखा था जिसकी निष्ठुरता आज भी बनी हुई है और जो केवल नाच और गीत की ही प्रशंसा कर रहा है किन्तु दिल के दर्द का हाल नहीं पूछता।"

हमने समझते हुए भी कहा—"क्या मतलब ?"

आफताब ने कहा—कैसी कैसी सच्ची बातें कह गए हैं मिरजा गालिब भी—

बे नियाजी हद से गुजरी बन्दा परवर कब तलक
हम कहेंगे हाले दिल और आप फरमायेंगे क्या।

अब हमने कुछ बेतकल्लुफ होने की कोशिश करते हुए कहा—"सचमुच मैं नहीं समझा।"

आफताब ने गर्दन झुका कर कहा—"काश ! मुझे विश्वास आ जाता कि आप ऐसे ही ना समझ हैं।"

हमने साहस के साथ कहा—"खैर नासमझ तो मैं नहीं हूँ। आपने मिरजा साहब को जो पत्र लिखा है उसके प्रकाश में आपकी बातचीत को बहुत कुछ समझ रहा हूँ, किन्तु पूछना केवल यह है कि यह सब क्या है ?"

आफताब ने आंखों में आंखें डालकर कहा—"आप मुझ से पूछ रहे हैं कि यह सब क्या है ? यदि आप चाहते हैं कि एक नारी स्पष्ट शब्दों में आपके सामने अपनी हार स्वीकार करे तो मैं तैयार हूँ। लेकिन आप ही बताइए किन शब्दों में अपने लुटने की कहानी वर्णन करूं ?"

हमने जल्दी से कहा—"आप मेरा तात्पर्य नहीं समझीं और व्यर्थ में रुष्ट हो गई हैं।"

इस पर आफताब ने बात काटकर कहा—"रुष्ट ! यह लांछन भी खूब है और यह जानने के बाद भी लगाया जा रहा है कि मैं रुष्ट तो हो नहीं सकती क्योंकि जो दूसरों की खुशी का मुहताज हो वह किसी से क्या रुष्ट होगा।"

मिरजा साहब ने बातचीत का इतना ही अवसर दिया और फिर एकदम कमरे में आकर कहने लगे चलिये भोजन तैयार है। हम लोग उठकर खाने की मेज पर आ गए। आफताब ने मेज पर गुलाब के फूलों से निर्मित दिल और तीर के चिन्हों को देखकर कहा—"मिरजा साहब मैंने तो

अब तक यही सुना था :

कागज पै रख दिया है कलेजा निकाल के !

"किन्तु यहां तो मेज पर दिल चुने हुए हैं ।"

मिरजा साहब ने एक कुर्सी पर बैठते हुए कहा—"मुझ से आप दिल और जगह की बातें न करके मुर्ग और शोरबे की बात कीजिए । मेरे ख्याल में मुर्ग का गोश्त बनाने में यह कमाल का आदमी है ।"

आफताब ने कहा—"हां ऐसा क्यों न हो क्योंकि :

यह किस रिश्क मसीहा का मकान है !"

मिरजा साहब ने झूमकर दाद दी और कहा—"क्या फबी हुई बात कही है । इसे कहते हैं दिमागी प्रफुल्लता ।" इसी प्रकार अन्य कई बातों से उसकी प्रशंसा करने लगे । हमने कहा—"आप तो उन्हें बातों में लगाए हुए हैं ।"

आफताब ने कहा—"मिरजा साहब की बातों में मजा ही ऐसा है । यदि खाना बे स्वाद हो तो भी खाने वाले को पता न चले ।"

मिरजा साहब ने कहा—"यह मेरी बातों की बात नहीं अपितु आजकल आप जिस संसार में है उसमें यही सब कुछ होता है । मनुष्य खाना पीना तक भूल जाता है ।"

और इसी प्रकार की बातों में खाना समाप्त हो गया । इस दौरान में मिरजा साहब अपने अनुभवों का सिक्का जमाते रहे । इसके बाद हम गोल कमरे में आए जहां खाने

के लिये फल रख दिये गए थे। इस समय भी मिरजा साहब ही चहक रहे थे।

× × ×

आज मिरजा साहब ने कुछ दोस्तों को रमी खेलने के लिए बुला रखा था। वह ताश कभी मनोरंजन के लिये नहीं खेलते थे बल्कि इसे बड़ी गम्भीरता का खेल समझते थे। नाक पर ऐनक लगी हुई है, तम्बाकू और इलायची का बटुआ हाथ में और आप ताश के पत्तों में डूबे हुए हैं मानो राजा नल आप ही हों। गलत पत्ते फेंकने वालों की शामत आ रही है, ठीक पत्ता फेंकने वालों की प्रशंसा हो रही है। उन्हें उत्साह दिया जा रहा है मानो कोई रमी का उस्ताद क्लास लिए बैठा हो और शिष्यों को रमी खेलना सिखा रहा हो। यदि आपका फेंका हुआ पत्ता किसी ने उठा लिया तो उसे भी अपने गुरुत्व का ज्ञान कराने के लिए बोले—

"अनाड़ियों को यूं ही परखता हूं, साहबजादे ईंट की मेम ले गए हैं। अब मेल के पत्तों के लिए जिन्दगी भर तरसेंगे।"

स्वयं किसी का पत्ता उठा लिया तो अकड़ कर बोले—"इसे कहते हैं कलाई मरोड़ कर पत्ता लेना। अगर मैं पान का छक्का न फेंकता तो प्रलय तक ईंट का गुलाम नहीं मिल सकता था।"

आपका फेंका हुआ पत्ता यदि किसी ने न उठाया तो गरदन हिला कर कहते—"इन हाथों को मात देना सरल नहीं है। मुझसे यह आशा न रखो कि मैं पत्ते दे दूंगा।"

और यदि उसी समय किसी ने पत्ते बनाकर दिखा दिये तो आप अपने दाहिने हाथ वाले खिलाड़ी के पत्ते देखकर सिर पीट "लेंगे कि साहब ! हुकुम का गुलाम लिए बैठे हैं और देते नहीं कि मैं शो करदूं और सबको बचा लूं। मियां ताश खेलने चले हो तो ताश के करतब जानो, खिलाड़ी के नेत्रों से भांप लो कि स्थिति क्या है। हजार बार कहा कि ताश के पत्ते मिलते ही पत्ते इस प्रकार रखो और फेंको कि जीत पक्की रहे।"

यदि वह साहब बुद्धिमान हुए तो चुप्पी साधे रहे और यदि उनकी बुद्धि भी ठिकाने न हुई तो दोनों परस्पर उलझ गए और हरेक अपनी बुद्धिमत्ता की दलील देने लगा तथा कई बार लाठी डण्डे तक भी नौबत आ जाने की सम्भावना बनी रहती है।

खिलाड़ियों का जमाव था। अख्तर, उमर, शकूर, अजीम अमीन सब उपस्थित थे। मिरजा साहब मसनद के सहारे बैठे थे कि आपने खेल प्रारम्भ करने का आग्रह किया। ताश का खेल शुरू हुआ। मिरजा साहब के बायें हाथ अख्तर बैठा था। इतने में मिरजा साहब ने कहा—"भाई मैं एक अनाड़ी के हाथ पर बैठा हूँ, आज मेरी हार निश्चित सम-

झिए।" उमर ने भी कहा—"यह खाकसार इसलिए मारा जायेगा कि मिरजा साहब अपनी उस्तादी से बाज नहीं आयेंगे।" यह तीनों आपसी बात बतंगड़ में उलझे थे। बाकी लोग खुश थे कि यह तीनों एक दूसरे को नीचा दिखाने में रहे और मुकाबला छः के बजाय तीन के बीच रह गया। आज के खेल में मिरजा साहब हमारी जगह पर खेल रहे थे क्योंकि उनकी माली हालत अच्छी न थी। रुपया हमारा लग रहा था और हमें केवल इतना अधिकार था कि राय दे सकें, जोर नहीं दे सकते थे।

खेल अभी प्रारम्भ ही हुआ था कि नौकर ने चांदी की तश्तरी में किसी का पत्र लाकर हमारे सामने रख दिया। पत्र खोलकर देखा तो वह आफताब का था और लिखा था :

सरकार! बचपन से एक मुहावरा सुनती चली आई हूँ 'छोटा मुंह बड़ी बात।' आज इस कथनी को समझने की इच्छा हुई इसलिए अपनी अर्जी भेज रही हूँ। जानती हूँ कि मैं हद पार कर रही हूँ फिर भी आशा रखती हूं, और आश्चर्य नहीं कि मेरी अर्जी स्वीकार हो जाय। यदि आज रात को मिरजा साहब के साथ मेरे घर आने की कृपा करें और सेविका को आव-भगत करने का अवसर दें तो धन्य मानूंगी। आशा है उत्तर सन्तोषजनक ही मिलेगा।

आपकी
आफताब

पहले तो हमने स्वयं एक नहीं तीन-तीन वार पत्र को पढ़ा और फिर मिरजा साहब का ध्यान भी पत्र की ओर आकर्षित करना चाहा जो बड़े नाजुक समय से गुजर रहे थे। खेल का रुख यह था कि अजीम दो-तीन पत्ते उठा चुके थे और अब बहुत हल्के-हल्के पत्ते फेंक रहे थे। मिरजा साहब शक्कूर को डांट रहे थे कि उन्होंने ऐसे पत्ते फेंके ही क्यों जो अजीम उठा सके। यह रमी है मजाक नहीं, गड़रियों के खेल और रमी में अन्तर होता है। एक खिलाड़ी के लिये बड़ी लज्जा की बात है कि उसका फेंका हुआ पत्ता दूसरा उठाकर लाभ उठा ले।" हालात यहां तक आ चुके थे कि शक्कूर मारे क्रोध के अपने पत्ते उठाकर मिरजा साहब के मुंह पर दे मारे, तभी हमने मिरजा साहब से कहा—"जरा यह पत्र तो देखिये।"

मिरजा साहब ने अपनी बाजी को पत्र से अधिक महत्वपूर्ण समझकर कहा—"अरे भाई ठहरो—इस आदमी ने तो खेल ही बिगाड़ दिया।"

शक्कूर ने जलकर कहा—"साहब ! अपना खेल खेलिए।"

मिरजा साहब बोले—"अजीब आदमी हो और हमेशा अजीब बात कहते हो। एक आदमी की गलती सबको ले डूबती है। तीन सौ रुपए की रमी है और पत्ते आप यह फेंक रहे हैं।"

हमने फिर कहा—"मिरजा साहब ! आदमी जबाब के लिये खड़ा है।"

मिरजा साहब ने बुरा मानकर कहा—"साहब, यहां तो रमी पटरा होकर रह गई है। अब देखिये इस सिलसिले को मैं तोड़ नही सकता, इस सेट को खराब नहीं कर सकता। यह पत्ता वह हजरत उठा ले गये हैं इसलिये रोकना जरूरी है। अब खेल रहे या जाए। मैं बिगाड़ता हूँ अपना बना हुआ खेल।" और मिरजा साहब ने पत्ता फेंका ही था कि उमर ने मिरजा साहब को अपने पत्ते दिखाकर चौंका दिया।

शकूर को बन आई और उसने आंखें मटकाकर कहा—"क्या हुई अब जनाब को उस्तादी। पत्ते दे देकर उनकी रमी बनवा दी और आक्षेप मुझे लगाया जा रहा है। देखिए केवल मैं बचा हूं, अब मुझसे शिक्षा लीजिए।

सभी को शकूर के खेल पर आश्चर्य था किन्तु मिरजा साहब ने इसे कमाल न समझकर अपना भाषण जारी करते हुए कहा—"ईंट के गुलाम के बाद हुकुम का पंजा कभी भी नहीं फेंकना चाहिये।"

हमने उन्हें खत पढ़ने के लिए दुबारा जोर दिया फल-स्वरूप वह पढ़ने लगे और इतने तल्लीन हो गये मानो वह खिलाड़ी ही न रहे हों। बड़े गौर के साथ खत पढ़ने के बाद मिरजा साहब ने बटुए से डली निकालकर एक फंका मारते हुये कहा—"किस प्रकार बुद्धिवाली है। इस खत को देख कर कोई नहीं कह सकता कि किसी लड़की का लिखा हुआ है, कितने सुन्दर वाक्य हैं और किस प्रकार अपने मन की बात लिखी है।"

हमने कहा—"क्या मेरा वहां जाना उचित होगा ?"

मिरजा साहब ने कहा—"साहबजादे, न तो उसका मकान वेश्याओं के मुहल्ले में है, न उसकी गिनती बाजारू औरतों में है फिर वहां जाने में हर्ज ही क्या है ?"

हमने कहा—"अच्छा ! आप मेरी ओर से यह लिख दीजिये कि हम लोग आठ बजे आ जायेंगे।"

मिरजा साहब ने कलम लेकर कहा—"लाओ बाबा, मैं ही लिखे देता हूं।"

उत्तर लिखने के बाद हम लोग फिर ताश खेलने में जुट गये।

३

★★

ठीक आठ बजे हमारी गाड़ी "मशरिक"* पहुँच गई। मालूम नहीं किस शायर ने आफताब की कोठी का नाम मशरिक रखा था या यह सूझ बूझ आफताब की थी। खैर नाम रखने की सूझ चाहे किसी की हो किन्तु दाद देने योग्य थी। गाड़ी के पहुँचते ही आफताब ने स्वागत किया। आफताब इस समय सिर से पैर तक जगमग-जगमग कर रही थी। कुछ देर तक हमारी आंखें गड़ी रहीं किन्तु मिरजा साहब की

* मशरिक = (पूर्व) मकान का नाम

आवाज ने चौंका दिया। वह कह रहे थे—"भई! कमाल करती हो आफताब :

"जो बात की, खुदा की कसम लाजवाब की।"

आफताब ने कहा—"आखिर क्या बात है मिरजा साहब!"

मिरजा साहब ने जल्दी से कहा—"बुद्धिमानी की बहुत सी बातें एक साथ ही न किया करो। भई मैं यह कह रहा था कि ड्राइंगरूम के पर्दों के रंग में भी रहस्य है। इन्हीं पर्दों को उठाकर सूर्य निकला करता है।"

आफताब ने खुश होकर कहा—"मिरजा साहब इन बारीकियों को समझने वाले भी तो नहीं मिलते। एक वर्ष से यही पर्दे यहां पड़े हुए हैं मगर यह बात किसी ने आज तक नहीं कही।"

हमने कहा—"मैं तो अभी इसी विचार से गद्गद् हो रहा था कि आपने अपनी कोठी का नाम मशरिक क्यों रखा।"

आफताब ने हम लोगों को अपने ड्राइंगरूम में लाते हुए कहा—"कुछ न पूछिए, इस मकान के नाम के बारे में कई सुझाव आए। मेरी मां के पीर ने इसका नाम "अलशमस" रखने का सुझाव दिया। स्वयं पिता जी का विचार था कि आफताब मंजिल रखा जाय। एक साहब ने सन-विला नाम सुझाया। मैंने उनसे पूछा—'सनलाइट सोप क्यों न रख लूं?' अन्त में मैंने खुद इसका नाम "मशरिक" रख दिया है।"

मिरजा साहब ने कहा—"अरे भई ! यह बताओ कि तुम्हारी अम्मीजान कहां हैं ? मैं तो बड़ी बी के पास बैठूंगा ताकि पानदान पास रहे ।"

आफताब ने ड्राइंगरूम के एक सोफे पर मिरजा को बिठाते हुए उनसे कहा—"अम्मीजान तो अभी आती ही हैं, लेकिन पानदान के लिए उनकी क्या आवश्यकता है । यह सेविका जो मौजूद है ।"

मिरजा साहब ने तेज आंखों से आफताब को घूरते हुए कहा—"यह अनाड़ियों का काम है जो बना बनाया पान खाते हैं । पान खाने वाले लोग हमेशा अपने हाथ का पान खाते हैं, क्योंकि कत्थे और चूने का अनुपात क्या हो यह वही जान सकता है । आपको क्या पता है कि मुझे कत्थे के ऊपर चूना लगा हुआ पान पसन्द है या चूने के ऊपर कत्था लगा हुआ पान ।"

आफताब ने तंग आकर कहा—"आप से कौन जीत सकता है । आपने तो पानों पर ही लेक्चर देना शुरू कर दिया, लीजिये अम्मीजान आ गईं ।"

और हमने देखा कि एक पोपले मुंह और तोता नुमा लम्बी नाक वाली बड़ी बी—जिनका चेहरा झुर्रियों के कारण मुनक्का-सा हो गया था—अपने बर्फ की तरह सफेद बाल लिए, दुआएं देतीं हमारी ओर बढ़ रही हैं । मिरजा साहब उन्हें देखते ही उनकी ओर दौड़े—"अरे चची साहिबा क्या

हाल है ? हाथों के दर्द का क्या हाल है। आंखों के आप्रेशन की कोई तारीख तय हुई है या नहीं।"

मालूम हुआ कि मिरजा साहब बड़ी बो के पुराने परिचितों में से हैं, काफी देर तक दोनों में तरह-तरह की बातें होती रहीं। मरे आश्चर्य को देखकर आफताब ने पास आकर कहा—"आ को शायद पता नहीं मिरजा साहब अम्मी के भतीजे बने हुए हैं। बात यह है कि राजा साहब सिहाई—जिनके पास अम्मी नौकर थीं—मिरजा साहब के चाचा के घनिष्ट मित्र थे, इस नाते अम्मीजान चची हुई।

मिरजा साहब अपनी चची साहिबा के साथ बाहर चले गए तो हमनें कहा—"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि इस सबकी क्या आवश्यकता थी जो आपने दावत के रूप में किया है।"

आफताब ने आंखों में आंखें डालकर कहा—"अत्यावश्यक ! इससे बढ़कर आवश्यकता और क्या होती कि मुझे आपसे मिलना था। मैं आपको देखना चाहती थी। यदि उस दिन चलते समय आपने पूछा होता कि अब कब मिलोगी तो शायद इतनी जल्दी यह सब न होता। मैं स्वयं आती किन्तु जब आपने बात तक न की तो मिलने के लिये कोई न कोई साधन ढूंढ़ना पड़ा।

हमनें अपने अपराध पर क्षमा मांगते हुए कहा—"मुझे लज्जा है जो आपसे पुनः मिलने के लिए बात न कही।"

आफताब ने कहा—"आप बेकार लज्जित हो रहे हैं।

मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं। मुझे भली प्रकार मालूम है कि आपको मेरी आवश्यकता नहीं अपितु मुझे है। इसीलिए यह परिस्थिति बनाना पड़ी, कि आपसे मिल सकूं।"

हमने अब कुछ ढीठ बनकर कहा—'किन्तु आप जैसी सुन्दरी के लिए ये बातें कुछ अद्‌भुत सी लगती हैं।'

आफताब ने कहा—"यह कहां का न्याय है कि आप लोग सौन्दर्य को प्रेम का अधिकार ही नहीं देते। यदि प्रेम करना मनुष्य की कमजोरी है तो मैं इस नाते इसका शिकार बन सकती हूं।"

हमने कहा—"काश ! आप फिर से मेरा यह अधिकार न छीनें।"

आफताब ने एक अनोखे ढंग में कहा—"बस अब रहने भी दीजिये। मैं जनाब के सम्बन्ध में मिरजा साहब से बहुत कुछ सुन चुकी हूं। मिरजा साहब ने तो सदा उत्साह भंग किया, किन्तु मैं अपने को विवश पाती हूं। मेरा उत्साह तो उसी अवस्था में शिथिल पड़ता यदि मैं कुछ आशा रखती। मैं तो प्रेम के उत्तर में प्रेम भी नहीं चाहती। मेरा लक्ष्य तो चुपचाप पूजा करना है, इसके लिए मुझे कोई नहीं रोक सकता।"

हमने कहा—"आफताब ! तुम्हारा एक-एक शब्द मुझे बेकाबू कर रहा है। मैं अपने लिए तुम में कोई आकर्षण पाता हूँ, किन्तु इतना अवश्य है कि मैं आज तक किसी स्त्री

के निकट इतना नहीं आया जितना तुम्हारे और यह सचाई है कि तुम्हारे प्रति खिचाव बढ़ता जा रहा है।

आफताब ने ध्यान से हमारी ओर देखते हुए कहा—"मेरे लिए बस इतना ही काफी है। मुझे यह देखकर खुशी हुई है कि आप भावुक नहीं हैं।"

वही बगुले की तरह सफेद बालों वाली और तोते की तरह नाक वाली बड़ी बी फिर उपस्थित हुईं और कहा—"आफताब बेटा ! बाते करने के लिए सारी रात पड़ी है किन्तु सरकार के खाने का समय न टल जाय, कहो तो मेज चुनवाऊँ।"

और आफताब ने इधर-उधर देखकर कहा—"मिरजा साहब कहां चले गए ?"

बड़ी बी ने हँसकर कहा—"जानती हो मिरजा साहब को और फिर पूछ रही हो। वह बावर्चीखाने में खानसामाओं की खबर ले रहे हैं। बावर्ची को तो उन्होंने बावर्चीखाने से निकाल दिया है।

और इसी समय मिरजा साहब त्योरियों पर बल डाले, नाक पर लगी ऐनक को सम्हाले, बड़बड़ाते हुए कमरे में आए और कहने लगे—"आप लोगों ने घर का अजीब हाल कर रखा है। खुदा जाने मोची, नाई आदि कहां से पकड़ लाई हो, और किसी को खानसामा बना दिया है तो किसी को बावर्ची। उन उल्लू के पट्ठों को तनिक भी शऊर नहीं।"

हमने आश्चर्य से पूछा—"मगर आप तो केवल दावत में आए थे मिरजा साहब !"

मिरजा साहब ने कहा—"अरे साहब मैं तो अपनी चची के पास बैठा था कि बावर्ची खाने में क्या माजरा है यह देखने के लिए पहुँचा और वहां का दृश्य देखकर हैरानी हुई ।

हमने आश्चर्य से पूछा—"मिरजा साहब ! आज तक यह नहीं सुना था कि कोई मेहमान किसी के घर का चार्ज यों सम्हाले ।"

मिरजा साहब ने इस बात का उत्तर देना आवश्यक न समझा । वे कहने लगे—"चलिए खाना तैयार है ।"

खाना स्वादिष्ट था किन्तु मिरजा साहब अपनी आदत के अनुसार बाल की खाल निकालने में लगे रहे । आफताब और उसकी अम्मी मिरजा साहब की आदत से परिचित थीं, सम्भवत: इसीलिए वह चुप थीं किन्तु मेरे लिए यह आलोचना अच्छी न लगती थी ।

किसी प्रकार खाना समाप्त हुआ और गाने की महफिल जुटी । वहां भी मिरजा साहब अपने अनुभवों का प्रदर्शन करने लगे, कभी तबले वाले को तो कभी सारंगी वाले को समझा रहे थे । मेरी समझ में ही न आता था कि माजरा क्या है । काफी रात गए यह महफिल खत्म हुई और हम दो बजे के लगभग घर पहुँचे ।

× × ×

घर हमारा, शासन मिरजा साहब का और सिक्का आफताब का चल रहा था। इसी बीच एक घटना घटी। भूपाल से तार आया कि बहन आ रही हैं। नजदीकी सम्बन्धियों में अब केवल यही एक बाकी रह गई थीं। इनके सम्बन्ध में मिरजा साहब को समझाना उचित न समझा। नियत समय पर स्टेशन पहुँचे और आपा को घर ले आये। उनके साथ एक और लड़की आई थी। वह गोरी, चिट्टी और यही कोई सत्रह-अठारह वर्ष की आयु होगी। मैंने पहले कभी भी उस लड़की को न देखा था इसलिए घर पहुँचकर जब निश्चिन्त होकर बैठने का अवसर मिला और वह लड़की हाथ मुँह धोने के लिये गुशलखाने में गई तो हमने आपा से पूछा—"आपने बताया ही नहीं कि यह कौन हैं ?"

आपा ने बेपरवाही से कहा—"तुम्हें याद नहीं रहा, वैसे तो तुमने इसे कई बार देखा है। यह चचा मंजूर की लड़की पारा है।"

हमने चौंकते हुए कहा—"अरे यह वही है। बहुत जल्दी इतनी बड़ी हो गई है कि मैं पहचान भी न सका। यह तो बेवकूफ-सी लड़की थी अब इतनी सयानी हो गई है।"

आपा ने कहा—"और बी. ए. में पढ़ रही है। यहां इसलिए आई है कि आई. टी. कालेज में भर्ती होकर होस्टल में रहे। अब अलीगढ़ में पढ़ना नहीं चाहती। बड़ी होनहार, काम-काज में निपुण और सभ्य लड़की है।"

हमनेकहा—"मुझे तो आश्चर्य हो रहा है कि

"यह दो दिन में क्या माजरा हो गया।"

मेरी आंखों के सामने वह तस्वीर नाच रही थी जब मैं उसकी गुड़ियों को फांसी की सजा का हुक्म सुनाकर वृक्ष में लटका दिया करता था और यह बेचारी अम्मीजान की अदालत में अपील कर के अपनी गुड़ियों की चोटियां वृक्षों से खुलवाती थी। और आज इसकी यह अवस्था है कि केवल सलाम किया है।

"लो और सुनो, क्या तुमसे कहानी कहने के लिए बैठ जाती या ताजा गजल सुनाने लगती।" आपा ने कहा।

इतने में पारा आ गई तो हमने कहा—"अरे भई पारा, मैंने तो तुम्हें पहचाना ही नहीं। क्या तुम वही गुड़ियों से खेलने वाली पारा हो ?"

पारा ने बड़ी मुलायमी में कहा—"जी हां, मुझे स्वयं आश्चर्य हो रहा था कि आपने मुझे पहचाना नहीं और आपके इस व्यवहार से मुझे हैरानी हो रही थी।"

आपा ने विषय को बदलते हुए कहा—"शकील मियां ! तुम्हारे यहां तो मर्दों का ही जमघट है, यहां औरत का निबाह होना तो बहुत ही कठिन है। या तो प्रत्येक कार्य के लिए तुम्हारे मर्द नौकरों को बुलाना पड़े या फिर कठिनाई उठाई जाय और यह मिरजा साहब कौन हैं ?"

हमने कहा—"यह हमारे चचा साहब हैं।"

"चल हट, लौंग चढ़े की तरह शक्ल है और है हमारा चचा, दूर के रिश्तेदारों में से होते होंगे।" आपा ने नाक भौं चढ़ाते हुए कहा।

हमने कहा—"आपा ! यह कोई आवश्यक तो था नहीं कि अब्बाजान मित्र बनाने के लिए सुन्दर व्यक्ति ढूंढ़ते। यह मिरजा साहब अब्बाजान के अत्यन्त निकटवर्ती मित्रों में से थे और उनकी मौत का समाचार अखबार में पढ़कर आए थे और कई दिन तक रोते रहे।"

"हां मैं अच्छी तरह सुन चुकी हूँ, रंगा हुआ सियार नम्बर एक है और बड़ा बना हुआ है–" आपा ने गम्भीरता से कहा।

और हम कुछ कहें इससे पूर्व आपा ने पारा से कहा— "जाओ बीबी कंघी वंघी करो न, इन्हीं का शीशा प्रयोग करो।" और पारा के जाने के बाद आपा ने फिर कहा—पर्दा न मैं करती हूँ और न पारा किन्तु फिर भी पराई बच्ची है इसलिए अपने नौकरों को कह दो कि आवाज देकर अन्दर आ या करें।

"यह बात मिरजा साहब नौकरों से पहले ही कह चुके है। आप निश्चिन्त रहें–" हमने कहा।

आपा ने कहा—"तुम्हारे इन मिरजा साहब के सम्बन्ध में फूफी अम्मा बहुत कुछ बता चुकी हैं कि तुम्हारे घर में इन्हीं का राज है और इन्हीं की तूती बोलती है। सुना है कि

खूब लूट रहे हैं यह हजरत ! चचा ने भी कुछ इसी तरह से कहा है।"

हमने कहा—"चचा जान की दाल गली नहीं इसलिए वह इस तरह की छींटाकशी कर रहे हैं। अब्बाजान के समय तो कभी आए नहीं, यहां तक कि बीमारी के समय भी नहीं आए और मौत के बाद डोरे डालने लगे। दिन-रात अपनी लड़की की प्रशंसा करते रहे। मैं उनकी चाल समझ गया और बात टालता रहा इसलिए अब वह जो जी में आए कहें। रह गए मिरजा साहब ! उनके सम्बन्ध में इतना ही कहना काफी होगा कि आज जो तुम इस घर को बसाबसाया देख रही हो यह सब उन्हीं के प्रबन्ध का नतीजा है। उनका उद्देश्य पहले तो लूट मार करना है ही नहीं और यदि हो भी तो मैं कोई दूध पीता बच्चा नहीं हूँ।"

हमारी बातचीत अभी चल ही रही थी कि मिरजा साहब ने दरवाजे के निकट आकर जोर से कहा—"अरे भाई शकील मियां ! मेरी ओर से बहन को दुआ कह दो और अब इस गरीब को बातों में ही लगाए रखोगे कि चाय-पानी भी पीने दोगे।"

आपा ने संकेत से कहा—"बुला लो।" इसलिए हमने आवाज देकर कहा—"आप भतीजी से भी पर्दा करेंगे क्या ? अन्दर क्यों नहीं आते।"

मिरजा साहब ने अन्दर आते हुए कहा—"बात यह है कि लड़की पराया धन होती है। जब उसकी शादी हो जाय

तो उस पर क्या अधिकार, किन्तु बेटी ! अब इन भैया की बातों से तुम्हें शायद ही छुट्टी मिले कुछ नाश्ता तो करलो।"

और शीघ्र ही आंखों में आंसू भरते हुये भर्रायी आवाज में कहा—"इस समय भी स्वर्गीय भाई साहब का चित्र आंखों में आ जाता है। वह कहा करते थे शकील के लिए मुझे कुछ चिन्ता नहीं क्योंकि वह लड़का है किन्तु बेचारी तशनीम का क्या होगा।"

हमने बात काट कर कहा—"क्या खूब ! आपा तुम्हारी शक्ल तो अब्बाजान से मिलती-जुलती है।"

मिरजा साहब ने फरमाया—"अरे मियां नाक-नक्श आदि तो तुम ले उड़े हो और भाई साहब में जितने गुण थे वह लड़की के हिस्से में आए हैं।"

पारा अपने बाल ठीक करके कमरे से निकलने लगी तो पहले कुछ झेंपी किन्तु जब आपा ने आने का संकेत किया तो वह दुपट्टा ठीक करती हुई आकर बैठ गई और मिरजा साहब को सलाम किया। अब मिरजा साहब ने कहा—"मैंने इस बच्ची को नहीं पहचाना।"

हमने कहा—"यह मेरी बहन है, मेरे चचा मंजूर अहमद साहब की लड़की। यहां आई. टी. कालेज में भर्ती होने के लिये आई है।"

मिरजा साहब ने पारा पर एक गहरी दृष्टि डालते हुए कहा—"इस बच्ची के चेहरे पर बुद्धिमत्ता के लक्षण देख

रहा हूँ और सबसे अधिक प्रसन्नता की बात तो यह है कि कालेज की शिक्षा प्राप्त करने पर भी इसकी आंखों में वह चीज बनी है जो आजकल की लड़कियों में नहीं होती अर्थात् लज्जाशील लड़की है। तो बेटी ! तुम कौन सा विषय लेने वाली हो ?"

हमने कहा—"विषय लेने वाली नहीं अपितु लिए हुए है। *मेडीकल-साइन्स अब तक अलीगढ़ में पढ़ रही थी किन्तु* अब यहां आई है।"

मिरजा साहब ने अपने बटुए से डली का फंका मारते हुए और लौंग कुतरते हुए कहा—"बहुत उज्ज्वल भविष्य है लेकिन स्वास्थ्य अच्छा नहीं है। किताबी-कीड़ा बनकर अपने स्वास्थ्य को नष्ट कर बैठी है।"

"आपने तो अच्छा खासा अध्ययन शुरू कर दिया।" आपा ने उलझ कर कहा।

हमने कहा—"आपने तो नजूमियों की तरह भाग्य का ज्ञान बताना शुरू कर दिया।"

आपा ने कहा—"यदि इसे दो चार मिनट तक चाय नाश्ता न मिला तो स्वास्थ्य की क्षीणता और भी अधिक प्रकट हो जायगी।

अब मिरजा साहब ने चौंकते हुए कहा—"अरे भाई ! आया तो मैं इसीलिए था और आकर बातों में उलझ गया।

बस पांच मिनट में चाय पहुँचती है।" और तीर की तरह बाहर निकल गए।

उनके जाने के बाद पारा ने हँस कर कहा—"वह मेरा अध्ययन कर रहे थे और मैं उन्हें पढ़ रही थी कि विचित्र व्यक्ति है जो मुँह में आता है कहता चला जाता है और खुद को पता नहीं होता कि क्या कहे जा रहे हैं।"

"अपना उल्लू सीधा कर रहा है और क्या ?" आपा ने कहा।

हमने कहा—"तुम्हें नहीं मालूम आपा ! यह बड़ा ही दिलचस्प आदमी है किन्तु फिजूल खर्च नहीं है। मैंने देख भाल कर घर का सारा प्रबन्ध उनके हाथ दिया है। क्या मजाल जो एक पैसा भी इधर-उधर हो जाय।"

"एक पैसा इधर-उधर क्यों हो ? वह अपना विश्वास बना रहा है फिर किसी दिन लम्बा हाथ मारेगा और उसे इसकी आवश्यकता ही क्या है जबकि उसकी पाँचों उंगलियां घी में हैं।" आपा ने मुँह बना कर कहा।

"किन्तु आपा ! मैं सिर कढ़ाई में देना जानता हूँ।"

"इस बात का अनुमान अवश्य होता है कि यह व्यक्ति घटिया प्रकार का चापलूस है।" पारा ने कहा।

"तो आपने मेरे सम्बन्ध में अनुमान लगाया कि मैं खुशामद पसन्द करता हूँ।"

कुछ झेंपते हुए पारा ने कहा—"न, न मेरा तात्पर्य आपसे नहीं। मुझे तो स्वयं आश्चर्य है कि यह आपके पास टिका कैसे है। सम्भवतः इसका कारण यही है कि आपने अकेलेपन के लिए दिल बहलाव समझ रखा है।"

हमने कहा—"कुछ यह बात भी है, दूसरे घर का प्रबंध करना मेरे बस का रोग नहीं और यह पूरे प्रबन्धक सिद्ध हुए हैं। इनके कारण मेरा बोझ हल्का हो गया। यदि मिरजा साहब न होते तो मेरा बुरा हाल होता।"

आपा ने कहा—"भाई साहब ! कान खोलकर सुन लीजिये। अब अधिक समय तक यह धांधली नहीं चलेगी। आप बहुत दिन तक अकेले रह चुके, अब इसका भी इलाज हो जायगा।"

हम इस इलाज का विवरण सुन भी न सके थे कि मिरजा साहब ने चाय तैयार करवा दी और हम सबको चाय पर जाना पड़ा।

× × ×

आपा और पारा को आए हुये एक सप्ताह से ऊपर हो चुका था, इस बीच में हमारे यहां न तो ताश के खिलाड़ियों का मैदान जमा और न आफताब का आना जाना ही हो सका। मिरजा साहब पूरी तरह से सावधान रहे ताकि आपा को उंगली उठाने का अवसर न मिल सके। बाहर का समस्त

कार्य मिरजा साहब के ऊपर ही था किन्तु घर के अन्द-रूनी प्रबन्ध को आपा और पारा सम्हाले हुए थीं। अस्तु एक दिन जब शिकार से वापिस आने के बाद कपड़े बदलने के लिए कमरे में पहुँचा तो वहां और ही तमाशा बना हुआ था। वहां कपड़ों की अलमारी तथा सूटकेशों की जगह किताबों की अलमारी और लिखने की मेज ने ली हुई थी। इस उलट-फेर के सम्बन्ध में पूछताछ करें इससे पहले ही पारा ने कहा—"आपके कमरे बदल दिए गये हैं, उस कमरे में जाकर कपड़े बदल लीजिए जो पहले अध्ययन का था।"

हमने मुस्कराते हुए कहा—"इन्कलाब जिन्दाबाद।"

पारा ने कहा—"भाईजान ! आश्चर्य इस बात का है कि आपने आज तक इस परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव क्यों नहीं की। जो कमरा सबसे ज्यादा प्रकाश वाला था और जिसके दरवाजे बाग की ओर खुलते थे उसे आपने ड्रेसिंग रूम बनाया जबकि वह स्नानागार से भी दूर था और जो कमरा स्नानागार के निकट था तथा अंधेरा रहता था उसे अध्ययन-कक्ष बनाये रखा।"

हमने पूछा—"आपा कहां हैं ?"

"सम्भवतः वह महमुन साहब के यहां गई हैं, आती ही होंगी। कोई काम हो तो मुझसे कहिए।" पारा ने कहा।

हमने कहा—"काम काज कुछ नहीं, इस परिवर्तन की बधाई देनी थी।"

पारा ने कहा—"बधाई और प्रशंसा का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं, किन्तु मुझे सन्देह था कि कहीं आप विरोध न करें क्योंकि आपसे आज्ञा लिए बिना यह अदला-बदली की गई थी। मेरे विचार में आप स्नान आदि करके इसे देखें और बतायें यदि कोई कमी रह गई हो वह कल दूर करदूं।

हमने कमरे पर सूक्ष्म दृष्टिपात करते हुए कहा—"मेजें, कुर्सियां, अल्मारियां आदि सब कुछ वही हैं किन्तु इस परिवर्तन ने इस कमरे को ऐसा बना दिया है कि लिखने वाला मेज पर बैठते ही दिल लिखने को करने लगेगा।"

पारा ने अपनी प्रसन्नता को दबाते हुए कहा—"अब आपने तो शायरी शुरू कर दी। पहले स्नान कीजिये, बाल धूल से सने हुए हैं। गरम पानी रखा है।"

हमने आश्चर्य से पूछा—"गरम पानी! क्या आपने अपने लिए तैयार करवाया था ?"

"जी नहीं, आपके लिए।" पारा ने जवाब दिया।

"मेरे लिए! किन्तु मेरे सम्बन्ध में आपको कैसे पता लगा कि मैं धूल से लथपथ आऊंगा और मुझे गरम पानी की आवश्यकता होगी ?"

"यह कोई ज्योतिष का ज्ञान नहीं है अपितु साधारण अनुभवी सूझ-बूझ से काम लेने पर समझ सकता है कि शिकार से वापस आया हुआ आदमी अवश्य ही धूल से भरा हुआ होगा।" पारा ने भोली भाली भाषा में कहा।

और हम बिना कुछ कहे ड्रेसिंग रूम में पहुँचे तो उसे देखकर और भी हैरानी हुई। कमरा नवीली दुल्हन की तरह सजा हुआ था। अलमारी में कपड़े तरतीब से रखे थे। नहाने के बाद पहनने के कपड़े स्टैण्ड पर रखे थे। यदि यह सब प्रबन्ध न होता तो शिकार से वापस आते ही मिरजा साहब से गुस्ल तैयार करने के लिये प्रार्थना करनी पड़ती और इस पर वह घण्टों बहस करते कि इस समय ठंडे पानी से नहाना ठीक नहीं, गरम पानी भी नुकसान देगा, अच्छा हो हाथ-पांव धोकर कपड़े बदल लिये जायें और यदि भाग्य साथ देता तो वह नहाने की आज्ञा दे देते और पानी गरम करने का आर्डर पहुँचाते तब कहीं आध घण्टे के बाद पानी मिलता। जब स्नानागार में पहुँचता तो पता चलता कि नौकर ने तौलिया ही नहीं रखा या पहनने वाले कपड़े का ही पता नहीं है। गर्ज कोई न कोई आफत बनी रहती। किन्तु आज ऐसा प्रबन्ध देखकर मन प्रसन्न हो उठा। स्नान करके बाहर निकला ही था कि पारा ने पूछा—"आपके लिए चाय यहां ही पहुँचा दी जाय या आप बाहर आ रहे हैं।"

हमने कहा—"आपा आ गई।"

"अभी नहीं।" पारा ने जवाब दिया।

तो चाय बाहर ही पी लेता हूँ और आंगन में आकर चाय पीने लगा। चाय के साथ समोसे देखकर मुझे हैरानी हुई। पूछा तो पता लगा कि घर पर ही बने हैं। इस पर और भी हैरानी हुई।

इधर-उधर की बातें होने लगी तो पारा ने कहा—"यह आपका घर है कि गुदड़ी बाजार ! जो कपड़ा निकाला उसे मरम्मत के योग्य पाया। किसी में बटन नहीं है तो किसी की कालर नहीं। पायजामा इधर पड़ा है तो पैण्ट उधर गोल-मोल होकर पड़ा हुआ है।"

हमने कहा—"आप मेरी आदतें क्यों खराब कर रही हैं। भर्ती होने के बाद आप होस्टल में रहने लगेंगी और यहां की फिर वैसी ही दशा हो जायगी।"

पारा ने कहा—"मैं आठवें-दसवें दिन आकर ठीक कर दिया करूंगी और अब आप अधिक दिन अकेले भी तो नहीं रहेंगे। थोड़े दिनों में घरवाली आ जायगी।"

हमने कहा—"अच्छा ! तो उस दिन आपा की बात मैं नहीं समझ सका था। सम्भवतः वह समझ रही हैं कि मैं जल्दी ही इसके लिए तैयार हो जाऊंगा और अन्धा जुआ खेल डालूंगा।"

"अन्धा जुआ क्यों, देखी भाली बाजी खेलिए। मेरे विचार में महसुन साहब के यहां आपा इसलिए गई हैं कि उनकी लड़की को देखकर आपको दिखाने का प्रबन्ध करें।" पारा ने कहा।

हमने कहा—"वही जो अपना नाम खुद रुखसन्द बी. ए. लिखती है।"

"हाँ, हाँ वही। मुझे बड़ी अच्छी लगती है। और वह हारमोनियम बजा लेती है, गाना भी जानती है।" पारा ने कहा।

हम उसके बारे में पारा से बातचीत कर ही रहे थे कि आपा आ गई और बातचीत का रुख ही बदल गया।

× × ×

आपा महसुन साहब और उनकी लड़की को चाय पर बुला आई थीं। महसुन साहब हमारे दूर के रिश्तेदार थे और मामा तथा फूफा लगते थे। शहर के प्रतिष्ठित बैरिस्टर थे और आपको इसलिये भी प्रसिद्धि मिली हुई थी कि देखने में पूरे अंगरेज लगते थे वे अपनी सम्पत्ति लड़की को ही मानते थे जिसका नाम रुखसन्द बी. ए. था। बाप बेटी दोनों का दिमाग आकाश में था। मैं परेशान था कि आपा ने बुला कर अच्छा नहीं किया, क्योंकि दोनों बात-बात पर नाक भौं सिकोड़ेंगे। यद्यपि हमने सारा प्रबन्ध करा दिया था और हमारे लायक खानसामे भी अपने काम में माहिर थे किन्तु मुझे डर बना ही था। हमने आपा से कहा—"प्रबन्ध तो सब हो गया है और किसी बात की कमी नहीं रहने पाई है फिर भी बैरिस्टर साहब आदत से मजबूर हैं; नुकताचीनी अवश्य करेंगे, और यदि उन्होंने कुछ कहा तो मैं चुप नहीं रह सकता फिर आप मुझे कुछ न कहना।"

"बड़ों की बहुत सी बातें सहन करनी चाहिएं। क्या किया जाय उनकी आदत बन गई है। उन्हें उत्तर देना ठीक नहीं है।" आपा ने समझाते हुए कहा।

हमने कहा—"उनकी लड़की उनसे भी बढ़कर अभिमानिनी है।" यह सुनते ही आपा ने कहा—"कभी भी नहीं। कल मैं गई तो वह बड़े सभ्यतापूर्ण ढंग से मिली। प्रेम से बातें करती रही। मुझे तो यह लड़की बहुत पसन्द है। जिस घर में जाएगी उसे स्वर्ग बना देगी।"

"हां, यह तो प्रकट ही है, जबकि जिन्दगी का अधिकांश भाग पार्टियों, क्लबों, सिनेमा तथा थियेटरों में बीतता है तो वह अवश्य ही घर को स्वर्ग बनायेगी। पति को सीटी पर बुलाया करेगी और पूंछ हिलाना सिखाएगी।" आपा की बात का उत्तर देते हुए हमने कहा। इतने में मोटर की आवाज आई और हमने विवाद बन्द कर दिया। आपा स्वयं अगवानी के लिए आगे बढ़ीं और हमें भी संकेत किया। थोड़ी ही देर में गोल कमरा महसुन साहब की सिगार की खुशबू और रुखसन्द के सैन्ट की भीनी-भीनी सुगन्धि से महक उठा। इस अवसर पर रुखसन्द पियाजी साड़ी पर अपना खाकी कोट पहने हुए थी और जिस पर लोमड़ी की खाल उसे लोमड़ी बनाए हुए थी। सिर के बाल बिखरे हुए थे।

आपा ने महसुन साहब को सम्बोधित करते हुए कहा—"आप तो शकील मियां से अक्सर मिलते-जुलते होंगे ?"

"नहीं, कभी नहीं, मैंने इन्हें केवल एक-दो बार पार्टी में देखा है।" महसुन साहब ने यह अपने उसी भाव से कहा।

रुखसन्द ने एकदम सोफा से उछलते हुए एक हल्की सी चीख के साथ कहा—"हाऊ ब्यूटी फुल !" और गुलाब का एक अधखिला फूल फूलदान से निकाल कर, अपने गालों से लगाकर गहरी श्वांस अन्दर को खींची और आंखें बन्द कर लीं, मानो अपूर्व शान्ति मिल गई हो। उसके डेडी ने आगा से कहा—"यह इन चीजों की दीवानी है।"

और साहबजादी ने अपने डेडी से कहा—"लुक हियर डेडी ! कितना प्यारा रंग और कितना सुन्दर फूल है।"

डेडी साहब देर तक उस फूल के सौन्दर्य की प्रशंसा करते रहे और उनकी मिस हां में हां मिलाती रहीं। आगा अजीब मुस्कराहटों में खोई हुई थीं कि मिरजा साहब अपना चश्मा सम्हाले पहुँचे और "अस्सलाह बैरिस्टर साहब" इस प्रकार कहा मानो बरसों के बिछुड़े हुए मिले हों और बैरिस्टर साहब उन्हें पहचानने का प्रयत्न करें कि मिरज़ा साहब ने कहना शुरू किया—

"कई बार इच्छा हुई कि आपसे मिलूं किन्तु घर के झगड़ों से फुर्सत ही नहीं मिलती। उस दिन कचहरी गया था तो आप किसी मुकदमे में बहस कर रहे थे और जब अदालत में पहुँचा तो बस वहीं का होकर रह गया। ऐसी बहस करते या तो सर अली इमाम को देखा था या फिर

पण्डित मोतीलाल जी करते थे और उस दिन आपकी बहस सुन कर मैं उन सबको भूल गया। मैंने देखा जज साहब भी झूम रहे थे।"

बैरिस्टर साहब आश्चर्य से मुँह खोले इस भाषण को सुनते रहे और फिर सिगार के लगातार कश खींचकर बोले—"समझ में नहीं आता, आप किस बहस के विषय में कह रहे हैं।" और हम से पूछा—"आपका परिचय ?"

हमने मिरजा साहब का परिचय देना चाहा था कि मिरजा स्वयं अपना परिचय देने लगे—"मैं आपसे राजा सैयदीन के मुकदमे के सम्बन्ध में सन् २८ में मिला था। वह मुकदमा भी आपका अजीब था। सब कुछ मुकदमे के विरोध में था लेकिन आपकी बहस ने राजा साहब को मुकदमे में विजयी करा दिया।"

इस भाषण का उत्तर देते हुए बैरिस्टर साहब ने केवल इतना कहा—"आई सी, वह मुकदमा ?"

आपा के अतिरिक्त हम सब लोग उलझ रहे थे कि इस व्यक्ति ने कौन सा विषय छेड़ दिया है किसी और को बात भी नहीं करने देता। अन्त में आपा ने मिरजा साहब से कहा—"जरा आप देखते कि खाने का क्या हाल है ?" और कठिनता से मिरजा साहब टले। उनके जाने के बाद रुखसन्द ने अपनी दबी हुई हँसी का तूफान छोड़ते हुए कहा—

"माई गॉड ! किस तरह बातें करने वाला आदमी है और कितनी जल्दी बात करता है।"

"मैं अब तक हैरान हूँ कि यह क्या कह रहा था और यह कौन है ?" बेरिस्टर साहब ने कहा।

हमने बैरिस्टर साहब को बताया कि इनका दावा है कि यह वालिद साहब के मिलने वालों में से हैं और आजकल हमारे संरक्षक हैं। बहुत ही दिलचस्प आदमी हैं और हरफन मौला हैं।"

कानून से भी दिलचस्पी रखते हैं और मैं इन्हें अवसर दूं तो सम्भव है मुझे भी सलाह-मशविरा देते रहें।" बैरि-स्टर साहब ने कहा।

रुखसन्द ने पारा की ओर इशारा करते हुए कहा—"डैडो ! जितना वह अधिक बोलने वाला आदमी था उतना ही यह चुप रहने वाली लड़की मालूम होती है।"

"यह बेचारी क्या बोले। अभी आप लोगों से परिचय भी न हुआ था कि मिरज़ा साहब आ धमके। आपको पता नहीं, हम लोगों से ज्यादा यह आपकी नजदीकी यानी चचा मंजूर की लड़की पारा है।" हमने पारा की ओर से उन्हें उत्तर दिया।

"हल्लो ! पारा तुम ही हो। मैंने तुम्हें उस समय देखा था जब तुम नन्ही थीं। बेबी यह तो तुम्हारी बहन है पारा। यह बैरिस्टर साहब ने अंग्रेजी नारा लगाते हुए कहा।

और उन बड़ी सी बेबी ने सिर से पैर तक पारा को देखते हुए कहा—"यह क्या यहीं रहती है ?"

नहीं, अब तक यह अलीगढ़ में पढ़ती था किन्तु अब आई. टी. में दाखला लेने आई है। बी. ए. में पढ़ती है।" आपा ने ही उत्तर दिया।

"बी. ए. ! क्या बी. ए. में पढ़ रही हैं ?" रुखसन्द ने आश्चर्य का भाव दिखाते हुए कहा।

हमने कहा—"फोरथियर में है और बड़ी योग्य छात्रा है।"

यह सुनकर उस रुखसन्द का मुँह उतर गया जो केवल अपने हा को बी. ए. समझती थी। अब दोनों में परस्पर बातचीत होने लगी और रुखसन्द ने यह मालूम कर लिया कि पारा को टेनिस का शोक है। आपा ने कहा—"रुखसन्द बीबी ! तुम्हें भी टेनिस से विशेष लगाव दिखाई देता है।"

"मुझे तो शौक ही टेनिस और रायडिंग का है। रुख-सन्द ने अपने विलायती अन्दाज से उत्तर दिया।"

"तो खेलने के लिए आ जाया करो। शकील मियां टेनिस के बड़े अच्छे खिलाड़ी हैं।"

"हां, मैं जरूर आया करूंगी।" रुखसन्द ने अपने डेडी से पूछे बिना ही कहा।

और हमने मन ही मन में कहा कि यह अच्छी आफत गले पड़ी। उधर आपा संकेत कर रही थीं कि मैं भी जोर

दूं कि इतने में मिरजा साहब ने आकर सूचना दी कि खाना तैयार है।

सभी लोग आकर बैठ गए किन्तु रुखसान्द न बैठी। उसने अपनी पश्चिमी सभ्यता का ध्यान रखते हुए कहा—"डैडी! इस तरह तो पता ही नहीं चलेगा कि हम लोगों को क्या-क्या खाना है।"

हम इसका उत्तर देना ही चाहते थे कि आपा ने हमें घूरा और हमें चुप होना पड़ा, जहर का घूंट पीकर रहना पड़ा। जब खाना आ गया तो हमने छुरी कांटे की अपेक्षा हाथ से ही खाना शुरू किया। भला रुखसन्द कैसे चुप रहती। वह कहने लगी—"आप हाथ से खाना खाते हैं?"

हमने कहा—"जी हां! मुझे हाथ से खाने में बड़ा मजा आता है।"

हमने देखा कि आपा को हमारी बात अच्छी न लगी, किन्तु पारा प्रसन्न थी और बैरिस्टर साहब आश्चर्य से हमारा खाना देख रहे थे। यद्यपि देखने लायक हालत मिरजा साहब की थी जो छुरी कांटे से खाने के लाभ से अपना मुंह घायल कर रहे थे और खाना प्लेट में जैसे का तैसा पड़ा था। कभी चावल कांटे में फंसकर मुंह में चला जाता अन्यथा खाली कांटा ही मुंह में जाता और वापस आता।

—o—

४

★★

जब से आपा और पारा हमारे यहां आईं तब से न तो ताश खेलने वालों का जमघट लगा और न ही आफताब से मुलाकात हो सकी। आफताब के खत प्राय: आया करते थे। उनके उत्तर में कभी हम खत लिख देते और कभी मिरजा साहब को भेज देते कि वह समझा दें। मगर एक दिन आफ-ताब ने अपने घर पर ताश के खेल का आयोजन किया और दोपहर का खाना भी वहीं था अस्तु हमें भी जाना पड़ा। हमारे और मिरजा साहब के अतिरिक्त उमर, अमीन, शकूर, अजीम और अख्तर भी निमन्त्रित थे यद्यपि उनमें से किसी से भी आफताब का कोई अधिक परिचय न था किन्तु खुदा भला करे मिरजा साहब का जो इस आयोजन के प्रबन्धक थे। निश्चित समय पर हम आफताब के यहां पहुँचे तो उसने हमारा स्वागत किया और कहा—"अब तो कठिनता से ही आपके दर्शन होते हैं।"

हमने कहा—"यह बात नहीं है। आजकल बहन यहां आई हुई हैं जिसके कारण कुछ एक उलझनों में फंस गया और न स्वयं आ सका न तुम्हें ही बुला सका।"

आफताब ने गोल कमरे में जाते हुए कहा—"न बुला

सकने की वजह में तो दम है किन्तु न आने के कारण में कोई बल नहीं क्योंकि वह बेचारी यह तो न कहती होंगी कि भैया तुम घर में ही बैठे रहो ।"

हम आफताब के इस प्रश्न का उत्तर देने में सर्वथा असमर्थ थे किन्तु मिरजा साहब ने आते ही हमारी लाज रख ली। वह आफताब पर बरस पड़े और ताश के पत्तों पर अपना लम्बा चौड़ा भाषण देने लगे।

आफताब बेचारी सहम गई। वह कहने लगी—"आप अपनी ही कहे जायेंगे या किसी की सुनेंगे भी। मैं स्वयं इन ताशों को नापसन्द कर चुकी हूँ। सामने की अलमारी में एक दर्जन ताश रखा है, मैं स्वयं जाकर लाती हूँ।"

मिरजा साहब स्वयं ही अलमारी खोलकर अपनी मर्जी का ताश निकाल कर कहने लगे—"इसे कहते हैं ताश जिन्हें देखकर मन फूल उठे।"

ताश के पत्तों से उलझकर मिरजा साहब खेलने के स्थान के बारे में अपना भाषण देने लगे। और काफी समय वाद-विवाद के बाद खेल शुरू हुआ। शुरू-शुरू में सभी सभ्य बने रहे किन्तु एक बाजी होने के बाद उमर का पायजामा घुटनों तक पहुँच गया, अजीम ने पैण्ट से तंग आकर आफताब से मैली साड़ी मांगी जो लुंगी का काम दे सके। खेल गरमा-गरम चल रहा था कि उमर ने आफताब से कहा—"मुझे यह तो बता दीजिए कि आवश्यकता पड़ने पर आपको किस नाम से सम्बोधन करूं।"

"शीशे में मुँह देख लो तो समझ में आ जायगा।" अख्तर ने एक व्यंग कसा।

अजीम ने कहा—"यह कहने के लिए तो मेरा जी चाहता है।"

इधर यह व्यंग हो रहा था उधर मिरजा साहब खेल में मस्त थे कि आफताब की मां ने कहा—"खाना खालो फिर खेलो।" और फिर महफिल कुछ उखड़ गई।

× × ×

हम अभी तक केवल गप्प समझे बैठे थे और आपा चुपके चुपके बन्धन के सभी प्रबन्ध कर रही थीं। वह बैरिस्टर साहब को खबर दे चुकी थीं और बैरिस्टर साहब ने भी विचार करने का वायदा कर लिया था। बैरिस्टर साहब ने आपा से कहा कि "लड़का भी अपना है और लड़की भी अपनी है, न पूछताछ की आवश्यकता है और न जांच-पड़ताल की, फिर भी जरा और विचार कर लेने दो।" पारा के द्वारा जब हमें पता लगा तो हमने कहा—"यह कैसे हो सकता है, यह आपा क्या कर रही हैं और यह सब करने के लिए उनसे किसने कहा था ?"

पारा ने कहा—"आप तो इस तरह पागल हो रहे हैं जैसे आग लग गई हो या पहाड़ नीचे गिर रहा हो। इतने परेशान होने की कौन-सी बात है ? अच्छी खासी सुन्दर पढ़ी-लिखी लड़की है।"

हमने कहा—"नहीं साहब ! मुझे नहीं चाहिए ऐसी लड़की। बिना पूछे बात ही क्यों की ?"

"क्या उन्हें भी पूछने की आवश्यकता है। वह आपकी बड़ी बहन हैं। मां-बाप के बाद आप पर उन्ही का अधिकार है।" पारा ने कहा।

"तो वह मुझे गोली मार दे, मेरा गला घोंट दें, मुझे संखिया खिलाकर सुला दें।" हमने यह सब आपे से बाहर होकर कहा।

पारा ने कानों पर हाथ रखकर कहा—"तौबा है, आप तो सारा घर ही सर पर उठा रहे हैं। आपा ने इस बारे में बहुत दूर की बात सोची है। आपको पता हो है कि बैरिस्टर साहब लखपति आदमी हैं और उनकी लड़की ही सारे धन की मालिक है। शादी के बाद वह सब आपको ही मिलेगा।"

"साहब, मुझे धन-दौलत नहीं चाहिये। मेरे पास जो कुछ है वही मुझ से ले लिया जाय। मैं यह न होने दूंगा, मैं उस विलायती गुड़िया के साथ जिन्दगी नहीं व्यतीत कर सकता।" मैंने झुंझलाकर कहा।

पारा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—"अच्छा लाला अब तो चुप रहिए आपा आ रही हैं। सम्भव है वह स्वयं आप से कहें।"

पारा के कहने के अनुसार हम चुप हो गए और अखबार पढ़ने लगे। आपा ने आते ही पारा से कहा—बैरिस्टर साहब कह रहे थे कि होस्टल में जगह मिलना कठिन तो

अवश्य है किन्तु असम्भव नहीं और उन्होंने वायदा किया है लेकिन तुम्हें इतनी शीघ्रता किस बात की है, अपना घर है यहीं रहो। हमने भी इसका समर्थन किया और कहा—"होस्टल में दाखिल होने की आवश्यकता ही क्या है ?"

'नहीं बात यह है, बात यह है—'इसका विचार था कि मैं तो एक-आध दिन में भूपाल चली जाऊँगी फिर यह अकेले कैसे रहेगी।' लेकिन ऐसा मालूम हो रहा है कि मैं जल्दी न जा सकूं। यदि बैरिस्टर साहब ने उत्तर दे दिया तो मुझे ठहरना ही पड़ेगा।" आपा ने मेरी बात का उत्तर देते हुए कहा।

"कैसा उत्तर ?" मैंने अनभिज्ञता जताते हुए कहा।

आपा ने कहा—"वह उत्तर ऐसा है कि उसे सुनकर तुम सीधे मुँह बात भी न करोगे।"

हमने कहा—"कुछ बताइए भी तो सही आखिर बात क्या है ?"

आपा ने कहा—"मैंने तुम्हारी शादी की बातचीत की है रुखसन्द के साथ, वह अच्छी पढ़ी-लिखी लड़की है।"

"जी ! रुखसन्द के साथ, क्या खूब !" हमने उछलते हुए कहा।

आपा ने हमारे भावों को बनावट समझा। वह कहने लगीं—"दिल बाग-बाग हो गया और बेकार की उछलकूद कर रहे हैं जनाब।"

"मुझे मौत अच्छी आपा लेकिन रुखसन्द के साथ रिश्ता

करना पसन्द नहीं। तुम बनावट समझती हो किन्तु मुझे तो आग लग गई यह सुनकर।" हमने क्रोध में यह कह डाला जिसे सुनकर आपा का मुँह फक्क हो गया।

उन्होंने कहा—"आखिर खराबी ही क्या है, पढ़ी-लिखी और सुन्दर लड़की है।"

हमने कहा—"कमाल करती हो आपा! तुम्हें पसन्द है, अच्छा है। किन्तु यह तो जबरदस्ती है कि मैं भी पसन्द करूं। मैं पूछता हूँ कि उस लड़की में विशेषता ही क्या है? वह बड़ी घमण्डी और सिरफिरे बाप की लड़की है एवं अपने आपको पूरी अंग्रेज समझती है। आपको मालूम नहीं यदि मेरा बस चले तो उन लोगों को अपना रिश्तेदार मानने से भी इन्कार कर दूं। और आप हैं कि उन्हें रिश्तेदार बना रही हैं।"

"काश! मुझे पहले पता लगता कि मेरा तुम पर कोई अधिकार नहीं फिर मैं यहां आने का साहस ही न करती।" आपा ने अब दूसरा पैंतरा बदला।

हमने कहा—"आप विश्वास मानिए यदि अम्मा और अब्बा जीवित होते और यह प्रस्ताव करते तो मैं उनके हाथ में भी बन्दूक देकर कहता—मुझे गोली मार दीजिए लेकिन यह न कीजिए।"

आपा ने डबडबाई हुई आंखों से कहना शुरू किया—"आज मुझे पता लगा कि अपने भाई पर भी मेरा अधिकार नहीं। मां बाप के मरने के बाद भी मुझे गर्व था कि मेरा

भाई है किन्तु······" और यह कह वह सिसकियां लेने लगी। औरत चाहे वह बहन ही क्यों न हो, अपना अन्तिम हमला आंसुओं की फौज से करती है और उनके आगे बड़े से बड़ा पुरुष भी पराजित हो जाता है। मुझे स्वयं दुख हो रहा था कि बहन बैठी रो रही है किन्तु मै उनकी जिद तभी पूरी कर सकता था जबकि उस लड़की को अपना जीवन साथी बना लेता जो मुझे स्वीकार न था। मैंने कहा—"आपा! मै तुम्हारे आंसुओं को उसी अवस्था में सुखा सकता हूँ जब मैं स्वयं जीवन भर के आंसुओं में डूब जाऊँ। यदि तुम यह चाहती हो; मैं जीवन भर के लिए रोता रहूँ तो मुझे स्वीकार है।"

इस पर आपा कहने लगीं—"अब मैं तुम से कुछ नही कहना चाहती, शादी के बारे में बात भी न करूंगी।" और वह चुप हो गई। मैंने भी यही उचित समझा कि यहां से अलग हो जाना ही अच्छा रहेगा। कमरे से निकला ही था कि देखा मिरजा साहब खिड़की से कान लगाए खड़े हैं। हमें देखते ही आंख के संकेत द्वारा अपने कमरे की ओर बुलाया और जब कमरे में पहुँचा तो उन्होंने कहना शुरू किया—

"मैंने सब कुछ सुन लिया है और मुझे सुनना भी चाहिए था। मैं जानता हूँ कि पर्दे के पीछे क्या नाटक खेला जा रहा था। तुम्हारे जीवन को नीलाम करने की योजना बनाई जा रही थी और आज मैं समझ गया कि तुम कितने दृढ़ चरित्री हो।"

हमे इस समय मिरजा साहब की यह बाते अच्छी न लगीं किन्तु वह कहते ही जा रहे थे—"बिल्कुल भद्दा जोड़ा रहेगा, घमण्ड और सरलता का मेल कदापि नही, जीवनभर का सौदा है, क्षणिक खेल नही।"

हमने चिढ़कर कहा—"मिरजा साहब ! मैने जवाब ना दे दिया है, अब आप कहना क्या चाहते हैं ?"

"हां यह तो मुझे भी मालूम है लेकिन मैं यह भी जानता हूं कि आपने किस मन से जवाब दिया है फिर भी जो कुछ किया है ठीक किया है। आज तुम्हे कुछ दु:ख भी हुआ है लेकिन आजीवन दुख से बच निकले हो। लाठी मारने से पानी कभी भी अलग नहीं होता, बहन है आज नहीं तो कल स्वयं ठीक हो जायगी। अब मै कुछ देर के लिए तुम्हें यहा के वातावरण से अलग ले चलना चाहता हूँ ताकि तुम्हारे मानसिक कष्ट को शाति मिले।" मिरजा साहब ने अपनत्व दिखाते हुए कहा।

हमने कई तरह के बहाने बनाए लेकिन मिरजा साहब न माने और उनके साथ जाना ही पड़ा। थोड़ी देर के बाद हम आफताब के मकान 'मशरिक' पर पहुँचे और उसकी मीठी-मीठी बातों ने हमें भुला दिया कि कोई घटना घटी थी।

× × ×

सारा दिन बाहर रहने के बाद जब घर पहुँचे तो खान-सामा से मालूम हुआ, न तो किसी ने लंच खाया और न

किसी ने चाय पी है। आपा के बारे में मुझे स्वयं सन्देह था लेकिन पारा ने भूख हड़ताल क्यों की यह समझ में न आया। अन्दर जाकर देखा तो पारा आंगन में टहल रही थी और आपा शायद अन्दर थीं। हमने संकेत किया, जब पारा पास आई तो उससे पता लगा कि आपा नाराज हैं और उन्होंने न खाना खाया है और न चाय ही पी है।

हमने कहा—"और तुमने भूख हड़ताल क्यों की है ?"

"वाह ! यह भी कोई बात है। क्या मैं अकेले खाना खाते अच्छी लगती !" पारा ने मुझ से कहा।

"भाई हमने तो जान बूझकर अपने खाने का प्रबन्ध बाहर कर लिया था। यदि यहां से अलग न हो जाता तो और भी झंझट पैदा होता। अब तुम्हीं बताओ यह आपा की जिद है या नहीं।"

पारा ने कहा—"आपा की जिद तो अवश्य है, लेकिन आपका व्यवहार भी ठीक नहीं है। यदि आपको आपा का चुनाव पसन्द नहीं है तो आप अपना चुनाव बताएं। मेरा विचार है कि उन्हें इस बात का शौक नहीं है कि आपकी शादी रुखसन्द से हा हो, वह चाहती कि आपकी शादी हो, उन्हें भौजाई मिले और आपका घर बस जाय।"

हमने कहा—"उन्होंने यह कब पूछा था, अन्यथा बता देता।"

पारा ने तपाक से कहा—"अच्छा ! तो इसका अर्थ यह है कि आप पहले से ही चुनाव किए बैठे हैं।"

मैं बगलें झांकने लगा और इधर-उधर देखकर कहा—
"पारा ! आपा कहां हैं ?"

"वह अपने कमरे में लेटी हुईं शायद नींद ले रही हैं। हां तो मेरा विचार सत्य निकला।" पारा ने कहा।

"तुम्हारा विचार ठीक है, लेकिन मुझे स्वयं पता नहीं कि मेरा विचार ठीक है या नहीं।"

पारा ने कहा—"बताइए तो सही और यदि बताना न चाहते हों तो मैं विशेष आग्रह भी न करूंगी।"

"नहीं पारा ! मैं तुम्हें जरूर बताऊंगा, किन्तु शर्त यह है कि पहले तुम्हें बताना होगा मेरे इन्कार करने से तुम सहमत हो या नहीं ?" हमने पारा से पूछा।

इसके जवाब में उसने कहा—"खुदा के लिए·····क्या आप आपा से मेरी मरम्मत कराना चाहते हैं ?"

हमने कहा—"नहीं तुम्हें बताना ही पड़ेगा।" और फिर पारा ने इधर-उधर देखते हुए कहा—"हां, आपका इन्कार मुझे न जाने क्यों अच्छा लगा था।"

"बस, तो ठीक है। अब यदि आपा मेरा चुनाव जानना चाहेंगी तो बता दूंगा।"

"लेकिन आपने तो वायदा किया था कि मुझे भी बता देंगे।" पारा ने कहा।

हमने कहा—"हां, बता तो अवश्य दूंगा लेकिन एक शर्त है और वह यह है कि जब मैं बताऊं तो सुनकर भाग न जाना अपितु सलाह भी देना ताकि किसी परिणाम पर

पहुँच सकूं ।"

पारा ने कहा—"जरूर ! यदि मेरी सलाह इस योग्य हो कि आप स्वीकार कर सकें तो मैं अवश्य सलाह दूंगी ।"

हमने फिर एक बार इधर-उधर देखा, यहां तक कि बाहर निकल कर मिरजा साहब की हरकतों पर आंख रखी कि कहीं वह दीवार के साथ चिपके हुए तो नहीं है, और फिर भली प्रकार निश्चिन्त होते हुए कहा—"मेरा चुनाव एक ऐसी लड़की है जिसके रंग-ढंग, कार्य-व्यवहार मेरे लिए आदर्श हैं। जो आकार-प्राकार एवं शक्ल-सूरतमें सुन्दर है।"

"हैं ! कौन है वह ? नाम क्या है उसका ? कहां रहती है ?" पारा ने आश्चर्य से पूछा ।

"वर्तमान पता यह है कि वह मेरे सामने बैठी है और नाम: पारा है ।" हमने पास आते हुए कहा ।

और पारा ने न भागने का प्रयत्न किया और न शरमाई किन्तु वह बोल न सकी । उसकी चुप्पी को तोड़ते हुए हमने कहा—"देखिए शर्त यह था कि आप सलाह देंगी ।"

पारा ने कहा—"मैं क्या कह सकती हूँ इस बारे में ।"

हमने कहा—"पारा, तुम केवल इतना बता दो कि मेरे इस चुनाव पर तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं है ।"

पारा ने कहा—"आप शायद यह समझते है कि मुझे यह बात इस समय पता लगी है । मैं इस बात का अनुमान बहुत पहले कर चुकी थी और अब केवल यह पता लगाना चाहती थी कि मेरा अनुमान ठीक था या नहीं । आपको

मालूम होना चाहिए कि यों तो आंखें ही मन की बात बता देती हैं। लेकिन मुझे सन्देह है कि आपका निश्चय पूरा हो।"

हमने चकित होकर कहा—"क्यों, जब आप तैयार हैं और मैं अपने फैसले पर अटल हूं तो काम पूरा न होने की क्या वजह हो सकती है ?"

पारा ने साफ-साफ कहना शुरू किया—"सबसे बड़ी वजह यह है कि मैं एक गरीब मां-बाप की लड़की हूं। न मेरे यहां कोई जायदाद है और न नकद रुपया। यही बहुत है कि वह मुझे शिक्षा दिला रहे हैं।

हमने कहा—'पारा ! क्या तुम मुझे इतना नीच, धन का पुजारी समझती हो। यदि यही बात होती तो रुक्मन्द के सम्बन्ध में आपा की नाराजगी न मोल लेता।"

पारा ने कहा—"आप मुझे समझने की कोशिश कीजिये। मेरा मतलब आप से नहीं बल्कि आपा और दूल्हा भाई (जीजा जी) से है। वह कब सहन करेंगे कि आपकी शादी किसी ऐसे घर में हो जहां आपको शान के अनुसार दहेज न मिल सके और जहां आपकी नाज-बरदारी उस स्तर पर न हो सके।"

"पारा तुम कहती हो कि मैं तुम्हें समझने की कोशिश करूं और मैं कहता हूं कि तुम मुझे समझने की कोशिश करो। क्या तुम समझती हो कि आपा और दूल्हा भाई के विरोध करने से मैं अपना विचार छोड़ सकता हूं। कभी नहीं, मेरा निर्णय एक पुरुष का निर्णय है ! हां, यदि तुमको

किसी प्रकार की आपत्ति हो तो अभी बता दो।" हमने पारा से कहा।

काफी देर तक इसी विषय पर बातें होती रहीं। इसके बाद पारा ने कहा—"खुदा के लिए आपा को मनाकर खाना तो खिला दीजिए।"

और फिर हमने आपा के कमरे में जाकर अपनी रूठी हुई बहन को किसी प्रकार खाना खिलाया।

५

★★

यहां दुनिया ही बदल चुकी थी और मिरजा साहब यही समझे बैठे थे कि आफताब ने हमें ऐसा जकड़ रखा है कि और किसी ओर ध्यान हो नहीं कर सकते लेकिन मैं पारा की बातों में खोया हुआ था। इतने में मिरजा साहब आए और कहने लगे—"मेरा नवाब! आज कुछ चिन्तित सा दिखाई दे रहा है।"

"नहीं तो, मैं तो बिल्कुल चिन्तित नहीं हूँ।"

मिरजा साहब ने गर्दन हिलाते हुए कहा—"फिर वही बात दाई से पेट छिपाने का प्रयत्न! खुदा ने अभी आंखों में रोशनी दी है कि मैं आपके चेहरे के भाव पढ़ सकूं। सच बताओ क्या बात है? क्या आफताब ने कोई बात कही है।"

हमने यही उचित समझा कि मिरजा साहब को इसी विषय में उलझाए रखूं। हमने कहा—"उन्होंने बात तो कुछ नहीं कही है किन्तु सोचता हूँ इसका परिणाम क्या होगा? कल जब आपने उसके पास मुझे अकेला छोड़ा तो उसने कई एक बात ऐसी कहीं जो उसे नहीं कहनी चाहिएं।"

मिरजा साहब ने कहा—"यह तो मैं पहले ही समझ गया था कि कोई बात अवश्य हुई है। भाई अकेले में इसी-लिए छोड़ा था कि उसकी अवस्था नहीं देखी जाती। उसने गाना, बजाना सब छोड़ रखा है। उस्ताद आते है और हाजिरी देकर चले जाते हैं। आजकल वह किसी से बात भी नहीं करता। परसों की बात है कि नन्दपुर के राजा साहब आए थे किन्तु उसने उनसे बात तक नहीं की और अन्दर से कहला दिया—'शहर से बाहर गई हुई हैं।' प्रति-क्षण आपका नाम लेती और मुँह लपेटे पड़ी रहती है। कल जब आप वहां पहुँचे थे तो जानते हो क्या कर रही थी?"

हमने कहा—"वह तो थोड़ी ही देर में बाहर आ गई थी।"

"नहीं साहब! जब मैं सूचित करने गया तो क्या देखता हूं कि आपका प्रतिरूप लिए बैठी थी और मुझे देख कर कहने लगी—

उनकी तसवीर सामने रख कर
अपना अंजाम सोचता हूँ मैं।

हमने कहा—मिरजा साहब! मैं तो अब अपना अंजाम सोच रहा हूँ।"

मिरजा साहब ने एक अजीब मुस्कराहट के साथ कहा— "अन्जाम सोचने की क्या बात है जबकि वहां यह अवस्था है कि "क्या करेगा काजी।" मुझे उसकी मां ने कहा कि "पहले मैं इस सम्बन्ध का विरोध करती थी किन्तु अब लड़की के जीवन-मरण का प्रश्न है। इसलिए अब यही चाहती हूं कि शकील मियाँ के साथ निकाह कर ले और राजी खुशी से जीवन बिताए।"

हमने कहा—"यह तो ठीक है मिरजा साहब! किन्तु जरा विचार कीजिए—यदि मैं आफताब के साथ निकाह कर लूं तो क्या खानदान में मुँह दिखाने योग्य रह सकता हूँ?"

"फिर वही बच्चों की बात, जान है तो जहान है। कुछ समय के लिए चर्चा होगी, लोग नाम धरेंगे, बातें बनाएंगे, अंगुलियां उठाएंगे लेकिन बाद में आफताब को सिर और आंखों में स्थान देंगे और उसे कुटुम्ब में सम्मिलित करेंगे। वैसे मैं एक बात जानता हूँ कि कुछ ही ऐसे लोग भाग्यशाली होते हैं जिन्हें इस प्रकार का प्रेम प्राप्त हो और मैं देख रहा हूं कि आफताब तुमसे प्रेम ही नहीं करती अपितु तुम्हारा नाम जपती है, पूजती है। मां-बेटी में जो लड़ाई हुई थी वह बयान से बाहर है।"

हमने चकित होकर पूछा—"कैसी लड़ाई मिरजा साहब?"

मिरजा साहब ने बटुए से लौंग निकाल कर उसे कतरते हुए कहा—"वास्तव में नाचने-गाने वाली वेश्याओं को माताएं

बड़ी निष्ठुर होती हैं। बड़ी बी आफताब को समझा रही थीं कि अमीरों के प्रेम का क्या विश्वास। उनका रुपया बना रहे तो दिल बहलाने के लिये हजारों, आज यह तो कल वह। इस पर आफताब ने खरी-खरी सुनायीं और कहा कि शकील मियां ने तो प्रेम का दावा ही नहीं किया। यह मार तो मुझ पर पड़ी है।"

हमने कहा—"अच्छा ! इस तरह साफ-साफ बातें हुईं।"

मिरजा साहब ने आंखें गोल करते हुए पुनः कहा—आखिरकार मां ने विवश होकर यहां तक कह दिया—"यह कोठी, जेवर आदि जो तुम प्रयोग करती हो, इस सबकी मालिक तुम नहीं मैं हूं और इन वस्तुओं में से किसी की भी आशा न करना। घर से बाहर निकाल दूंगी।" इस पर आफताब खड़ी हो गई और कहने लगी—"अब मैं एक मिनट के लिए भी यहां नहीं रहूंगी।"

"अरे ! यहां तक बात बढ़ गई।" हमने बीच में ही कहा।

मिरजा साहब ने अपने भाषण को जारी करते हुए कहा—"मुसीबत मेरी आ गई, कभी मैं मां को समझाऊं और कभी बेटी को। बड़ी कठिनता से मैंने आफताब को समझाया कि तुम जो कुछ कर रही हो उसे शकील मियां उचित नहीं समझेंगे। उनसे इस बारे में सलाह कर लो। उधर मां को समझाया तो उसने कहा कि मैं इम्तिहान ले रही थी कि आफताब कितने पानी में है और अब मालूम हो गया है कि

वह शकील के लिए सब कुछ कर सकती है। अब मैं चाहती हूं कि वह उनकी होकर रहे।"

और अब हमें याद आया कि कल जब मिरजा साहब मुझे आफताब के पास अकेले छोड़कर गए थे तो उनकी बात-चीत का विषय भी कुछ इसी प्रकार का था लेकिन हमने कोई महत्व न दिया था। वास्तव में न कोई लड़ाई हुई थी और न हंगामा। अलबत्ता एक गहरी साजिश थी जिसमें मिरजा साहब का विशेष हाथ था। जी में आया कि इसी समय मिरजा साहब की सारी कलई खोल दूं, जो एक बाजारी औरत से हमें फंसाना चाहते थे, किन्तु मैंने जल्दी में कोई पग उठाना अच्छा न समझा और यह निश्चय कर लिया कि आफताब से मिलना, उसे बुलाना या 'गशरिक' जाना किसी प्रकार भी उचित नहीं है।

हम अपनी इसी उधेड़-बुन में लगे थे कि इस सांपिन का सिर किस प्रकार कुचला जाय और षडयन्त्र को विफल किया जाय। उधर मिरजा साहब अपनी ही धुन में बहे जा रहे थे। वह कह रहे थे—"साहब! आफताब केवल उसी की बातें सुनती है जो आपके सम्बन्ध में बात करे।"

इन बातों से ऊब कर हमने कहा—"मिरजा साहब! क्या आपने इस बात पर भी विचार किया है कि अगर मैं इस सिलसिले में विचार करना प्रारम्भ कर दूं कि आफताब की दिलचस्पी मेरी दौलत से सम्बन्ध रखती है तो बुरा न होगा।" यह सुनकर मिरजा साहब कहने लगे—"तुम्हें यह

तो सोचना ही चाहिए। मैंने स्वयं भी इस पर विचार किया है और आफताब को इस सिलसिले में अच्छी तरह परखा और आजमाया है।" एक बार मैंने कहा—"शकील मियाँ दूसरी गाड़ी खरीद रहे हैं, अगर तुम इशारा करदो तो चालू गाड़ी तुम्हें मिल सकती है।" उसने इसके जवाब में कहा—"मिरजा साहब ! आपको मालूम है कि मेरे पास भी गाड़ी है और कई गाड़ियां खरीद कर बेच चुकी हूँ। अल्लाह की दुआ से किसी चीज की कमी नहीं, इसलिए शकील मियाँ की दौलत से मुझे कोई सरोकार नहीं है। काश ! शकील मियां दौलतमन्द न होते और हम दोनों के बीच मुहब्बत के अलावा और किसी चीज की दीवार न होती।"

हमने कहा—"मिरजा साहब ! मेरा मतलब यह नहीं कि मैं आफताब की मुहब्बत पर शक कर रहा हूँ बल्कि मैं तो एक आम बात कह रहा हूं।"

मिरजा साहब ने मेरे दिमाग से इस बात को दूर करने के लिए एक अनोखा सुझाव रखा कि इस बारे में इम्तिहान ले लिया जाय यानी यह खबर उड़ाई जाय कि शकील को सट्टे की आदत है और किसी दिन कह दिया जाय कि सब कुछ सट्टे की भेंट हो गया फिर देखें क्या रंग होता है लेकिन हम जानते थे कि मिरजा साहब उसी तरह करेंगे जैसे एक आदमी चोर से कहे चोरी कर और शाह से कहे होशियार रहना किन्तु बात खत्म करनी थी इसलिये मिरजा साहब की बात मान ली।

× × ×

पारा होस्टल में भर्ती हो गई और आपा भी भूपाल जाने वाली थीं क्योंकि उसे लेने के लिये दूल्हा भाई आ चुके थे। उन्हें शायरी से बड़ा शौक था इसलिये हमने अपने यहां एक मुशायरे का प्रबन्ध किया। अब हमें यह भी मालूम हो गया कि मिरजा साहब डाक्टर, हकीम, ताश के अच्छे खिलाड़ी, कानूनी सूझ-बूझ के आदमी, संगीत के अच्छे पारखी के अलावा शायरी का भी अच्छा खासा ज्ञान रखते थे। वे दूल्हा भाई का कलाम सुनकर कह रहे थे कि यदि आप न पैदा होते तो गजल का नामोनिशान मिट जाता। आपा ने पारा को भी बुलवा लिया था। उसके साथ उसकी दो-चार सहेलियां भी आई थीं। घर में खूब चहल-पहल थी किन्तु दूल्हा भाई का घर में पता न चलता था। वह मिरजा साहब के साथ बाहर बैठे हुए गप्प हांक रहे थे कि आपा ने उन्हें बुलाया और कहा—"मैं देखती हूं कि आप पर इन मिरजा साहब ने अच्छा जादू किया है, अन्दर आने का नाम ही नहीं लेते।"

दूल्हा भाई ने हँसते हुए कहा—"इसमें जलने की कौन सी बात है खुदा ने मिरजा साहब को मर्द बनाया है।"

आपा ने कहा—"आपको उनकी बातों से ऐसी क्या दिलचस्पी है जो हम सबको भूल जाते हो। मुझे तो इस आदमी की बातों से उलझन होती है।"

दूल्हा भाई ने कहा—"सच्ची बात तो यह है कि मुझे उनसे दिलचस्पी है। बड़ा सुथरा और अच्छा खासा पढ़ा-

लिखा व्यक्ति मालूम होता है।"

हमने हंसते हुए कहा—'हां, उनकी बातों को सुनकर सभी लोग ऐसा ही कहते हैं और सभी को गलत फहमी हो जाती है।"

दूल्हा भाई ने गम्भीरता से कहा—"गलत फहमी की बात नहीं है, अच्छा अध्ययन मालूम होता है। भाषा का काफी ज्ञान है, दिनभर मे एक भी घटिया वाक्य मुंह से नहीं निकाला और सबसे बड़ी बात यह है कि उन्हें शेर सुनाकर तबियत खुश होती है क्योंकि समझने में देर नहीं लगती।"

आपा ने कहा—"बस, मैं समझ गई कि मिरजा साहब ने आपके गजल की प्रशंसा कर आपको खरीद लिया है।"

यह दिलचस्प बहस जारी थी कि मिरजा साहब ने बाहर से आवाज देकर कहा—"अरे साहब ! मेहमान पहुँच रहे हैं और आप लोग घर में घुसे हुए हैं।"

यह सुनकर हम और दूल्हा भाई दोनों बाहर आ गए। काफी लोग आ चुके थे और आ भी रहे थे। आठ बजते-बजते काफी लोग जमा हो गये। एक दायरे में शायर लोग और सुनने वाले पीछे बैठ गए। मिरजा साहब ने अपना जौहर दिखाने के लिये लम्बा-चौड़ा भाषण दे डाला और दूल्हा भाई का परिचय कराया। इसके बाद मुशायरे की प्रधानता के लिए सबसे बड़े बूढ़े शायर शफायतुलमुल्क साहब का नाम प्रस्तुत किया। इस पर लोगों ने तालियां बजाकर अपनी खुशी प्रकट की।

— निहुतर

मुशायरा शुरू हो गया। औरतें ऊपर के कमरों में बैठी मुशायरा सुन रहीं थीं और मुशायरा से अधिक मिरजा साहब के दाद देने के तरीक़ों से गद्-गद् हो रही थीं क्योंकि वह ऐसे झूमने लगते थे मानो शायर ने जो तीर चलाया है वह केवल आपके कलेजे में ही आकर लगा है। मुशायरा में आपकी ही आवाज गूंजती थी और ऐसा दिखाई देता था कि सब आपसे ही सलाह लेकर गजल पढ़ रहे हैं। इतने में तसकीन ने शेर पढ़ा—

शबे फिराक़ के तारों गवाह रहना तुम—
जमाना ख्वाब में है, और जागता हूँ मैं।

और यह सुनते ही मिरजा साहब उछल पड़े मानो बिजली उन्हीं पर गिरी है। उन्होंने कहा—वाह साहबजादे! क्या खूब कहा—"जमाना ख्वाब में है।" जरा एक बार फिर पढ़ो।"

और इसी तरह पंजे झाड़कर हर शायर के पीछे पड़ते रहे। उसे बार-बार पढ़ने का आग्रह करते और प्रशंसा के पुल बांधते। इतने में रजा साहब ने पढ़ा—

वफ़ा खता थी, खता मैंने जिन्दगी भर की
अब इसके आगे जो मरजी हो बन्दा परवर की।

सुनते ही मिरजा साहब फिर उबल पड़े और कहने लगे—"कमाल कर दिया है सय्यद साहब! जरा फिर पढ़िये" और वह बेचारे बार-बार पढ़ते रहे उधर मिरजा

ाहब दाद दिए जा रहे थे। बमुश्किल मोलाना उम्मेद ने पनी गजल का पहला मिसरा पढ़ा—

जहे किस्मत ! अगर मेरे सफोने की तबाहो का—
तमाशा दूर से देखा सबक दाराने साहिल ने।

और जब हस्ब-मामूल मिरजा साहब ने दाद देनी शुरू की तो मौलाना उम्मेद उनसे उलझ पड़े। आपस में तकरार होने लगी। ऐसा मालूम होता था नाक-आउट न शुरू हो जाय किन्तु किसी तरह काबू पाया गया। मिरजा साहब उठकर उम्मेद साहब के पास आ बैठे और जरूरत से ज्यादा दाद देने लगे। काफी देर बाद उम्मेद साहब की गजल समाप्त हुई और "जिगर साहब" ने शेर पढ़ा—

मुझे उठाने को आया है वायजे नादां
जो उठ सके तो मेरा सागरे शराब उठा।

फिर आतिशबाजी का किला छूट गया, मिरजा साहब ने पछाड़ें खानी शुरू करदीं, दाद पर दाद देते रहे और इसी बीच में जिगर साहब ने अपना दूसरा शेर पढ़ा—

किधर से बर्क चमकती है देख ले जाहिद ?
मैं अपना सागिर उठाता हूं तू किताब उठा !

यह कलाम सुनकर मिरजा साहब को प्रतीत हुआ जैसे किसी ने तेजाब में नहला दिया है। मछली की तरह तड़पने लगे। "जिगर" की गजल पर यूं तो सारी महफिल जाग उठी। सभी लोग दाद दे रहे थे किन्तु सबसे ज्यादा हिस्सा शरीफ मिरजा साहब का था। जिगर साहब के बाद दूल्हा

भाई ने पढ़ा और मिरजा साहब ने उन्हें भी भरपूर दाद दी और मुशायरा रात के ढाई बजे खत्म हुआ। इसके बाद चाय का दौर और साथ-साथ मिरजा साहब का लम्बा-चौड़ा भाषण। उनका चाय का भाषण कभी यहां और कभी वहां हो ही रहा था कि मेहमान जाने लगे और जब सभी लोग जा चुके तो दूल्हा भाई ने मिरजा साहब से कहा—"आज मालूम हुआ कि आपके बिना मुशायरा–मुशायरा तो नहीं ढ़कोसला जरूर हो सकता है।"

और हमने कहा—"मुझे तो मिरजा साहब आप पर तरस आ रहा था। आपकी तो जान के लाले पड़े हुए थे।"

मिरजा साहब ने इसका जवाब देना जरूरी न समझा और वह चाय के प्रबन्ध में लगे रहे।

× × ×

आपा भूपाल और पारा होस्टल में जा चुकी थी। हम आफताब के यहां जाने या उनको अपने यहां बुलाने से बराबर कतरा रहे थे। इस अकेलेपन को तो हम किसी तरह सहन कर लेते मगर मिरजा साहब के मारे नाक में दम था। वे इस बात की कोशिश कर रहे थे कि हमें किसी न किसी प्रकार राजी कर सकें मगर हमने मिरजा साहब से साफ-साफ कह दिया कि बिना मेरे कहे आफताब को न बुलायें। वह जिद करते रहे और इस तौर-तरीके को जानने के लिए कुरेदते रहे। जब उन्होंने बहुत जिद करी तो हमने उनसे

फिर झूठ बोला—"मैंने आपसे कहा था कि आप इस बात को वहां तक पहुंचा दें कि मुझे सट्टे की बीमारी लग गई है और किसी बात में दिलचस्पी नहीं ले रहा।"

मिरजा साहब ने कहा—"यह तो मैं कह चुका हूँ बाबा! और तुम्हारे दिवालिया होने की खबर पहुँचाने के लिए नींव डाल चुका हूं मगर यह भी कोई बात है कि अब उससे मिलोगे ही नहीं।"

हमने कहा—"आप नहीं जानते मिरजा साहब! परीक्षा इसी प्रकार ली जाती है। आप मिलने न मिलने के बारे में आग्रह न किया करें।" इस साफ इन्कार को सुनकर मिरजा साहब चुप हो गए और हमारी जान बची।

इसी बीच आफताब का एक नौकर जो बहुत ही शरीफ दिखायी देता था मिरजा साहब की गैर हाजिरी में मेरे पास आया और उसने कहना शुरू किया—"सरकार! आपके पास आना मैंने इसलिए जरूरी समझा है कि मैं स्वयं भी इसी चक्कर में पड़कर तबाह हुआ हूं और आज उसी घर में नौकर बनकर जिन्दगी के दिन पूरे कर रहा हूं जिसमें कभी मालिक बनकर आया करता था। सरकार को शायद विश्वास न हो कि यह आफताब वास्तव में मेरी ही लड़की है और इसकी मां काफी समय तक मेरे पास नौकर रही थी। मेरा लाख का घर खाक कर चुकी है। अब मैं जब किसी को इसके जाल में फंसता देखता हूं तो जहां तक मुझ से हो सकता है उसे बचाने की कोशिश करता हूं।"

उन बड़े मियां के बयान को सुनकर हमने आश्चर्य से कहा—"क्या वास्तव में आफताब आपकी लड़की है ?"

बड़े मियां ने कहा—"हजूर यह तो कसम खाकर नहीं कह सकता लेकिन इतना जानता हूँ कि यह उसी समय में पैदा हुई थी जब इसकी मां साल भर से मेरे पास नौकर थी। दूसरे आफताब की आंख कान आदि देखिये मुझ से कितने मिलते-जुलते हैं।"

और जब हमने बड़े मियां को ध्यान से देखा तो उनके कहने में सचाई मालूम हुई। जरा रुक कर दम-सा लेते हुए बड़े मियां ने कहा—"मियाँ यह वह कूचा है, जहां बड़े-बड़े लखपति भी गरीब बन जाते हैं और इज्जतदार बेइज्जत होते हैं। मुझे ही देखिए जो मेरी रोटियों के मुहताज थे आज मैं उनकी रोटियों से पल रहा हूं। अब तो यहां इस लिये भी पड़ा हूँ जिससे भूले भटकों को रास्ता बता कर अपने पिछले पापों को धो सकूं। इसलिए आपके पास भी आया हूं, लेकिन मिरजा साहब तो न आते होंगे ?"

हम बड़े मियां को इज्जत से अपने पास बिठाते हुए कहने लगे—"आप घबराइए नहीं, मिरजा साहब शहर से बाहर गए हुए हैं और निश्चिन्त होकर कहिये कि मुझे किस खतरे से बचने की सूचना देने आए हैं।"

बड़े मियां बोले—"शकील मियां, आपने आस्तीन में सांप पाल रखा है। आपके मिरजा साहब बड़े चलते-पुरजे के आदमी हैं, इनके काटे का मन्त्र ही नहीं है। अब तक ये

बीसियों अमीरों के लड़कों को भीख मंगवा चुके हैं।"

हमने बड़े मियां से कहा—"लेकिन मेरे लिए उन्होंने कौन-सा जाल बिछाया है। आफताब के यहां मैं खुद गया। आफताब को अगर अपने यहां बुलाया तो मैंने स्वयं बुलाया। इसमें मिरजा साहब का क्या दोष है।"

इस पर बड़े मियां ने मुस्करा कर कहा—"मिरजा साहब के कहने तथा उनके ही लिखवाए हुए वाक्यों में आफताब ने आपको खत लिखे हैं। अच्छा ये पुरानी बातें जाने दीजिये। अब शायद आप आफताब का इम्तहान इस तरह लेना चाहते हैं कि अपने को सट्टेबाज प्रसिद्ध करके कुछ दिनों में अपने दिवालियेपन की खबर पहुँचाना चाहते हैं।"

अब तो हमारे पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। हमें सन्देह तो अवश्य था कि इस साजिश में मिरजा साहब का हाथ है लेकिन यह पता न था कि इस स्कीम के कर्ता-धर्ता ही आप हैं। आश्चर्य हुआ और आश्चर्य से अधिक इस बात से प्रसन्नता हुई कि हमारा सन्देह सत्य निकला। हमने बड़े मियां से कहा—"यह तो आपने बहुत अच्छा किया जो बता दिया। अब आगे को कहिए—क्या हुआ ?"

बड़े मियां ने कहा—"आपके मिरजा साहब ने यह पूरी योजना वहां जाकर बता दी है। अब जब आपके दिवालिया होने की खबर वहां पहुँचेगी तो आफताब अपने सारे जेवर लेकर आपके पास आएगी और कहेगी 'मेरे पास जो दौलत है वह आपकी है।' इसके बाद शादी के लिए मजबूर करेगी

और कहेगी कि मेरी मां को खुश करने के लिए तुम यह जेवर शादी के अवसर पर मुझको दे देना। हजूर वह सब जेवर नकली सोने के होंगे ताकि बाद में आप पर मुकदमा चल सके कि आपने नकली सोने के जेवर देकर धोखे से शादी की है। दूसरे मुकदमा चलने की नौबत ही न आएगी, क्योंकि उसे तो आपकी दौलत साफ करनी है।"

हमने बड़े मियां को इनाम देकर विदा करना चाहा, लेकिन बड़े मियां ने लेने से इन्कार कर दिया और कहा— "सरकार ! मैं इस काम के लिए कोई इनाम नहीं ले सकता। मैं यह काम अपने पिछले पापों के प्रायश्चित के लिए कर रहा हूं। मेरा सबसे बड़ा इनाम यह होगा कि आप इस जाल से बच जायें।"

हमने बड़े मियां से वायदा ले लिया कि वह समय-समय पर खबर करते रहें और इतवार के दिन कम्पनी बाग में मिल लिया करें। बड़े मियां के चले जाने के बाद हम इसी सोच-विचार में डूब गए कि यह मिरजा कितना भयंकर व्यक्ति है। अब यह बात स्पष्ट होती जाती थी कि वालिद साहब की मृत्यु की खबर अखबार में पढ़कर यहां आना और धीरे-धीरे इस घर पर पूरा अधिकार कर लेना एक साजिश थी। यह मिरजा हमें हजम कर जाता अगर पारा न आ गई होती और हमारा भी वही परिणाम होता जो इस बड़े मियां का हुआ है। शाम तक इसी उधेड़-बुन में लगा रहा और अन्त में पारा को खत लिखने का विचार किया—

मेरी प्यारी आपा

तसलीम !

आपको यहां से गए हुए काफी दिन हो चुके हैं लेकिन आपने अपने पहुँचने तक की सूचना नहीं दी। मैं जानता हूँ कि आप मुझ से नाराज हैं और कोई सरोकार रखना नहीं चाहतीं। अगर मैं आपके चुनाव के मुताबिक उस लड़की से अपना सम्बन्ध बना लूं तो आप बाद में आप अपने भाई की इस परेशानी से पछतायेंगी कि हर समय मुस्काने वाले आपके भाई के होठों पर चिन्ता छाई रहती है। क्या मेरा जुर्म सिर्फ यही नहीं है कि आपने एक जगह मेरी शादी करनी चाही लेकिन उस जगह से मैं घृणा करता हूं। अगर आपकी इच्छा यह है कि आपके भाई का घर बस जाय तो चचा मंजूर से बातचीत करें ताकि पारा से निकाह हो जाय। अगर आप इस बारे में कुछ न कर सकें तो दूल्हा भाई को यह खत दिखा दीजिये। उम्मीद है कि आप अपनी नाराजगी छोड़कर इस खत का जवाब देंगी।

आपका शकील

इस खत को लिखकर हमने कई बार पढ़ा और फिर लिफाफे में बन्द कर पोस्ट कर दिया।

—०—

६

★★

मिरजा साहब से मन उचाट हो चुका था, यहां तक कि उनका मुख देखने को भी मन न चाहता था लेकिन नशेबाजों की तरह जो नशा को छोड़ने के लिए जहर खाने के लिये तैयार हो जाते हैं परन्तु जब उसका भी असर नहीं होता तो फिर नशा करने लगते हैं, मेरा हाल था। आफताब के सिलसिले में मिरजा साहब की चाल को समझ जाने पर भी हमें मजा आ रहा था और हम पहले से भी ज्यादा भोले और अनजान बनते जा रहे थे, तथा अपने को मिरजा साहब के हाथों में देते जा रहे थे जिससे वह हम पर हमला करें और हम उनकी बिछाई हुई चालों से उसी कामयाबी के साथ निकल आएं जिस कामयाबी से आफताब वाले सिलसिले में निकले थे। हमें उनको चालों का पता चल गया है इस बात का मिरजा साहब को तनिक भी पता न था।

सुबह से ही मिरजा साहब ऐनक लगाए लिहाफ में पड़े किसी हिसाब-किताब में उलझे हुए थे। हमने उनके कमरे में जाकर देखा कि कभी वह लाल पैन्सिल से किताब पर चिन्ह लगाते और कभी कागज पर कुछ लिखते। हमने उनसे कहा—"यह क्या हिसाब-किताब हो रहा है?"

"कुछ समझ में नहीं आता कि कलकत्ता में वहायत अली को दो गज के हैण्डीकेप में नाटी बोय ने मारा था और मेरठ में नामुराद लेडी नाइट से हार गया और अब यहां सबसे पीछे है।"

"अच्छा! तो यह घुड़-दौड़ का हिसाब है।" हमने अन्दाज समझकर कहा।

"नहीं साहब, घुड़-दौड़ नहीं, ग्रे-हाउन्ड-रेसलिंग है। कल तो अजीब मजा हुआ। चौथी रेस में स्कूल बोय फ्यूरट जा रहा था, लेकिन मेरे हिसाब से आज उसकी कोई गिनती न थी इसलिए ग्रे-वाल्डी का टिकट ले लिया जिसके सिर्फ तीन टिकट बिके थे। रेस शुरू हुआ तो वह सबसे पीछे था लेकिन कमाल कर दिया उसने और आखिर में जीत हुई।"

"आपका अन्दाजा कभी गलत थोड़े ही होता है।" हमने कहा।

मिरजा साहब ने अकड़ते हुए कहा—"अरे भाई! अन्दाज की बात नहीं। मुसीबत यह है कि दांव लगाने वाले जानते-बूझते कुछ नहीं और आ जाते हैं खेलन।"

हमने कहा—"तो आप काफी जीते होंगे।" इस पर मिरजा साहब ने कहा—"जीत हार को मैं बिल्कुल परवाह नहीं करता। एक दिन दो सौ रुपए जीता दूसरे दिन हार गया।"

हमने कहा—"मिरजा साहब! ग्रे हाउण्ड रेस देखने मैं भी चलूंगा।" इस पर मिरजा साहब ने फरमाया—"अरे

साहब ! आप कहां जाते हैं। शहर में नुमाइश लगे इतने दिन हो गए, भीड़ का आलम है कि तिल रखने के लिये जगह नहीं होती। दूर-दूर से लोग देखने आते हैं लेकिन जनाब घर से निकलते ही नहीं। हजार बार कहा, भाई जरा सैर-सपाटा किया करो, यही आजादी के दिन हैं। अगर बाल-बच्चों के झमेले में फंस गए तो फिर सब कुछ भूल जायेगा।"

इस पर भी हमने मिरजा साहब से पक्का वायदा नहीं किया क्योंकि डर था कि कहीं आफताब से नुमाइश में जाने की न कह दें। हमने अपना प्रोग्राम यही बनाया था कि शाम को नुमाइश भी देखेंगे और कुत्तों के बारे में मिरजा साहब के ज्ञान का तमाशा भी, इसलिए दिया जलते ही टेनिशकोर्ट से घर आ गए। घर आकर देखा तो मिरजा साहब को बिल्कुल तैयार पाया। हम भी जल्दी से नहाये, कपड़े बदले और फिर मिरजा साहब के साथ चल पड़े। थोड़ी देर में वहां पहुँच गए और घूम फिर कर नुमाइश देखने लगे। खिलौने वाले स्टाल पर पहुँच कर खिलौने देखने लगा ही था कि मिरजा साहब ने कन्धे पर हाथ मारा और कहा—"रेस अब शुरू होने ही वाली है। अगर चलना है तो जल्दी कीजिए नहीं मुझे जाने दीजिये।" आखिर बिना कुछ लिए मिरजा साहब के साथ कुत्ता-दौड़ के रैस कोर्स में पहुँचे। हमारे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब हमने अख्तर और उमर को भी वहां जाते देखा। दोनों के हाथों में किताबें

थीं। हमारे सलाम का सरसरी तौर से जवाब देते हुए अख्तर और उमर ने मिरजा साहब को घेर लिया। मिरजा साहब ने अपना चश्मा ठीक करते हुए कहा—"पहली रेस के बारे में क्या ख्याल है ?"

और फिर मिरजा साहब ने आप ही आप अपनी आदत के मुताबिक भाषण देना शुरू कर दिया। इतने में टिकट बांटने की घण्टी बजी और उमर तथा अख्तर दीवानों की तरह उस ओर दौड़ गए।

अब मिरजा साहब ने कहा—"मेरी राय में तुम एक रेनबो का फ्लोक टिकट ले लो और मैं टूरेस्टबरी का टिकट ले रहा हूँ।"

हमने कहा—"लेकिन आपने उन लोगों को और ही कुत्ते बताए हैं।"

"तो क्या उन्हें अपना चुनाव बता देता।" मिरजा साहब ने खिड़की की ओर जाते हुए कहा।

हमने मिरजा साहब की सलाह से 'रेनबो' का टिकट ले लिया और अन्दर पहुंचे। कुत्ते छोड़ दिए गए तो चारों ओर से आवाज आने लगी—"लक्की फेलो—शाबास टूरेस्ट बरी—कम आन लक्की फेलो—लक्की फेलो—रेनबो—शाबास रेनबो—रेनबो—टूरेस्टबरी—रेनबो—टूरेस्टबरी।" और यह नारा तब तक जारी रहा जब तक कि कुत्ते आखिरी निशान तक न पहुँच गये। कुछ ही देर के बाद बिजली की रोशनी में पहला नम्बर सात चमका जो हमारे टिकट का था

और फिर दूसरा नम्बर चार चमका जो मिरजा साहब के टिकट का नम्बर था। हमें झंझोरते हुए मिरजा साहब ने कहा—"देख लिया न, जो कह दूं, वह सच होता है।

जब कुत्तों की नुमाइश शुरू हुई तो हमने पांच नम्बर के कुत्ते को ताड़ लिया लेकिन मिरजा साहब ने कहा कि तीन नम्बर लू और हमने पांच, तीन दोनों खरीद लिये। परिणाम निकलने पर हमने देखा पांच नम्बर आगे बढ़ गया और उसके बाद तीन। इसमें हमें पहले में एक सौ दस और दूसरे में इक्तालिस रुपए मिले।"

इस पर मिरजा साहब ने कहा—"भाई जीतना दूसरी बात है लेकिन यह आप गलत खेले थे।"

× × ×

आज इतवार को पारा हमारे यहां आ रही थी साथ ही सन्ध्या को कम्पनी बाग में आफताब वाले बड़े मियां से मिलना भी जरूरी था लिहाजा हमने मिरजा साहब से सुबह ही उनके साथ नुमाइश या ग्रे-हाउण्ड-रेस में जाने से मना कर दिया था। हमने ठीक समय गाड़ी होस्टल भेज दी और पारा के आने की राह देखने लगा। आपा के जाने के पश्चात कोई दो सप्ताह बीतने पर पारा से मिलने का मौका मिल रहा था। आज हमें पहली बार यह पता लगा कि इन्तजार कहते किसे हैं और इन्तजार की घड़ियां किस तरह बीतती हैं। हम गोल कमरे में कभी इस सोफे पर और कभी उस सोफे पर बैठ कर वक्त गुजारने लगे। इस बीच कई तरह के

विचार आये, सोचता—अब गाड़ी होस्टल पहुँच गई होगी और अब पारा आ रही होगी। हम इसी उधेड़ बुन में लगे थे कि गाड़ी आ पहुँची। आज पारा बिल्कुल सादे पहरावे में थी। आते ही सलाम कहा और कहने लगी—"गाड़ी तो ठीक वक्त पर पहुँच गई थी लेकिन मुझे ही कुछ देर हो गई।

हमने कहा—"नहीं कोई ऐसी देर तो नहीं हुई। अच्छा पहले यह बताइए कि आप मेहमान बन कर खातिरदारी के लिए मजबूर तो न करेंगी। इसके उत्तर में पारा ने कहा—मेहमान बन कर तो आई नहीं, वैसे आपकी मरजी।" और अपने साथ लाए हुए बण्डल को उठाते हुए कहा—"जरा पहन कर तो देखिए यह स्वाइटर कैसा रहेगा?" और जब खोला तो उसके अन्दर चाकलेट रंग का बहुत बढ़िया बुना हुआ स्वाइटर था। उसे देखकर बच्चों की तरह खुश होकर हमने कहा—"कितना प्यारा रंग है, यह तो मेरे चाकलेट सूट को सजा देगा।"

पारा ने कहा—"जी हां, आपका चाकलेट सूट ही मुझे अधिक पसन्द था। मैंने उसी के मेच का स्वाइटर बनाया है। जरा पहिनए, तो सही ठीक भी बनी है या मेहनत बेकार गई।"

हमने स्वाइटर पहनने के लिए दो मिनट का समय चाहा और अन्दर जाकर वही चाकलेटी सूट पहन कर बाहर आये। चाकलेट सूट पर चाकलेट रंग का स्वाइटर बहुत उम्दा लग रहा था। देर तक स्वाइटर के बारे में बातें होती रहीं।

अचानक पारा ने चौंकते हुए कहा—"हां, यह तो बताइए—क्या आपने आपा या दूल्हा-भाई को किसी तरह का खत लिखा है।"

"हां लिखा तो है, आपको कैसे पता लगा?"

"नजहत को आप जानते हैं न," पारा ने कहा और इसके उत्तर में हमने कहा—"हां, हां, वही नजहत न जो दूल्हा-भाई की बहन लगती है।"

पारा ने कहा—"जी हां, वही। वह मेरी क्लासफेलो है। उनका एक खत आया हुआ है। वह खत आपको दिखाने के लिए मैं साथ लाई हूं लेकिन शर्त यह है कि जहां तक कहूं बस वहीं तक पढ़िएगा।"

हमने खत पढ़ने की लालसा से यह शर्त मानली तो पारा ने खत का कुछ हिस्सा मोड़ते हुए कहा—"बस यहां तक पढ़ लीजिए।" हमने खत पढ़ना शुरू किया—

तुम्हारा खत और एक और खत डाकिया दे गया। दूसरा खत भाई जान के नाम था इसलिए उन्हें दे दिया गया। तुम्हारा खत खोलकर बार-बार पढ़ा। ऐसा मालूम हुआ कि तुम सामने बैठी हो। अच्छा तुम्हारे खत की बात बाद में कहूंगी पहले उस खत का हाल सुनलो जो भाईजान के नाम था। थोड़ी ही देर में उस खत ने खलबली मचा दी। भाई-जान ढूंढे गए और वह ताश खेलते हुए गिरफ्तार किए गए। बस क्या था, बेगम साहिबा की अदालत में आना और खत पढ़ना पड़ा। बार-बार तुम्हारा और शकील भाई का नाम

लिया जा रहा था। मैं अपने कमरे में थी इसलिए पूरी बात न जान सकी लेकिन पेट में खलबली मची थी। आखिर जब भाईजान बाहर चले गए तो मौका पाकर उनके कमरे में गई और वह खत पढ़ा जो शकील भाई ने लिखा। उन्होंने मह-सुन साहब की लड़की रुखसन्द से अपनी बेजारी बताते हुए इस पर तान तोड़ी थी, यदि मेरी शादी हो सकती है तो पारा के साथ, नहीं तो······"

इससे आगे कागज मुड़ा हुआ था और आगे पढ़ने के लिए मनाही थी। हमने पारा से कहा—"आगे भी पढ़ने दीजिए बड़ा दिलचस्प खत है और निरन्तर आग्रह कहने पर पारा ने आगे पढ़ने के लिए भी कह दिया जो इस तरह था मैं तो पहले ही जानती थी कि यह चांद का टुकड़ा जिसकी आंखों में गड़ गया उसे कहीं का न रखेगा। शकील भाई भी बड़े ही कदरदान निकले जिन्होंने—

"छोटा है वह दिल जिसकी कि अज़्ले नमूद थी!" दाद देती हूं उनके चुनाव पर और बधाई देती हूं तुम्हें। अब तुम यह जानने के लिए बेचैन होगी कि भाईजान का क्या विचार है। मन की बात तो मैं कह नहीं सकती लेकिन इतना अवश्य था कि सभी के मुंह पर प्रसन्नता थी। आज मैंने ग्रामोफोन पर वही रिकार्ड तीन बार लगाया जो तुम्हें बहुत ही पसन्द है—

जादू कर गए किसी के नैना—
कि दिल मेरा बस में नहीं!

और जब गीत में यह आया कि—"क्या किसी की हो गई मैं—!" तो मुझे ऐसा मालूम हुआ कि तुम गा रही हो।"

इसके बाद ख़त मे और कुछ न था इसलिए पारा का ख़त देते हुए हमने कहा—"यह लड़की बड़ी बुद्धिमान प्रतीत होती है।"

उसके बाद पारा मे अनेक तरह की बातें होती रहीं और बातों में कितना वक्त बीत गया यह ख्याल ही न रहा। सन्ध्या हो गयी तो पारा को होस्टल पहुँचाने के लिए चल पड़ा और कुछ ही समय में होस्टल पहुँच गए। गाड़ी से उतरने के बाद यह तय हुआ कि परसों नुमाइश देखने के लिए पारा हमारे यहां आएगी।

× × ×

पारा को होस्टल छोड़ कर हम कम्पनी बाग पहुँचे, वहाँ आज आफताब के यहां के बड़े मियां से मिलने का वायदा था। जैसे ही हम नियत स्थान पर पहुँचे तो बड़े मियां को प्रस्तुत पाया। हमने गाड़ी एक ओर रोकते हुए कहा—"आपको काफी देर तक राह तो नहीं देखना पड़ी।"

उत्तर में बड़े मियां ने कहा—"जी नहीं, मैं भी अभी ही आया हूं।"

हम दोनों बैठ गए और बातें होने लगी। हमने कहा—"कहिए कोई ताजी बात, आपके 'मशरिक' में क्या कुछ हो रहा है? हमारे मिरजा साहब का आना-जाना तो बराबर है न।"

बड़े मियां ने कहा—"जी हां, रोज दोनों वक्त, और सुना है कि कल आप कुत्तों की दौड़ में भी गए थे।"

"यह भी खबर पहुँच गई।" हमने हँसकर कहा।

बड़े मियां ने कहा—"पहुँचती कैसे नहीं, और यह भी खबर पहुँची है कि आज आप नहीं जाएंगे क्योंकि कोई रिश्तेदार जो यहां ही कालेज में पढ़ती है आयेंगी हां कल आप जरूर जाएंगे। इधर आप मिरजा साहब के साथ पहुँचेंगे उधर आफताब भी पहुँचेगी और फिर 'मशरिक' चलने के लिए जोर डालेगी।"

हमने कहा—"मुझे 'मशरिक' ले जायेगा, लेकिन मैं डूबने वाला नहीं हूं, अच्छा आगे की क्या बात है?"

बड़े मियां ने कहा—"आजकल बड़े जोर की कान्फ्रेंस हो रही है। आफताब की अम्मां का ख्याल है कि मिरजा साहब आपसे हार खा गए हैं। लेकिन मिरजा साहब का दावा है कि वह जरूर कामयाब होंगे। अब योजना यह है कि कल आफताब वहां पहुंचेगी और अपने आंसुओं से आपको तर करेगी और आपको मजबूर करेगी कि 'मशरिक' चलें। यदि आप वहां गए तो यह प्रयत्न किया जायगा कि रात भर वहीं रहें। आपके न जाने और आफताब को न बुलाने को बड़ी बी बड़े गौर से पढ़ रही हैं। वह मिरजा साहब से कहती हैं—"यह शिकार फंसने वाला नहीं है, शकील मियां आपके भी गुरू हैं।" लेकिन मिरजा साहब कहते हैं कि देखते जाइए यह फकीर क्या करता है।

— समाप्त —

हमने कहा—"जी चाहता है कि मिरजा साहब की कलई खोल दूं लेकिन मैं चाहता हूं कि वह अपने तरकस के सभी तीर चला लें और जब तरकस खाली हो जाय तब उनसे कहूं—"जनाब आपको समझ चुका हूं।"

बड़े मियां ने कहा—"प्रतीत होता है कि आपको इस बात में आनन्द मिलता है कि मिरजा साहब चाल चलें और आप उन्हें व्यर्थ करदें—नहीं तो ऐसे आदमी को एक दिन नहीं रखना चाहिए।"

हमने कहा—"बड़े मियां ! अभी इन मिरजा साहब को बहुत कुछ करना है। यह मामूली आदमी नहीं है बहुत पहुंचे हुए हैं लेकिन यह भी क्या याद करेंगे कि किसी से पाला पड़ा है। हां एक बात समझ में नहीं आती कि यह सब वे क्यों कर रहे हैं जबकि सारा खजाना इन्हीं के पास रहता है और जब चाहें हजारों के वारे-न्यारे कर सकते हैं।"

बड़े मियां ने हँस कर कहा—"यही तो उनकी कारीगरी है। यह कोई छोटे-मोटे उठाईगीरे या जेबकतरे थोड़े ही हैं जो छोटी छोटी रकमों पर हाथ मारें। यह पूरे डाकू हैं। जब उन्हें यकीन है कि यह सब कुछ उनका हो सकता है और एक दिन वह इसके मालिक बनेंगे तो ऐसी बात क्यों करें। वह तो तख्ता उलटने की कोशिश में लगे हैं।"

हमने कहा—"हां चाहता तो वह यही है। अब तो मैं यह भी जरूरी समझता हूं कि उनके अधिकार कम कर दूं, कहीं ऐसा न हो कि भागते भूत की लंगोटी के तौर पर कोई

छोटी-मोटी रकम ले उड़ें।

"हां जरूर, यह मैं आपसे कहने ही वाला था और एक बात यह भी है कि इन्हें बेहोश करना आता है, भूल से कभी फ्लश खेलने न बैठ जाइएगा—बड़े मियां ने आगे के लिए संचेत करते हुए कहा और उदाहरण देते हुए बताया—आफताब जब राजा साहब सतपुड़ा के यहां नौकर थी तो मैंने खुद देखा कि एक दिन राजा साहब पचास हजार रुपया हार गए। यह आपके मिरजा साहब जिस तरह आपके दोस्त हैं, उसी तरह उनके भी दोस्त थे और राजा साहब को आफताब के यहां लाया करते थे। यह कोठी उन्हीं के रुपयों से बनी है।"

हमने कहा—"यह कैसे कहा जा सकता है कि यही लोग उन बुढ्ढे राजा साहब को एक-एक दिन में पचास-पचास हजार रुपया हरा दिया करते थे। शायद वह खुद हारते हों, क्योंकि फ्लश तो नामुराद चीज है।"

बड़े मियां ने कहा—"नहीं साहब, बात यह है कि यह लोग मिलकर खेलते थे। निशान लगे हुए पत्ते खेले जाते थे, इशारे बना रखे थे और हां आपने आफताब की वह साड़ी तो देखी होगी जिसपर हुकुम, फूल, ईंट और पान के चिन्ह हैं।"

हमें वह साड़ी याद आ गई और हमने तपाक से कहा—"हां-हां वही न, जो आफताब ने उस दिन बांधी थी जब पहले दिन उनके यहां रमी-पार्टी हुई थी।"

बड़े मियां ने कहा—"जी हां, वही साड़ी। उस साड़ी से बड़ा काम निकाला जाता है। उसी के फूलों पर अंगुलियां रख कर इशारे होते थे और वह दियासलाई भी जिस पर ताश के चारो रंगों के निशान होते थे और मिरजा साहब सिगरेट गुलगाने के लिए अपने पास रखते थे। बस इसी के सहारे दूसरे को चौपट कर देते थे।"

हमने आश्चर्य से बड़े मियां की इन बातों को सुना और कहा—'बड़े मियां! आपकी क्या राय है। मैं उनके साथ फलश खेलूं?" इस पर बड़े मियां ने कान पकड़ते हुए कहा—"कभी भी इन बदमाशों के चंगुल में न आना।"

"देखा जायगा–इम्तिहान ही सही, लेकिन मैं राजा सतपुड़ा नही बनूंगा। अच्छा बड़े मियां आपका शुक्रिया और फिर उनसे विदा होकर घर पहुंचा। मिरजा साहब कुत्तों को दौड़ मे जाने के लिए तैयार थे। हमने उनसे कहा—"जा रहे हैं न, आपने तो हद करदी है। ऐसा इश्क लगा है कि रहा नहीं जाता।"

मिरजा साहब ने फरमाया—"बच्चू! कल जीत चुके हो और ऐसी बातें करते हो। मालूम होता है आज भी चलना चाहते हो।"

हमने कहा—"मेरा तो इरादा नहीं है अलबत्ता आज फलश खेलने के लिए मन कर रहा है।"

मिरजा साहब आंखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे और कहा—"आज फलश खेलने का कौन-सा वक्त है?"

"आपकी रेस १० बजे खत्म हो जायगी और वहीं से उमर, अजीम और अख्तर को बुला लाना फिर यहीं महफिल जम जाएगी।" हमने कहा।

हमसे यह बात सुनकर तपाक से मिरजा साहब बोले—"क्या खूब ! इन लोगों को क्या पता कि फलश कौन सी बला है। यह तो रमी के रसिया हैं अगर फलश ही खेलना है तो आफताब, मुस्तफा अली, बैजनाथ और इरशाद को पकड़ा जाय।"

"हां, अगर आसानी से यह लोग मिल जांय तो अच्छा हो—" हमने कहा। और मिरजा साहब वायदा कर चलते बने।

इसके बाद हमने नहा धोकर कपड़े बदले। पहले तो यही सोचा कि 'मशरिक' चलें लेकिन फिर अपने ही यहां खेलने का इरादा किया और ड्राइंग रूम में सारा इन्तजाम कर खानसामा को चाय, पान व सिगरेट के लिए कह दिया।

ठीक वक्त पर खिलाड़ियों का पूरा काफिला आ गया। हमने देखा आफताब वही साड़ी पहने थी जिसके बारे में बड़े मियां बता चुके थे। हमने कहा—"साहब ! आपकी इस साड़ी से तो आंखें दुखने लगती हैं—खैर यह तो यूं ही कह दिया है, बात यह है कि आपके लिए एक बढ़िया साड़ी लाया हूं और चाहता हूं कि आज आप वहीं पहनें। यह कह अन्दर से साड़ी ले आया। अब आफताब ने मिरजा साहब को और मिरजा ने आफताब को देखा लेकिन वह कुछ कहें-सुनें इससे

पहले ही हमने कहा—"जरा यह साडी बांध कर दिखाइए तो सही, इसमें हर्ज ही क्या है।" अब आफताब को अन्दर जाना ही पड़ा और कुछ देर में साड़ी बदल कर बाहर आई तो हमने नारा लगाया—"इन्कलाब ! जिन्दाबाद !"

खेल शुरू हुआ। मिरजा साहब ने अपनी वही दियास-लाई सामने रखी। उसे देखते ही हमने कहा—"मिरजा साहब यह गलत है। फलश के खेल में इस तरह की चीजें बड़ी खतरनाक होती हैं। इसे जेब मे रखिए और यह लीजिए दियासलाई।"

अब तो सन्नाटे छा गए। किसी की चालाकी काम न आई और तीन बजे तक हमारी जेब पांच हजार से भर चुकी थी। खेल खत्म हुआ। साड़ी के दाम निकाल कर हम चार हजार सात सौ रुपए जीते थे।

७

★★

रात को देर से सोये थे इसलिए देर से आंख खुली। मिरजा साहब के बारे में पूछा तो पता लगा कि वह रात आफताब को पहुँचाने गए थे और अभी तक नहीं लौटे। हमने उठ कर हाथ मुँह धोया और खानसामा को चाय लाने के लिए कहा। रात को काफी देर तक जागने के कारण तबीयत भारी भारी लग रही थी। ठण्डे पानी से नहा लेने के

आद तबीयत तो ठीक हो गई लेकिनकुछ सर्दी सी लगने लगी इसलिए स्ट्रोंग चाय के साथ चार अण्डे लिए। हम चाय पी रहे थ कि मिरजा साहब लुटे-पुटे अन्दाज से आते हुए दिखाई दिए और पहुँचते ही कहा—"मान गए साहबजादे! रात को आपने अपने हाथ दिखा ही दिए।"

हमने कहा—"यह तो वक्त की बात है इसमें कमाल किस बात का, पत्तों के मिलने पर ही फलश का खल निर्भर होता है।"

मिरजा साहब ने कहा—"नहीं साहब, सिर्फ पत्तों पर ही नहीं होता, खेलने के ढंग भी होने चाहिएं और तुम खिलाड़ी के आंखों से भांप लेते हो।"

हमने कहा—"लेकिन मिरजा साहब, रात मुझे ऐसा लगा कि आप लोग बहुत डर-डर कर खेल रहे हैं, बड़ा दांव लगाते ही भाग खड़े होते थे।"

मिरजा साहब ने कहा—"भई मैं तो फलश के मामले में तुम्हारा मुरीद बन चुका हूं। आफताब के लिए यह मशहूर था कि उसके चेहरे से उसके पत्ते भांपे नहीं जा सकते। लेकिन वह भी मात खा गई और रात को कोई ढाई हजार के फेर में पड़ गई।"

मिरजा साहब ने अपनी हार छिपाते हुए कहा—"खैरि-त तो यह हुई कि मेरा एक हाथ इरशाद से लड़ गया और उसके कोई तीन सौ मिल गए, नहीं तो इतना ही मैं भी हारता।"

— समाप्त —

हमने कहा—"अच्छा हुआ आप इस लपेट में नहीं आए, नहीं तो इस वक्त आपकी रकम वापिस करनी पड़ती।"

अब मिरजा साहब मन ही मन पछता रहे थे कि मैंने बेकार अपनी हार छिपाई नहीं तो रुपये वापस मिल जाते। थोड़ी देर चुप रहने के बाद मिरजा साहब ने कहा—"शायद बैजनाथ अपने यहां फलश खेलने के लिए तुम्हें बुलाए। उसके यहां बहुत बड़ा खेल हो रहा है और राजा साहब सोंधी, ठाकुर साहब अर्जुन गढ़ और भी बहुत से लोग खेलने आएंगे। भाई मुझे तो डर लगने लगता है क्योंकि एक हाथ में दस-दस, बारह-बारह हजार के वारे-न्यारे हो जाते है।"

हमने कहा—'मिरजा साहब, मैं फलश का आदी नहीं हूं और न ही अपना व्यापार बनाया है कि हजारों के वारे-न्यारे करता फिरूं, कल तो कुछ मूड ही ऐसा हुआ और फिर व्यापार के रूप में मे यह खेल नहीं खेलता।"

मिरजा साहब देर तक समझाते रहे कि रात हम जीते हैं इसलिए खिलाड़ीपन को देखते हुए हार से डरना नहीं चाहिए। काफी देर तक वह अपना भाषण देते रहे लेकिन मैंने उनकी एक न सुनी और वह अपने कमरे में चले गए। रात की जगाई से सारा दिन आलस्य रहा। हम शाम को जल्दी आ जाते लेकिन होस्टल आकर पारा को लाना और उसे लेकर नुमाइश जाना था इसलिये फिर से नहाया, चाकलेटी-सूट और पारा का बनाया हुआ स्वाइटर पहना, अच्छी तरह सजकर होस्टल पहुंचा। पारा होस्टल के बाग में मिली,

उससे पूछा—"क्या तुमने यहां कह दिया है कि देर से लौटूंगी, या नहीं ?"

पारा ने मोटर में बैठते ही कहा—"यह देखिए अटैची मेरे साथ है इसमें नाइट सूट है और रात मैं घर ही बिताऊंगी।"

हमने हँसते हुए कहा—गुड ! गॉड ! आप तो बहुत ही अकलमन्द हैं।"

हम लोग शहर के बाहर को सड़क पर घूमते हुए नुमाइश के पिछले फाटक पर पहुँचे क्योंकि हमें मिरजा साहब के भेंट होने का डर था। हम नुमाइश के अन्दर घुसे ही थे कि पारा ने एक कपड़े के स्टाल के सामने रुक कर कहा—"इसमें चलिए तो।"

हम हैरान थे कि इस स्टाल में पारा की मन-बहलाव की कौन-सी चीज हो सकती है क्योंकि यहां तो मरदाना कपड़े हैं। कि तभी पारा ने स्टाल के अन्दर जाते हुए कहा—"यह कपड़े थान में नहीं मिलते बल्कि एक-एक सूट के होते हैं और तरह-तरह के रंग में होते हैं।" फिर एक कपड़े को अच्छी तरह देखकर कहा—"यह कैसा है ?"

हमने कहा—"बहुत अच्छा, लेकिन यह तो पूछ लो कि आपका कोट जंचेगा या नहीं।"

पारा ने कहा—"मेरा इरादा है कि मैं अपने लिए एक सूट भी बनवा लूं। आजकल लेडी सूट का चलन हो रहा है। हमारे कालेज में मिस बेरोडन सूट पहन कर आती है

ग्रौर बड़ा भला लगता है।"

हमने कहा—"मगर यह तो मरदाना सूट का कपड़ा है।"

पारा ने कहा—"तो बस ठीक है।" ग्रौर उस पर लिखी हुई कीमत देख कर अपना पर्स खोलना चाहा तो हमने कहा—"यह ठीक नहीं, आप इसकी कीमत नहीं दे सकती, मैं देता हूँ।"

"नहीं, इसकी कीमत आप नहीं दे सकते। यह मैंने अपने लिए नहीं खरीदा है।"

हमने हैरानी से पूछा—"फिर ?"

पारा ने सौ सौ के तीन नोट निकाल कर स्टाल के मालिक को देते हुए हमसे कहा—"किसी सहेली ने कपड़ा लाने के लिये कहा था।"

हमें विश्वास हो गया। अब पारा ने फिर कहा कि इसी रंग का ऊन भी लेना है। हम नुमाइश देखने के लिए बढ़े ही थे कि पारा ने कहा—देखिये वह लिखा है—"पैरिस के दरजी आपके लिए सूट सीने ग्राए हैं।"

हमने कहा—"हां, मेरा भी इरादा है कि अपना एक सूट इनसे सिलवाऊं।"

मेरे मुंह से इतना सुनते ही पारा ने कहा—"तो चलिए देखूं तो सही यह स्टाल।" ग्रौर स्टाल में पहुँचते ही अपने हाथ का बण्डल स्टाल के एक आदमी को देते हुए कहा—"यह कपड़ा है, इन साहब का सूट नाप लीजिए।"

हम क्या कहते, चुपचाप नाप देते रहे ग्रौर नाप लेकर

स्टाल वालों ने पारा को रसीद दे दी। स्टाल मे निकल कर हमने कहा—"यह क्या किया ?"

पारा ने कहा—"क्या मुझे आपको अपनी मरजी का सूट पहना हुआ देखकर खुश होने का अधिकार भी नहीं है ?"

हमें चुप होना पड़ा क्या कहता आखिरकार थियेटर देखने के बाद घर आए और सो गए।

× × ×

रात को सोते समय यह इरादा करके सोया था कि प्रभात में शीघ्र उठूंगा लेकिन आंख आठ बजे खुली और वह भी इसलिए कि नौकर चाय लेकर आ गया था। हमने उससे पूछा—"पारा बाबी जाग गई हैं।" जवाब में नौकर ने कहा—"जी हां, वह तो नहा भी चुकी हैं और ड्राइवर को तैयार रहने के लिए कहा है।"

हमने जल्दी जल्दी चाय पी और सभी कार्यों से निपट कर स्नान किया, कपड़े बदले और नाश्ते के लिए तैयार हो गये। हमने देखा कि नाश्ता बनाने में पारा खुद लगी है और जब हम रसोईघर में पहुँचे तो वह खानसामा से तरकारियों के बारे में पूछ-ताछ कर रही है। मुझे देखते ही उसने कहा—"आप बहुत देर तक सोते हैं। मैं तो समझी थी कि आज बिना मिले ही कालेज जाना पड़ेगा।"

हमने कहा—"यह कैसे हो सकता था, देखिये न मैं कितनी जल्दी तैयार हो गया। अब तो मै दिन-ब-दिन फुर्तीला होता जा रहा हूँ।"

पारा ने कहा—"हां, यह तो ठीक है लेकिन जरा घर का भी ख्याल रखा कीजिये, देखिए इस सेट की दो प्यालियां टूट गई हैं।"

हमने कहा—"जनाब, इसी वजह से आपा को खत लिखा है। अब अगर आप चाहें कि मैं रजिस्टर बनाऊं और हाजिरी लूं तो यह मुझसे नामुमकिन है।"

पारा ने अण्डे हमारी ओर सरकाते हुए कहा—"लेकिन मिरजा साहब के इन्तजाम की धूम मची हुई थी वह सब क्या हुआ।"

हमने कहा—"वह बेचारे आजकल दूसरे ही धन्धों में लगे हुए हैं। जब से नुमाइश आई है तभी से उन्होंने कुत्तों के साथ अपना लगाव बना लिया है।"

९ बजने वाले थे इसलिए पारा ने जल्दी की। हमने भी जल्दी की और चाय खत्म कर पारा के साथ बाहर आ गये और मोटर स्टार्ट करी। मोटर में बैठते ही पारा ने कहा—"याद रखियेगा ३ तारीख को सूट लेने के लिए जाना है और मुझे होस्टल से ले लीजियेगा, मैं तैयार रहूँगी।" कार होस्टल के दरवाजे पर पहुँची तो पारा अन्दर चली गई और हम अपने तथा पारा के बारे में तरह-तरह की बातें सोचते घर पहुँचे। कार से उतर कर कमरे में आए थे कि नौकर ने डाक दी जिसमें आपा का खत भी था। बाकी डाक अलग रख कर आपा का लिफाफा खोला और पढ़ना शुरू किया—भैया ! जीते रहो !

तुम्हारा खत पाकर वह तमाम रंज दूर हो गया जो तुम्हारे यहां से लेकर आई थी। तुम्हारे दूल्हा भाई तुम्हारे विचारों की वकालत करते रहते थे और मुझे समझाते थे लेकिन मैं उनके समझाने में भी भेद मानती थी क्योंकि वह खुद महसुन साहब और रुखसन्द को पसन्द नहीं करते थे इसलिए तुम्हारे इन्कार करने से उन्हें खुशी हुई थी। आज तुम्हारा खत पाकर मैं हैरान रह गई कि तुम पारा को चुने बैठे हो। अगर पहले मुझे ध्यान आता कि तुम पारा को चुनोगे तो पहले इस ओर ही कोशिश करती। तुम्हारे चुनाव पर तुम्हारे दूल्हा भाई बहुत प्रसन्न हैं और वे हर वक्त तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं। मैं तो इस सोच में पड़ी थी कि अगर तुम रुखसन्द जैसी चमकदार लड़की को भी ठुकरा रहे हो तो मैं उससे अच्छी लड़की और कहां से लाती।

तुम्हारा खत पाकर चचा मंजूर के यहां गई और उनसे इस बारे में बात की। वह यह रिश्ता करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा है कि पारा बी. ए. का इम्तिहान दे रही है उसे दे लेने दो। मैंने कल पचास रुपये के लड्डू और लड़की के हाथ पर रखने के लिए एक सौ एक रुपया, एक अंगूठी उनके यहां पहुँचा दी है और अब तुमको मुबारकबाद दे रही हूँ।

एक आवश्यक बात यह है कि पारा बी. ए. का इम्तिहान दे रही है। उसका आखिरी साल है इसलिये ख्याल रखना और पढ़ाई का इन्तआम कर देना। यहां सब खैरियत

है, तुम्हारे दूल्हा भाई दुआ कहते हैं और बहुत खुश हैं।

तुम्हारी
आपा"

आपा का खत पाकर जी तो यही चाहता था कि अभी होस्टल जाकर पारा से मिलूं लेकिन पहले खत का जवाब देना मुनासिब समझा।

"आपा—तसलीम!

आपका खत पाकर सिर का बोझ हल्का हो गया कि अब हमारी आपा नाराज नहीं है। चचा मंजूर के रवैये पर प्रसन्नता हुई। आपने पारा की परीक्षा के विषय में जो लिखा है वह सब ठीक कर दूंगा। दूल्हा-भाई को सलाम कहें।

आपका
शकील"

इस खत को हम खुद ही डालने के लिए गये। हमें डर था कि आपा नाराज हो गई हैं और पता नहीं मेरे चुनाव को पसन्द करें या न करें लेकिन आपा के खत ने मेरे भय को दूर कर दिया। अब हमने सन्तोष की सांस ली। हमारा दिल बाग़-बाग़ हो उठा।

--o--

८

★★

समय इसी प्रकार बीतता रहा। मिरजा साहब हमसे दूर होते गए और पारा पास आती गई। काफी दिनों से न हम आफताब के यहां गए और न उसे ही बुलाया अलबत्ता 'मशरिक' के बड़े मियाँ मिलते और हमें वहां की एक-एक बात बताते कि वहां क्या कुछ होता रहता है। उदाहरण के तौर पर फ्लश में हारने पर आफताब की मां ने मिरजा साहब की वह खबर ली, कि वह याद करते होंगे। बुढ़िया ने कहा कि शकील को हराना हँसी-खेल नहीं है, आप लोग बहुत चालाक बनते हैं लेकिन वह नहले पर दहला है। उसने खेल प्रारम्भ होने से पहले ही ताशों के निशान वाली साड़ी इसीलिए उतरवा दी और वह 'टेक्का मार्का' दियासलाई भी। जो बात आप लोग सोचते हैं वह पहले ही उसकी बुद्धि में आ जाती है। उसकी मां ने आगे और भी सख्ती के साथ मना करके कहा—'यह गनीमत समझो, थोड़ा ही नुकसान हुआ है चुपचाप बैठ जाओ वरना शकील कहीं का न छोड़ेगा और कंगला बना देगा।' लेकिन आफताब झल्लाकर बोली—"मैं उनसे चौगुना वसूल न करूँ तो मुझे रण्डी नहीं भंगिन कहना।' मिरजा साहब ने भी मूछों पर ताव देते हुए कहा कि उन हो हजरत की जो आज चौकड़ियां भर रहे हैं इसी

दरवाजे पर बांध कर न डाल दूं तो मुगल न समझिएगा।
बैजनाथ और मुस्तफा के देवता कूच कर गए थ। वे बेचारे पछता रहे थे कि हम नाहक हो गेहूं के साथ घुन की तरह पिस गये। अब यह तय हुआ है कि बैजनाथ के यहां फिर फ्लश खेला जाय और कुछ एक खिलाड़ियों को बुलाकर हमें दिवालिया बना दिया जाय।"

बड़े मियां से सब बातें ज्ञात होने पर हम मिरजा साहब के बिछाए हुए जाल में न फसे। मिरजा साहब ने कई बार कहा, आफताब के भी कई सन्देश आए, खुद आने के लिए लिखा लेकिन हम चुप रहे। हमारे दिमाग में पारा का नक्शा चक्कर काट रहा था जिसके कारण हमें किसी और तरफ सोचने का अवकाश ही न था।

पारा का दिया स्वाइटर-सूट पहने बैठे थे कि आहट पर मुड़कर देखा आफताब आई हुई है। हमने हैरानी से पूछा—"आप!" आफताब ने कहा—"जी हां, मैं!"

"बैठिए!" हमने कहा और वह बैठ गई। काफी देर तक कमरा सुनसान रहा। न हमने कुछ कहा और न उन्होंने ही कोई बात की, आखिरकार हमने कहा—

"आंखों में नमी सी है, चुपचाप से बैठे हैं।
खामोश निगाहों में खामोश फसाना है।"

सुनकर आफताब ने कुछ मुस्कराहट के साथ कहा—"वह फसाना खामोश ही रहता है जिसका......

हमने बीच में बात काटकर कहा—"वाह खूब बात से

बात पैदा की है। मैंने तो वातावरण को देखकर यूं ही एक शेर पढ़ दिया था।"

आफताब ने उसी लहजे में कहा—और मैंने शेर से प्रभावित होकर यूंही एक बात कह दी।"

"अच्छा, तो अब कोई ऐसी बात कहिए जो यूं ही न हो–" हमने कहा। और तब आफताब कहने लगी—"आज मैं आपसे कुछ निर्णय सुनने और कुछ सुनाने के लिए यहां आई हूं।"

हमने सिगरेट सुलगाते हुए कहा—"निर्णय! लेकिन निर्णय तो वहां होता है जहां कोई झगड़ा हो। मैं नहीं समझ सका कि आप किस बात का निर्णय सुनने आई हैं।"

"हां! ठीक है, आपकी समझ में कोई बात नहीं है। मुझे नहीं मालूम था, जिनसे दवा चाहती हूं उनको दर्द का ही पता नहीं है।"

हमने तय कर लिया था कि आफताब को आज नाच नचा कर रहूंगा। इसलिए कहा—"वाह खूब! दर्द और दवा लेकिन ऐसी हालत ही क्यों हुई?"

आफताब ने दर्द भरी आवाज में कहा—"आप मुझसे पूछते हैं कि ऐसी हालत क्यों हुई। यह आप अपनी आंखों से पूछिए जिन्होंने मेरी नींद गायब करदी है।"

हमने कहा—"क्या खूब! काश मैं भी इस तरह नाटकीय ढंग से बातें कर सकता।"

"तो क्या मैं डायलॉग बोल रही हूं और अदाकारी कर

रही हूं। आपको हक है चाहे जो कुछ कहें, क्योंकि इस वक्त आपके यहां आई हूं।" आफताब ने कहा।

यह सुनकर हमने कहा—"देखिए आफताब साहब ! आपने मुझे चुप कराने के लिए यह बात अपनी और मेरी दोनों की शान के विरुद्ध की है। मैं आपको उस भ्रम में नहीं रखना चाहता जिसमें आप हैं। अगर मेरे किसी काम से आपको भ्रम हुआ है तो मैं शर्मिन्दा होने को तैयार हूं लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आप मेरे किसी रवैये को आंट के तौर पर व्यवहार करने में सफल नहीं हो सकतीं।"

आफताब ने ठण्डी सांस लेकर कहा—"यह मन जो भी सुनवाए थोड़ा है।" और साड़ी का एक कोना आंखों पर रखकर सिसकियां लेना शुरू कर दिया। आंसू औरत की सबसे बड़ी शक्ति है और मैं यह मानता हूं कि इस शक्ति के आगे बड़े-बड़े लोग हार जाते हैं, दिल पसीज उठता है लेकिन आफताब के आंसू औरत के आंसू न होकर एक नाचने गाने वाली रण्डी के आंसू थे इसलिए हम पर किसी तरह का असर न हुआ। हां इस रोने पर कुछ क्रोध और कुछ हँसी अवश्य आ रही थी। अन्त में हमने गम्भीरतापूर्वक कहा—"मुझे दुःख है कि आप मेरे यहां बैठकर रो रही हैं लेकिन मैं आपसे झूठ बोलकर आपको किसी गलत फहमी में रखना नहीं चाहता और सच कहने के लिए भी मैं तैयार नहीं हूं।"

आफताब ने कहा—"लेकिन सच बोलने में आप कतरा

क्यों रहे हैं। आज मैं सब कुछ सुनने के लिए आई हूं। आप का सच बोलना अब मेरे लिये उतना कड़वा नहीं होगा जितना अब हो रहा है।"

यह सुनकर हमने चाहा कि इस नागिन को इसी के जहर से मार डालें, लेकिन फिर सोचा कि यह एक औरत ही नहीं, बल्कि एक दुकानदार भी है और वह सभी बातें जिन्हें हम जुर्म समझते हैं उसके कारोबारी दाव-पेंच से अधिक नहीं। यदि उसकी साजिश का रहस्य खुल जाय तो वह और भी अधिक सतर्क हो सकती है। यह ठीक है कि वह अब हमारा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती लेकिन दूसरों को फंसाने में इन अनुभवों से सीख ले सकती है। हम इन्हीं विचारों में उलझे हुए थे कि उसने घायल शेरनी की तरह फिर वार किया—"आखिर आप सच बोलने में हिचकिचा क्यों रहे हैं?"

हमने कहा—"आफताब साहिबा! मैं यह सोच रहा हूं कि आपको मुझसे पूछने की जरूरत क्यों हुई? मैं तो आपको कसूरवार नहीं समझता। हां आप सम्भवतः इसीलिये नाराज हैं कि मैंने अपने को राजा सतपुड़ा सिद्ध क्यों नहीं किया।"

राजा सतपुड़ा का नाम सुनकर आफताब का रंग फक हो गया लेकिन फिर भी ढीठ बनकर कहा—"जी हां राजा सतपुड़ा वाला रहस्य तो कोई ऐसी बात न थी जिसे मालूम करके आपने बड़ा तीर मारा हो। दुनियां को मालूम है कि मैं उनके यहां नौकर थी।"

यह सुनकर हमें क्रोध आ गया। हमने कहा—"जी हां, लेकिन दुनिया को यह नहीं मालूम कि उस बेवकूफ को किस तरह लूटा गया। दुनिया को यह नहीं मालूम कि एक-एक रात में वह साडी और दियासलाई के कारण पचास-पचास हजार रुपये हार गया, उसे ताश खिलाकर लूटने का षड्यन्त्र किया गया और फिर वही दांव, वही हथकण्डे मेरे लिए भी इस्तेमाल किये गए लेकिन जब इस साजिश में कामयाबी न हुई तो बैजनाथ के यहां खिलाड़ियों को जमा कर मुझे खींचने का कोशिश की गई।"

आफताब गुम-सुम बैठी सुनती रही। वह रोना-धोना भूल चुकी थी और अपनी वह तमाम अदाकारी भी जो वह मुझे फांसने के लिए सोच कर आई थी। इधर हमारी यह हालत थी कि हम कच्चा चिट्ठा उलटते जा रहे थे। हमने कहा—"और आज आप सच-सच सुनना चाहती तो सुनिए—आपने यहां तक स्कीम बनाई थी कि दिवालिया होने की हालत में नकली जेवर लेकर आप मेरे पास आएंगी और मुझे निकाह के लिए रजामन्द करेंगी और मुझसे वे नकली जेवर अपनी मां को देने के लिए कहेंगी ताकि मैं बाद में फंस सकूं लेकिन आप इस जाल को फैलाने में और मुझे फंसाने में कामयाब न हो सकीं।"

आफताब ने उठते हुए कहा—"सब कुछ कह चुके न, मैं मुबारकबाद देती हूं कि आप फंसने से बच गए और खूब परखा मुहब्बत को।" इतना कह कर वह तीर की तरह

चलती बनी।

आफ़ताब के जाने के बाद हमें दो आदमियों का इन्तज़ार था, एक मिरजा साहब और दूसरे 'मशरिक' के बड़े मियां। मिरजा साहब का यों कि देखें अब वह कौन-सा स्वांग रचते हैं और बड़े मियां का 'मशरिक' में क्या कुछ हो रहा है यह जानने के हेतु। हमारी इन दोनों इच्छाओं में हमारी पहली इच्छा पहले पूरी हुई। आफत ब के जाने के तीन-चार घण्टे बाद मिरजा साहब जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते आए। उन्होंने हमें देखते ही जोर से नारा लगाया—"शकील मिया की जय ! शकील मियां जिन्दाबाद ! मैंने पूरे के पूरे नम्बर देकर तुम्हें पास कर दिया।"

हमने इन नारों का मतलब बहुत कुछ समझते हुए कहा—"खैरियत तो है, क्या हुआ मिरजा साहब !"

मिरजा साहब ने लच्छेदार भाषा में कहना शुरू किया—"अजीब अजीब हालत में फंसा कर, कठिनाइयों में डालकर दलदलों में धंसाकर यानी हर तरह से तुम्हें परखा, तुम्हारी परीक्षा ली और आज कह सकता हूं कि स्वर्ग का देवता भी तुम्हें अपनी चालों में फांसने में असमर्थ रहेगा। आफताब से बचना आसान न था लेकिन वाह रे मेरे शेर ! वह थप्पड़ लगाया जिसे जिन्दगी भर याद करेगी और सोचेगी किसी से पाला पड़ा था।"

"बस रहने भी दीजिये मिरजा साहब !" हमने कहा लेकिन उन्होंने बात काट कर कहा—"मैं जानता हूं तुम्हें

मुझसे भी नफरत हो गई होगी क्योंकि मैंने इस ड्रामे में पार्ट ही ऐसा किया था लेकिन यह सब कुछ इसलिए किया था कि तुम अपने पैरों पर खड़े हो सको और मैं अपने उद्देश्य में सफल हुआ कि तुम्हें कोई भी अपने षडयन्त्र में नहीं फंसा सकता।"

सचमुच इस आदमी के काटे का मंत्र न था। जी में तो आया इसका भी भांडा फोड़ दूं, फिर सोचा अभी इनकी गतिविधियों पर दृष्टि रखनी चाहिये अलबत्ता घर का प्रबन्ध ले लेना चाहिये क्योंकि अब इन पर भरोसा करना खतरे से खाली नहीं। इन्हीं सब बातों को सोचकर हमने कहा—"मिरजा साहब मैंने आप पर आंख बन्द करके भरोसा किया।"

"यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल थी जो मुझ पर भरोसा किया। यह समय भरोसे का नहीं है। और कोई होता तो तुम्हें इसकी सजा देता लेकिन मैं आज ही पाई-पाई का हिसाब दे दूंगा। यह अच्छा ही हुआ कि तुम आफताब के कुचक्र से बच निकले नहीं तो तबाह व बर्बाद हो जाते। मैं उसकी सभी चालों को देख रहा था और तुम्हारे रवैये पर भी आंख गड़ाए था अलबत्ता तुम्हें बताया नहीं। अब इस जुर्म में तुम चाहे मुझे गद्दार ही कहो लेकिन मैं यही समझता हूं कि तुम तबाही से बच गए और तुमने अपने आपको इस योग्य बना लिया कि किसी को सिखाने-पढ़ाने की जरूरत नहीं। अच्छा मैं अभी आता हूं जरा अपना हिसाब ले

आऊं।" मिरजा साहब यह सब कहते हुए अपने कमरे की ओर लपके। हमने भी तय कर लिया था कि हिसाब-किताब लेकर घर का चार्ज खुद सम्हाल लूं लेकिन मिरजा साहब को कहीं जाने न दूं ताकि इनकी हरकतों का, करतूतों का पता चलता रहे। दूसरे जब तक बड़े मियां से भेंट नहीं होती हम मिरजा साहब के बारे में यह उचित नहीं समझते कि उन्हें जाने दें या उनसे लड़ाई मोल लें। हम यह सोच ही रहे थे कि मिरजा साहब एक रजिस्टर लिए हुये आ धमके और उसे मेज पर रखकर कहने लगे—"शीशे की तरह रजिस्टर खुला हुआ है। आप इसमें तारीखवार तमाम हिसाब देख सकते है। किस-किस तारीख को आपने चैक काटा है और उस रकम को कहां-कहां खर्च किया गया है यह सब जान लीजिए और यह रहे सात सौ चवालीस रुपए ग्यारह आने ६ पाई जो मेरे पास हैं। इसी रजिस्टर के दूसरी ओर तमाम सामान की लिस्ट, टूट-फूट सब दर्ज है देख लीजिए, यह हैं कुंजियां।"

हमने रजिस्टर बन्द करते हुए कहा—"आपने हिसाब समझाया और हमने समझ लिया। अगर आपकी यही इच्छा है कि मैं चाबियां और हिसाब-किताब की देखभाल स्वयं करूँ तो लाचारी है वरना मैं अब भी आप पर वैसा ही भरोसा करने को तैयार हूं।"

मिरजा साहब ने आंखों में आंसू भर कर अपने नाटकीय ढंग से कहा—"मेरी आंखों में खुशी के आंसू हैं कि मैंने बहुत

बड़ी कुरबानी दी है, अपना विश्वास कुरबान किया है। मैंने अपने को उन हालात में रखा था कि अगर मैं अपनी सफाई पेश करना चाहूं तो नहीं कर सकता लेकिन मुझे खुशी है कि मेरी मेहनत सफल हो गई और तुम अपनी खुद की समझदारी से आफताब के चंगुल में फंसने से बच निकले। अब मैं आज ही चला जाऊंगा।"

हमने कहा—आप कहां चले जायेंगे ?"

"यह आसमान वाला बताएगा।" मिरजा साहब ने आसमान की ओर अंगुली उठा कर कहा।

हमने कहा—"यह नहीं हो सकता, मैं आपको कभी भी न जाने दूंगा। अगर आपका इरादा यही है कि···" हम यह कहने वाले थे—"अगर आपका इरादा यह है कि यहां से चले जांय तो मैं भी यह हिसाब-किताब नहीं सम्हालता। इन कुंजियों को लेकर जाइये।" लेकिन हमने सोचा कि कहीं फिर से हिसाब-किताब न सम्हाल लें इसलिए बात बदल कर कहा—"यदि आपका विचार जाने का निश्चित है तो यह सोच करके जाइए कि चाहे मेरा कैसा भी हाल सुनिएगा—" मिरजा साहब ने मेरे मुँह पर हाथ रखकर भर्रायी हुई आवाज में कहा—'न, न अल्लाह के लिए कोई ऐसी-वैसी बात न कहना। मैं तो इसलिए जाना चाहता था कि मैंने अपना विश्वास खोया। अब किस मुँह से आपसे आंख मिलाऊँ।"

हमने कहा—"मिरजा साहब ! जब आप कहते हैं कि

आपने मेरे लिए बड़ी कुरबानी दी तो फिर हिचकिचाने, आंख छिपाने की बात ही क्या है ?"

यह सुनकर मिरजा साहब ने बेहयाई के साथ छाती पर हाथ रख कर कहा—"मेरा दिल मुझे शाबासी दे रहा है कि तूने अपना कर्त्तव्य पूरा किया किन्तु ऊपर की घटनाएं मुझे अपराधी ठहराती हैं।"

हमने कहा—"इतनी बड़ी कुरबानी देने वाले आदमी को ऊपर की, इधर-उधर की बातों से परेशान नहीं होना चाहिए।"

मिरजा साहब ने सारी राम कहानी का सिलसिला फिर से शुरू करते हुए हमारी तरह-तरह की तारीफ करनी शुरू कीं। और हम यह सोच रहे थे कि देखें अब यह कौन सा बाना पहनते हैं।

× × ×

इतवार का दिन था और हमारे समक्ष दो बहुत जरूरी काम थे—एक तो पारा को अपने यहाँ लाना और दूसरा कम्पनी बाग में बड़े मियां से भेंट। हम नाश्ता करके अख-बार पढ़ने बैठे ही थे कि बड़े मियां एक लिफाफा लिये हुये आये और सलाम करके बोले—"यह आफताब बिटिया ने दिया है।"

मिरजा साहब आफताब का नाम सुनकर और बड़े मियां को देखकर वहां से खिसक गए। मैंने लिफाफा खोला और पढ़ना शुरू किया—

जनाबे मन !

मैं न पत्र लिखना चाहती थी और न ही आपको मेरे पत्र की आवश्यकता होगी लेकिन आपको एक आने वाले खतरे की सूचना देने के लिए यह खत लिख रही हूँ। आपके यहाँ जो मिरजा साहब नामक बुजुर्ग रह रहे हैं, उनसे बच कर रहिएगा। मेरे यहां या मेरे सिलसिले में जो कुछ हुआ है उसकी तमाम जिम्मेदारी उन्हीं पर है। वे ही इस कांड के नायक हैं। मेरे यहाँ राजा साहब सतपुड़ा के साथ जो व्यवहार हुआ है, उसके कर्ता-धर्ता यही हैं। सम्भव है मेरे इन शब्दों पर आपको विश्वास न हो लेकिन कभी न कभी जब इनकी सचाई जाहिर होगी तो आपको आभास होगा कि आफताब ने इसके बारे में पहले ही सूचित कर दिया था।

आपकी—आफताब

हमने खत पढ़ा और फिर उसी लिफाफे में डालकर बड़े मियाँ से कहा—"अच्छा हुआ इस खत के बहाने आपसे मुलाकात हो गई। कहिये अब 'मशरिक' का क्या हाल-चाल है?"

बड़े मियां ने कहा—"पहले मशरिक से आफताब निकला करता था लेकिन आजकल वहां मातम का सा दृश्य रहता है। आपकी कामयाबी और अपनी हार के मरशिये पढ़े जाते हैं। बुढ़िया और आफताब का विचार है कि मिरजा साहब ने गद्दारी की है। अगर मिरजा साहब जान लेकर न भागते तो उनकी वह मरम्मत होती कि उन्हें आटे दाल का भाव मालूम हो जाता। उन्होंने कसमें खाईं लेकिन बुढ़िया ने कहा कि तुम्हारे सिवाय और कोई हो ही नहीं सकता।"

"कहतीं तो होंगी कि किसो से पाला पड़ा है।" हमने कहा।

बड़े मियां ने कहा—"बस कुछ न पूछिए, हाथों के तोते उड़ गये हैं। सोचा क्या था और हुआ क्या ? आपने भी कुछ बाकी न छोड़ा। सब कुछ बता दिया। मैं तो डरा था कि कहीं मेरे ऊपर ही न आफत आ जाय।"

हमने कहा—"आप पर क्या आफत आती। आपके लिए यह घर हर समय खुला है जब जो चाहे चले आइए और अपना घर समझकर आराम से रहिए। मुझे आप जैसे एक बुजुर्ग की जरूरत है।"

बड़े मियाँ ने कहा—"यह तो आपकी मेहरबानी है। रहने के लिए मेरा अपना मकान भी है लेकिन मैं यहाँ इस-लिए रह रहा हूँ ताकि जिस तरह आप उस जाल से निकले हैं उसी तरह दूसरे फंसने वालों को बचा सकूं तो इस तरह मेरे पिछले पाप कम होते रहेंगे।"

हमने कहा—"बेचारे मिरजा साहब दोनों ओर से गए न इधर के रहे न उधर के रहे।"

बड़े मियाँ ने कहा—"इधर के क्यों नहीं रहे। यहां तो वह अब भी हैं।"

हमने कहा—हां, अब यहां उनका रहना ही रहना है, तमाम हिसाब-किताब, कुञ्जियां, रुपया-पैसा सब उनके हाथ से ले लिया गया है।"

बड़े मियां ने मगन होकर कहा—"यह आपने बहुत

जनाबे मन !

मैं न पत्र लिखना चाहती थी और न ही आपको मेरे पत्र की आवश्यकता होगी लेकिन आपको एक आने वाले खतरे की सूचना देने के लिए यह खत लिख रही हूँ। आपके यहाँ जो मिरजा साहब नामक बुजुर्ग रह रहे हैं, उनसे बच कर रहिएगा। मेरे यहां या मेरे सिलसिले में जो कुछ हुआ है उसकी तमाम जिम्मेदारी उन्हीं पर है। वे ही इस कांड के नायक हैं। मेरे यहाँ राजा साहब सतपुड़ा के साथ जो व्यवहार हुआ है, उसके कर्ता-धर्ता यही हैं। सम्भव है मेरे इन शब्दों पर आपको विश्वास न हो लेकिन कभी न कभी जब इनकी सचाई जाहिर होगी तो आपको आभास होगा कि आफताब ने इसके बारे में पहले ही सूचित कर दिया था।

आपकी—आफताब

हमने खत पढ़ा और फिर उसी लिफाफे में डालकर बड़े मियाँ से कहा—"अच्छा हुआ इस खत के बहाने आपसे मुला-कात हो गई। कहिये अब 'मशरिक' का क्या हाल-चाल है?"

बड़े मियां ने कहा—"पहले मशरिक से आफताब निकला करता था लेकिन आजकल वहाँ मातम का सा दृश्य रहता है। आपकी कामयाबी और अपनी हार के मरगिये पढ़े जाते हैं। बुढ़िया और आफताब का विचार है कि मिरजा साहब ने गद्दारी की है। अगर मिरजा साहब जान लेकर न भागते तो उनकी वह मरम्मत होती कि उन्हें आटे दाल का भाव मालूम हो जाता। उन्होंने कसमें खाईं लेकिन बुढ़िया ने कहा कि तुम्हारे सिवाय और कोई हो ही नहीं सकता।"

"कहती तो होंगी कि किसी से पाला पड़ा है।" हमने कहा।

बड़े मियां ने कहा—"बस कुछ न पूछिए, हाथों के तोते उड़ गये हैं। सोचा क्या था और हुआ क्या? आपने भी कुछ बाकी न छोड़ा। सब कुछ बता दिया। मैं तो डरा था कि कहीं मेरे ऊपर ही न आफत आ जाय।"

हमने कहा—"आप पर क्या आफत आती। आपके लिए यह घर हर समय खुला है जब जी चाहे चले आइए और अपना घर समझकर आराम से रहिए। मुझे आप जैसे एक बुजुर्ग की जरूरत है।"

बड़े मियां ने कहा—"यह तो आपकी मेहरबानी है। रहने के लिए मेरा अपना मकान भी है लेकिन मैं वहाँ इस-लिए रह रहा हूँ ताकि जिस तरह आप उस जाल से निकले हैं उसी तरह दूसरे फंसने वालों को बचा सकूं तो इस तरह मेरे पिछले पाप कम होते रहेंगे।"

हमने कहा—"बेचारे मिरजा साहब दोनों ओर से गए न इधर के रहे न उधर के रहे।"

बड़े मियां ने कहा—"इधर के क्यों नहीं रहे। यहां तो वह अब भी हैं।"

हमने कहा—हां, अब यहां उनका रहना ही रहना है, तमाम हिसाब-किताब, कुञ्जियां, रुपया-पैसा सब उनके हाथ से ले लिया गया है।"

बड़े मियां ने मगन होकर कहा—"यह आपने बहुत

अच्छा किया। मैं भी आपसे कहने वाला था। बात यह है कि अब तक उनकी आमदनी का दरवाजा 'मशरिक' में खुला हुआ था, इसलिए आपके यहां हेरा-फेरी का काम न करते थे लेकिन अब वह दरवाजा बन्द हो जाने से उनसे बचने की जरूरत थी, इसलिए आपने अच्छा ही किया।"

हमने कहा—"उन हजरत ने तो मुझे यह यकीन दिलाने की कोशिश की कि वह जान बूझकर इस झमेले में पड़े हुए थे ताकि उनकी चालों को जो वे मेरे खिलाफ चलें जानते रहें।"

"झूठा है, बेइमान है। अब उन लोगों से अनबन हो गई है, इसलिए बातें बनाता है वरना उनका हिस्सेदार था। उनके साथ मिलकर गले काटता था।" बड़े मियाँ ने कुछ देर तक इसी तरह की बहुत-सी बातें की। इसके बाद हमने उस खत का जवाब लिखा जो इस तरह था—

"आपका खत मिला, शुक्रिया। यह खत भेजकर आप कानूनी तौर पर मेरे शिकंजे में आ गई हैं और आपने लिख-कर अपने षडयन्त्र को मान लिया है। लेकिन आप यकीन रखें कि यदि फिर से ऐसे कोई षडयन्त्र का सन्देह न हुआ और आपने कोई शिकायत का अवसर न दिया तो इस कागज से वह काम न लूंगा। मिरज़ा साहब की ओर से उतना ही सतर्क हूं जितना आपकी ओर से।

आपका

शकील"

बड़े मिया ने इस जवाब को सुनकर कहा—"इस खत को सम्हाल कर रख लें शायद इससे काम लेने की जरूरत पड़े।" और वह खत लेकर चले गए। उनके जाने के बाद मिरजा साहब आ पहुँचे और बड़े मियां के आने के बारे में पूछ-ताछ शुरू की।

हमने आफताब का खत पढ़कर उन्हें सुना दिया जिसे सुनकर मिरजा साहब ने आफताब और उसकी माँ को एक सौ एक गाली दीं। जब मिरजा साहब का जोश कुछ कम हुआ तो हमने कहा—"एक बात पर तो आपने ध्यान ही नहीं दिया। आफताब ने खत लिखकर अपने कलम से ही अपने जुर्म को मान लिया है और कानून के शिकंजे में खुद आ गई है।"

मिरजा साहब ने उचक कर कहा—"मैंने तो इधर ध्यान ही नहीं दिया। यह पत्र आप पुलिस में दे दें। इस मौके से जरूर फायदा उठाना चाहिए।"

हमने कहा—"लेकिन इस पत्र की रोशनी में आप भी फस जाते हैं।"

"अच्छा तो जाने ही दीजिये।" मिरजा साहब ने सह-मते हुये कहा।

हमने कहा—"इस पत्र को मैं सम्हाल कर रख लेता हूँ सम्भव है किसी समय काम आए।"

मिरजा साहब चुप रहे। वह बेचारे बोलते ही क्या क्योंकि उन्हें यह भय था कि अब कभी भी इस पत्र से काम

लिया जायगा तो उनका नाम भी होगा। हम मिरजा साहब को इस झमेले में छोड़कर पारा को लेने होस्टल पहुँचे। पारा हमारी प्रतीक्षा कर रही थी। पहुँचते ही उसने उलाहना दिया—"या तो टाइम न दिया कीजिये या फिर टाइम के पावन्द रहिए।"

हमने देरी की क्षमा मांगी और पारा को लेकर घर की ओर चले। रास्ते में उससे पूछा—"घर से कोई खत आया या नहीं।"

पारा ने कहा—"जी हां, अम्मीजान का खत आया है। उन्होंने लिखा है कि तुम पढ़ी-लिखी लड़की हो और पढ़ी-लिखी लड़कियों से डर लगता है इसलिए तुमसे पूछती हूँ कि शकील के बारे में तुम्हारी क्या सम्मति है। मेरे और तुम्हारे अब्बाजान की सम्मति में यह सम्बन्ध बहुत बढ़िया है। खुदा करे तुम्हें भी पसन्द हो। इसमें शर्माने की कोई बात नहीं, अपनी पसन्द साफ-साफ लिख दो।"

"फिर आपने क्या लिखा ?"

"जो जी में आया लिख दिया, हां यह नहीं लिखा है कि खुदा के लिए मुझे बचाइये, मुझ पर जुल्म न कीजिए।"

हमने कहा—"अच्छा अब यह तो बताइए परीक्षा से कब तक छुट्टी मिलेगी और उसके बाद क्या इरादा है।"

मेरी परीक्षा अगले महीने की आठ तारीख को समाप्त होगी और ९ को भूपाल जाऊंगी।"

हमने कहा—"आपको मालूम होना चाहिए भूपाल तक

मै भी आपके साथ चल रहा हूं ।"

पारा ने कहा—"सच ! आप भूपाल किस लिए जा रहे है ? क्या आपा ने बुलाया है ?"

हमने कहा—"जी नही, आपा ने तो नही बुलाया है बस आपको पहुँचाने भूपाल के स्टेशन तक चलूंगा और फिर दूसरी ट्रेन से वापस आ जाऊगा ।"

पारा ने कहा—"यह भी अजीब बात है, यह तो अच्छा नही रहेगा लेकिन रास्ता अच्छी तरह कट जाएगा और हां जाकर आपा से कहूंगी कि दुनिया का खून ऐसा सफेद हो गया है कि आपके भैया भूपाल के स्टेशन तक आए और आपसे बिना मिले वापस चले गए ।"

हमने कहा—"खैर ! मैं जानता हूं आप इतनी बेवकूफ नही है । लेकिन यह तो बताओ अपनी १० तारीख कोभूपाल पहुँचने की खबर किसी को दी है या नही ?"

पारा ने कहा—'न अभी तक दी और न अब दूंगी, नही तो आप पकड़े जाएंगे ।"

हमारी गाड़ी घर के निकट पहुँच चुकी थी । गाड़ी से उतर कर गोल कमरे में आये । पारा ने आते ही रसोईघर में जाकर खानसामे से सारा हाल सुना और यह सुनकर बहुत खुश हुई कि हमने मिरजा साहब से चार्ज लेकर सारा प्रबन्ध खुद सम्हाल लिया है ।



९

★★

मिरजा साहब के रंग-ढंग से ऐसा मालूम हुआ मानो उन्होंने फकीरी ले ली हो। अब वह पूरी पांचों समय की नमाज और फकीरों की सी बातें करने लगे थे। जब दिन भर उनके दर्शन न हुए तो हम खुद उनके कमरे में गये। घुसते ही देखा आप नमाज पढ़ रहे हैं। कमरे का भी अजीब हाल था, न कालीन, न सोफा, एक ओर पलंग है, एक छोटी सी मेज पर उनकीं किताबें और बटुआ पड़ा है। कहने का अर्थ यह उनके साथ कमरे का भी फकीरी हाल था। दुल्हन की तरह सजे कमरे की यह हालत देखकर दुख हुआ और अभी हम इसी परिवर्तन पर विचार कर रहे थे कि मिरजा साहब ने अपनी नमाज खत्म की। हमने कहा—"मिरजा साहब यह क्या हाल बना रखा है। कालीन वगैरह कहाँ गईं ?"

मिरजा साहब ने कहा—"वह सब मैंने बन्द कर दिया है। यहां पड़ा-पड़ा खराब हो रहा था। इन सामानों की मुझे क्या जरूरत है। आदमी जितना ही सामान अपने लिए इकट्ठा करता है उतना ही इस जंजाल में फंसता जाता है।"

हमने कहा—"अच्छा ! तो यह बात है। अब आपने

जन्नत (स्वर्ग) पर छापा मारने का इरादा कर लिया है।"

"अरे 'तोबा' कीजिये। भला हमारी क्या हस्ती है जो जन्नत पा सकें। इतना ही क्या कम है कि आखिरी दिनों में उसे याद करलें और अपने गुनाहों के लिये क्षमा मांगें।" मिरजा साहब ने फरमाया।

हमने आदर भाव से कहा—"तो अब आपने फकीरी जिन्दगी बिताने का इरादा कर लिया है।" इस पर मिरजा साहब ने हाथ मटकाते हुए कहा—"काश ! ऐसा हो सके।" देर तक इसी तरह की बातें करते हुए अचानक उछल कर मिरजा साहब ने कहा—"महसुन साहब के यहां एक अजीब घटना घटी है।"

हमने भी रात क्लब के कुछ मेम्बरों से उड़ती-उड़ती खबर सुनी थी कि रुखसन्द अजीब रंग लाई है परन्तु पूरी बात का पता न लगा था। अब जब मिरजा साहब ने जिक्र किया तो हमने कहा—"हां मैंने भी कुछ सुना है लेकिन माजरा क्या है ?"

मिरजा साहब ने कहा—"कल महसुन साहब के यहां का मुंशी आया था। उससे मालूम हुआ कि महसुन साहब की लड़की साहिबा ने तूफान मचा दिया है। आजकल घर में कोहराम मचा रहता है। महसुन साहब की साहब बहादुरी रफूचक्कर हो गई है। साहबजादी ने उन्हें नोटिस दे रखा है कि भला इसी में है कि मेरे और मिस्टर जेकब के प्रेम को हँसी-खुशी मन्जूर कर लो, नहीं तो कानूनी तौर पर

६

★★

मिरजा साहब के रंग-ढंग से ऐसा मालूम हुआ मानो उन्होंने फकीरी ले ली हो। अब वह पूरी पांचों समय की नमाज और फकीरों की सी बातें करने लगे थे। जब दिन भर उनके दर्शन न हुए तो हम खुद उनके कमरे में गये। घुसते ही देखा आप नमाज पढ़ रहे हैं। कमरे का भी अजीब हाल था, न कालीन, न सोफा, एक ओर पलंग है, एक छोटी सी मेज पर उनकी किताबें और बटुआ पड़ा है। कहने का अर्थ यह उनके साथ कमरे का भी फकीरी हाल था। दुल्हन की तरह सजे कमरे की यह हालत देखकर दुख हुआ और अभी हम इसी परिवर्तन पर विचार कर रहे थे कि मिरजा साहब ने अपनी नमाज खत्म की। हमने कहा—"मिरजा साहब यह क्या हाल बना रखा है। कालीन वगैरह कहाँ गई ?"

मिरजा साहब ने कहा—"वह सब मैंने बन्द कर दिया है। यहां पड़ा-पड़ा खराब हो रहा था। इन सामानों की मुझे क्या जरूरत है। आदमी जितना ही सामान अपने लिए इकट्ठा करता है उतना ही इस जंजाल में फंसता जाता है।"

हमने कहा—"अच्छा ! तो यह बात है। अब आपने

जन्नत (स्वर्ग) पर छापा मारने का इरादा कर लिया है।"

"अरे 'तोबा' कीजिये। भला हमारी क्या हस्ती है जो जन्नत पा सकें। इतना ही क्या कम है कि आखिरी दिनों में उसे याद करलें और अपने गुनाहों के लिये क्षमा मांगें।" मिरजा साहब ने फरमाया।

हमने आदर भाव से कहा—"तो अब आपने फकीरी जिन्दगी बिताने का इरादा कर लिया है।" इस पर मिरजा साहब ने हाथ झटकाते हुए कहा—"काश ! ऐसा हो सके।" देर तक इसी तरह की बातें करते हुए अचानक उछल कर मिरजा साहब ने कहा—"महसुन साहब के यहां एक अजीब घटना घटी है।"

हमने भी रात क्लब के कुछ मेम्बरों से उड़ती-उड़ती खबर सुनी थी कि रुखसन्द अजीब रंग लाई है परन्तु पूरी बात का पता न लगा था। अब जब मिरजा साहब ने जिक्र किया तो हमने कहा—"हां मैंने भी कुछ सुना है लेकिन माजरा क्या है ?"

मिरजा साहब ने कहा—"कल महसुन साहब के यहां का मुंशी आया था। उससे मालूम हुआ कि महसुन साहब की लड़की साहिबा ने तूफान मचा दिया है। आजकल घर में कोहराम मचा रहता है। महसुन साहब की साहब बहादुरी रफूचक्कर हो गई है। साहबजादी ने उन्हें नोटिस दे रखा है कि भला इसी में है कि मेरे और मिस्टर जेकब के प्रेम को हँसी-खुशी मन्जूर कर लो, नहीं तो कानूनी तौर पर

मैं बालिग़ हूं और अदालत में जाकर कहूंगी कि मै मिस्टर जेकब से शादी करना चाहती हूं।"

हमने कहा—"मि० जेकब वही न जो महसुन साहब की कोठी के सामने एंग्लो इण्डियन इन्जीनियर रहता था।"

मिरजा साहब ने कहा—"जी हां, वही। लेकिन अब महसुन साहब बहुत उछल-कूद मचा रहे हैं हालांकि उन्होंने खुद ही रुखसन्द को मौका दिया कि वह जेकब के साथ क्लब जाय और रात को दो-दो बजे वापस आए। हवाखोरी के लिये दोनों साथ-साथ जाते थे। जेकब शाजादा के साथ घर आता था और बिना पूछे हरेक कमरे में चला जाता था। मुंशी ने तो यहां तक कहा कि साहबजादी साहिबा शराब को भी अपना चुकी हैं। महसुन साहब को इसका भी पता था लेकिन वह चुप रहे और अब जब पानी सिर से ऊंचा हो गया है तो हाथ-पांव मार रहे हैं।"

हमने कहा—"मिरजा साहब! अल्लाह ने मुझे साफ-साफ बचा दिया नहीं तो आपा ने तो उससे सम्बन्ध की बातचीत शुरू करदी थी।"

मिरजा साहब ने कहा—"जी हां, मुंशी ने मुझसे यह भी कहा है कि आपसे सारी बात कह दूं क्योंकि महसुन साहब कोशिश कर रहे हैं कि बेटी को किसी तरह राजी कर लें कि वह आपसे निकाह करना मंजूर कर ले।"

हमने कहा—"मुझसे! भला मैंने उनका क्या बिगाड़ा है जो वह मुझसे बदला लेना चाहते हैं?"

मिरजा साहब ने कहा—"ऐसी नौबत ही नहीं आएगी, क्योंकि रुखसन्द शादी के सिलसिले में जेकब के सिवाय और किसी का नाम नहीं लिया चाहती।

हमने कहा—"धिक्कार है ऐसी आजादी पर। काश ! इस समय आपा यहां होतीं और मैं उन्हें सात सलाम करता।

"सुना है वहां पिस्तौल भी निकल आए थे।"

"पिस्तौल ! यहां तक बात बढ़ गई।" हमने कहा।

"हां, बात यह हुई कि महसुन साहब बेटी से इस सिलसिले में लड़कर बाहर गये और मना कर गए कि मेरे घर पर जेकब न आए लेकिन जब घर वापस आये तो पता लगा कि जेकब रुखसन्द के कमरे में है। उनका खून उबल पड़ा, उन्होंने पिस्तौल निकाल लिया। यह तो शुक्र समझिये कि जेकब ने अक्लमन्दी से काम लिया। वह पीछे की दीवार फांद कर निकल भागा नहीं तो गजब हो जाता। लेकिन इसके बाद बेटी ने बाप की वह खबर ली कि बड़े मियां के होश ठिकाने आ गये। उसने कहा—"यह मेरी बेइज्जती है, मैं इसे सहन नहीं कर सकती। इन हालात में मैं अपनी जिन्दगी को भी खतरे में पाती हूं।" महसुन साहब को आग लग गई। उन्होंने बेटी पर पिस्तौल ताना तो उसने डट कर सामना किया और कहा कि इससे मर जाना कहीं अच्छा है।"

हमने मिरजा साहब से कहा कि खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे आफताब के चंगुल से बचाया और रुखसन्द से

भी दूर रखा नहीं तो आज पता नहीं क्या कुछ होता।

यह सुनकर मिरजा साहब हमारी तरह-तरह से तारीफ करने लगे जो कि हमें बिल्कुल पसन्द न थी। हम लोग इसी तरह की बातचीत में लगे थे कि नौकर ने अखबार लाकर दिया। हमने अखबार पर सरसरी निगाह डाली कि एक खबर पर आंख गई जिसका शीर्षक था—

प्रेमी प्रेमिका की कहानी !

शहर के मशहूर बैरिस्टर की बेटी द्वारा बाप पर हमला !

लड़की और उसका प्रेमी गिरफ्तार !

और अब घबरा कर खबर देखी तो वही महसुन साहब और रुखसन्द की कहानी थी। खबर पढ़ने के बाद पता लगा कि रुखसन्द ने बाप का पिस्तौल लेकर उन पर गोली चला दी जिससे महसुन साहब घायल होकर अस्पताल पहुँचाये गये। रुखसन्द और मिस्टर जेकब को पुलिस ने गिरफ्तार कर हवालात में बन्द कर रखा है।

हमने यह खबर मिरजा साहब को भी सुनाई और देर तक इसी तरह की बातें करने लगे कि संसार में क्या कुछ होने लगा है। आखिर में मिरजा साहब ने कहा—"साहब वह आपके रिश्तेदार थे। आपको अस्पताल जाकर पता करना चाहिये।"

यह सुन हमने कहा—"हां, मैं खुद सोच रहा था। आप भी साथ चलिए।" घर से तैयार होकर हम दोनों ने अस्प-

ताल पहुँच कर आसानी से पता लगा लिया कि महसुन साहब किस वार्ड में हैं और हमें उनसे मिलने की इजाजत लेने में देर न लगी क्योंकि डाक्टर रहमान ड्यूटी पर थे। उन्ही से मालूम हुआ कि महसुन साहब की जिन्दगी को कोई खतरा नहीं है लेकिन अपनी इकलौती बेटी के इस व्यवहार से उन्हें बहुत दुःख हुआ है।

हम डाक्टर रहमान से बातें करते हुए जब महसुन साहब के कमरे में गए तो हमें देखते ही वह कहने लगे—"जीते रहो बेटा! मेरी जिन्दगी से शिक्षा लो और यह भूलने की कभी भी कोशिश न करना कि तुम पूर्वी हो। अगर मैं पश्चिमी सभ्यता के बहाव में न बहता तो शायद यह दिन देखने को न मिलते।"

महसुन साहब की आवाज में पहले की तरह अक्खड़पन न था। हम चुपचाप उनकी बातें सुनते रहे और मिरजा साहब डाक्टर रहमान को सलाह देते रहे कि इस तरह के रोगियों को फलां-फलां दवा बहुत लाभदायक होती है। डाक्टर रहमान मिरजा साहब की बात को बड़े गौर से सुन रहे थे मानो उनके गुरू मेजर जनरल इस्पेरा लेक्चर दे रहे हों।

महसुन साहब ने बहुत सी बातों के अलावा यह भी कहा कि तुम्हारी आपा उस नागिन रुखसन्द से तुम्हें डसवाना चाहती थी जिसने अपने बाप पर फन उठाया। शुक्र है कि तुम भाग्यवान थे।

डाक्टर साहब ने कहा—"अब आप इनके पास अधिक समय तक न बैठें और इन्हें आराम करने दें इसलिए महसुन साहब से बिदा होकर घर चले आए।"

× × ×

अब हमारा यह नियम हो गया कि हम प्रतिदिन दोपहर के बाद अस्पताल जरूर जाते और महसुन साहब के लिये अखबार, किताबं, रिसाले आदि ले जाते। अब तक हमें महसुन साहब से कोई लगाव न था किन्तु इस बीमारी के बीच हम उनके निकट आ गए। एक दिन उन्होंने कहा—"मुझे अपने यहां ही ले चलो। मैं अब अपने घर जाकर उन बातों को नहीं याद करना चाहता।" हम उन्हें अपने यहां ले आए मिरजा साहब को यदि रोगियों की सेवा करने का मौका मिले तो वे सौ नर्सो को भी मात दे सकते हैं। महसुन साहब को अपने घर लाना मैंने इसलिए भी मुनासिब समझा क्योंकि मैं भूपाल जाने वाला था। पारा का इम्तिहान खत्म हो चुका था। इम्तिहान की तैयारी के कारण ही वह महसुन साहब को देखने भी अब तक न आ सकी थी। जब वह अपने इम्तिहान से छुट्टी पाकर घर आई तो महसुन साहब ने कहा—"काश ! इस समय मंजूर मेरे पास होते तो मैं उनसे कहता कि मंजूर एक तुम ऐसी बेटी के बाप बनकर भाग्यशाली हो और एक मैं अभागा हूं ऐसी बेटी का बाप होकर !"

पारा ने कहा—"तो क्या आप मुझे अपनी बेटी नहीं समझते ?"

"खुदा न करे, ऐसी बात मुँह से न निकालो। मेरी बेटी इन्सान नहीं, जहरीली नागिन है, बाप की हत्या करने वाली।"

हमने कहा—"आपने फिर यह बहम छेड़ दी।"

"अच्छा भाई अब नहीं कहूँगा—" कहकर बच्चों की तरह हँसने लगे। फिर कहा—"बेटी मेरा सिगार केस तो अन्दर से भर लाओ।"

और जब पारा अन्दर चली गई तो उन्होंने हमसे कहा—"मैं इस लड़की को तुम्हारे लिए मंजूर से मांगना चाहता हूँ। वह मेरी बात नहीं टालेगा। मुझे यह लड़की बहुत पसन्द है।"

हमने कहा—"जी हां आपसे मिरजा साहब या किसी ने कहा होगा।"

"क्या कहा होगा?" महसुन साहब ने भोलेपन से कहा।

"यही कि पारा के साथ मेरा सम्बन्ध तय हो गया है।" हमने कहा।

"सचमुच, तुम्हें मेरी कसम, सच बताओ, तुमने तो मुझे बताया तक नहीं। भई बहुत अच्छा हुआ। मैं मंजूर से इस लड़की को मांगे लेता हूँ ताकि इसकी शादी में खुद अपनी बेटी की तरह करूँ।" यह महसुन साहब ने बिस्तरे से उछल कर बैठते हुए कहा।

ज्यों ही पारा सिगार केस लेकर अन्दर से आई त्यों ही महसुन साहब ने उसका हाथ पकड़ कर कहा—"हां भई, तो

बना लें तुम्हें बेटी।"

पारा ने कहा—"बनाई तो वह चीज जाती है जो बनी-बनाई न हो। क्या मैं आपकी बेटी नहीं हूं ?"

महसुन साहब ने कहा—"यह तो ठीक है लेकिन अब बनाना ही पड़ेगा। अच्छा ! यह बताओ तुम्हारी गाड़ी किस वक्त जाती है ?"

पारा ने कहा—"नौ बजकर पचास पर छूटेगी।"

इसके बाद और भी कई तरह की बातें होती रहीं। महसुन साहब के आ जाने से घर में चहल-पहल रहा करती थी। अब महसुन साहब के अन्दर पहले की तरह गर्व न था और न साहब-बहादुरी का ढोंग ही। अब वह बच्चों के साथ बच्चों की सी बातें करते बहुत भले लगते थे। भूपाल जाने की तैयारी में वह और मिरजा साहब दोनों लगे हुए थे। आखिर साढ़े आठ बजे हम दोनों स्टेशन चल पड़े।

फर्स्ट-क्लास का कमरा हमारे लिए रिजर्व था। नौकर ने बिस्तर लगा दिए और हमने तार दिलवा दिया कि कानपुर के स्टेशन पर खाना खाएंगे।

गाड़ी ने जब प्लेटफार्म छोड़ दिया और अपनी चाल कुछ तेज करदी तो पारा ने कहा—"कल के बाद पता नहीं आपसे कब भेंट हो।"

हमने कहा—"पागल ! अब देर ही क्या है ? मेरा ख्याल है कि आपके वहां पहुंचते ही शादी के प्रबन्ध शुरू हो जाएंगे।"

पारा ने कहा—"अच्छा ! आप मेरी गैर हाजिरी में अपने खाने-पीने की पूरी पाबन्दी कीजिएगा।"

हमने कहा—"पारा ! क्या तुम्हें मालूम है कि मैंने तुम्हारे साथ भूपाल तक चलने का प्रोग्राम क्यों बनाया है ?"

"केवल भूपाल तक साथ रहने के लिए।" पारा ने कहा।

हमने कहा—"केवल इतना ही नहीं बल्कि एक बात यह भी है कि मैं चाहता हूं कि हम दोनों एक-दूसरे को भली प्रकार समझ लें, एक-दूसरे के रहस्य की बातें जान लें और मैं चाहता हूं कि अपनी तमाम कमजोरियों को भी बता दूं ताकि बाद में कोई शिकायत न हो।"

"लेकिन मैंने आपको देवता मात्र समझकर कब अपनाया है। प्रत्येक मनुष्य में कुछ न कुछ खामियां होती हैं।"

कानपुर स्टेशन समीप था। गाड़ी की चाल कम हो रही थी। हमने पारा से कहा—"यहां पर खाना खाने के बाद अपनी कहानी तुम्हें सुनाऊंगा।"

कानपुर के स्टेशन पर खाना खाकर निबटे थे कि गाड़ी ने सीटी दी। हमने पूछा—"नींद तो नहीं आ रही।"

पारा ने कहा—"इतनी असभ्य नहीं हूं कि यह सुनहला मौका हाथ से जाने दूं।" और फिर हमारी बातें शुरू हुईं। मैंने आफताब की पूरी कहानी, लाशों की घटनाएं, मिरजा साहब के हथकण्डे सुनाते हुए रात के दो बजा दिये। पारा ध्यान से सारी बातें सुनती रही और अन्त में कहा—"इनमें तो आपकी कोई कमजोरी नहीं झलकती। मैं तो समझती थी

कि आप कमजोरी की बात कहेंगे और मै माफ कर दूंगी।"

हमने कहा—"पारा! मैंने इस कहानी का सुनाना इसलिए जरूरी समझा कि शादी के बाद अगर इन घटनाओं का पता लगता तो न जाने तुम क्या सोचती और आपसी मन-मुटाव की नौबत आ सकती थी।"

"लेकिन मै आपको इतना चालाक न समझनी थी।"

"हां शक्ल से मूर्ख नहीं दिखता, यही शुक्र है।"

रात काफी हो चुकी थी और हमारी आंखों में नींद आ गई इसलिये हम दोनों सो गए और आंख झांसी के स्टेशन पर खुली। सुबह का नाश्ता करने के बाद फिर इधर-उधर की बातें होने लगीं। भूपाल पास आ रहा था इसलिए नौकर सामान बांधने के लिये आ गया।

भूपाल के स्टेशन पर उतर कर पारा को विदा करना चाहा लेकिन उसने कहा—"घण्टे भर के बाद आपकी ट्रेन आ रही है इसलिए आपको विदा करके ही घर जाऊंगी।" आखिरकार हम दोनों ने स्टेशन पर ही खाना खाया, बातें की। इतने मे हमारी ट्रेन आ गई और मैं उसमें सवार हो गया। हमने देखा कि पारा ट्रेन के छूटने के कुछ देर तक अपना रूमाल हिलाती रही और फिर वही रूमाल आंखों पर पहुँच गया।

—o—

१०

★★

आपा और दूल्हा-भाई आ चुके थे और उधर महसुन साहब ने चचा मंजूर को अपने ही यहां बुला लिया था। वह अपने यहां से ही पारा की शादी करना चाहते थे। इन दिनों दोनों घरों में शादी की तैयारियां बहुत जोर-शोर से हो रही थीं और मिरजा साहब दोनों ओर के प्रबन्धक थे, किन्तु हमारे यहां उनके अधिकार कम और महसुन साहब के यहां विस्तृत थे। शादी से पहले ही महसुन साहब ने चचा मंजूर को राजी कर लिया था कि वह पारा की शादी खुब करेंगे। चचा मंजूर से हमें इतना ही मालूम हुआ था कि वह महसुन साहब के हृदय में उनकी इकलौती बेटी ने जो घाव पैदा कर दिया था चचा मंजूर इस तरह उस गम को भरना चाहते थे। महसुन साहब धूमधाम के साथ शादी की तैयारी कर रहे थे, दहेज आदि रुखसन्द की शादी वाला तैयार रखा था केवल बारात के आव-भगत के लिए सामान की जरूरत थी। उनके पास न रुपये एवं प्रभाव की कोई कमी थी। शादी के प्रोग्राम में मध्यान्ह के समय उनके यहां एक पार्टी थी जिसमें गवर्नर महोदय भी निमन्त्रित थे और इसी अवसर पर निकाह की रस्म भी थी। रात के डिनर में प्रान्त भर के

प्रतिष्ठित व्यक्ति, सरकारी अधिकारी, बार एसोसियेशन के सदस्य एवं जज सम्मिमित होने वाले थे। इसके बाद विदाई का प्रोग्राम था। दूसरे दिन हमारे यहां दावत थी। महसुन साहब ने शादी का दिन वही नियत किया था जिस दिन धारा का नतीजा निकलने वाला था।

हमारे यहां का सभी प्रबन्ध दूल्हा-भाई को करना चाहिए था लेकिन उनके आलसीपन के कारण आपा ही सारा प्रबन्ध कर रहीं थीं। हम तो दूल्हा थे, हमें शादी के प्रबन्ध से कोई मतलब न था। मिरजा साहब इधर से उधर मोटर दौड़ाते हुए प्रबन्ध करने में दिन-रात एक कर रहे थे। इसी तमाम चहल-पहल में दो हफ्ते बीत गए और वह दिन आ गया जिस दिन महसुन साहब के यहां हमारी बारात जाने वाली थी।

तीसरे पहर हमारे यहां से बारात रवाना हुई। महसुन साहब की कोठी पर बारात पहुँची, वहां पुलिस बैंड के तराने गूंज रहे थे और दरवाजे पर उन्होंने जो फाटक "बाबे शकील" के नाम से बनाया था उस पर रोशन-चौकी की धुन बज रही थी। बारात के पहुँचते ही हम लोगों को उस ओर पहुँचा दिया गया जहां ऐट-होम (पार्टी) का प्रबन्ध था। अभी बारात पहुँची ही थी कि गवर्नर महोदय के आने का समाचार मिला। गवर्नर से हमारा परिचय कराया गया और इसके बाद निकाह की रस्म पूरी हुई। निकाह के बाद महसुन साहब के संकेत पर शादी के वस्त्र उतार कर ओर

सूट पहन कर हम बाहर आए और पार्टी में शामिल हुए। गवर्नर महोदय को लेडी साहिबा दुल्हन को देखने अन्दर भेज दी गयीं। गवर्नर के जाने के बाद हमें औरतों के कमरे में भेज दिया गया और बाहर गाने-बजाने की महफिल शुरू हो गई। हम अभी अन्दर ही थे कि पारा के भाई जबीर मियां अखबार लिए उछलते कूदते आए और नारा लगाया–"पारा ने फस्ट डिवीजन मार दिया।"

पारा की मां ने फौरन ही नमाज पढ़ी और पारा ने घूंघट में ही अखबार देखा। महसुन साहब अन्दर आए और पारा के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—"बधाई हो बेटा, मैं इस खुशी के अवसर पर तुम्हें शकील से ज्यादा कीमती तोहफा और क्या दे सकता हूं।" और "पारा तुमने मेरी मेहनत ठिकाने लगा दी।" इन शब्दों में चचा मंजूर ने अपनी प्रसन्नता प्रकट करी।

अन्दर सलामी की रस्म पर चचा मंजूर और महसुन साहब के बीच लड़ाई शुरू हो गई। चचा मंजूर ने कहा—"जब मैं पारा को सौंप चुका, फिर इस सबकी क्या जरूरत है।"

और महसुन साहब कह रहे थे—"मैं पूछता हूं कि आपको बाप-बेटी के बीच बोलने का क्या हक़ है।" उन्होंने पचास हजार का एक चैक हमारे हाथ पर रखते हुए कहा—"बेटा! मैंने तय किया था कि मोटर दूंगा लेकिन अब तुम

अपनी मरजी के मुताबिक खुद खरीद लेना। यह है गाड़ी का मूल्य।"

इसके बाद दूसरे लोगों ने सलाम कराई दी।

डिनर में सम्मिलित होने के लिए हम जा ही रहे थे कि महसुन साहब ने हाथ पकड़ कर कहा—"भाई कमरे में जाकर डिनर सूट पहन लो और जल्दी करो। वहां जस्टिस आदि होंगे, उनसे तुम्हारा परिचय कराना है।" बाहर आए तो सभी आए हुए मेहमानों से हमारा परिचय कराया गया। डिनर के बाद गाने-बजाने की महफिल दो बजे रात तक चलती रही। इसके बाद हम पारा—जो दुल्हन बनी थी—के साथ एक बढ़िया कार में अपने घर आए।

हमारा घर भी सजा हुआ था, रोशनी का प्रबन्ध था, आतिशबाजी छूट रही थी। लगभग चार बजे हमने पारा को देखा। हमने कहा—"इम्तिहान की सफलता पर बधाई।"

पारा ने कहा—"अब मेरे साथ यह खुशी भी आपकी हो चुकी है, इसलिए मेरी ओर से बधाई स्वीकार कीजिये।"

हमने आज पहली बार पारा का हाथ पकड़ कर कहा—"मैं आपकी ओर से आपको ही क्यों न स्वीकार करूं।"

सुबह से ही हमारे यहां दावत का सिलसिला चालू हो गया था। आज दूल्हा-भाई भी अपना जौहर दिखा रहे थे और क्राकरी का एक सैट तोड़ कर तथा एक मेज उलट कर

आपा से झिड़की खा अपने लिहाफ में बैठ कुछ पढ़ने में लग गए।

हमें दावत से कोई दिलचस्पी न थी अलबत्ता ऐट-होम (पार्टी) में शामिल होने के लिए पारा को तैयार किया और हमने वही सूट पहना जो पारा ने नुमाइश में बनवाया था। जिस समय हम दोनों ऐट-होम में शामिल होने के लिए बाहर निकले आपा ने गले लगाते हुए कहा—"मेरा भैया, मेरा बीरन!"

और हम इसके जवाब में सचमुच रो पड़े। हम तो इसलिए रोये थे कि इस वक्त बहन के रूप में मां की तस्वीर जाग उठी थी लेकिन समझ में न आया कि पारा क्यों रोई। आपा ने पारा को गले लगा कर प्यार किया और अपने साथ अन्दर ले जाकर उसका मुँह धुलवाया और फिर से मेक-अप कराया तब कहीं हम बाहर जाने के लायक हुए। बाहर आते ही हमारा स्वागत मिरजा साहब ने किया और पारा के हाथ में एक लिफाफा देकर बोले—"लो दुल्हन, यह तुम्हारी मुँह दिखाई है।"

हम पारा का मेहमानों से परिचय कराने तथा ऐटहोम की दिलचस्पियों में लगे हुए थे कि महसुन साहब ने यह पूछ कर कि "मिरजा साहब दिखाई नहीं देते?" चौंका दिया।

पूछ ताछ शुरू हुई। जब उनके कमरे में जाकर देखा तो हैरानी हुई क्योंकि कमरे में मिरजा साहब का कोई

सामान न था। नौकर से पूछा तो उसने कहा कि मिरजा साहब तांगे वाले से कह रहे थे कि स्टेशन चलो, वक्त कम है, ट्रेन छूटने वाली होगी।"

हमने वापस आकर पारा से कहा—"जरा लिफाफा तो देखो जो मिरजा साहब ने मुँह दिखाई के सिलसिले में दिया है।"

पारा ने लिफ़ाफा दिया जिसे खोला। उसमें एक खत था। हमारे चारों ओर महसुन साहब, चचा मंजूर, दूल्हा भाई खडे थे और हम जोर की आवाज से खत पढ़ रहे थे:—

दुल्हन !

यह खत नहीं, हार का मानना है। मैं आज तुम्हें बधाई देता हूँ कि तुम्हें वह पति मिला है जिसे मेरे जैसा षडयन्त्रकारी भी अपनी किसी चाल से न हरा सका और खुद हम चाल में मुँह की खाने के बाद आज अपनी हार स्वीकार कर रहे हैं।

मैंने तुम्हारे पति को बरबाद करने में कोई कसर बाकी न रखी लेकिन मैं सफल न हुआ। अगर कहीं मेरी दाल न गली तो वह तुम्हारा पति है जिसने मेरी हर चालाकी को पूरा न होने दिया। मेरी चतुरता का मुँह तोड़ जवाब दिया और मुझे विवश कर दिया कि मैं अपनी करतूतों को छोड़ कर सीधे रास्ते पर आने की कोशिश करूं। मैं आज ही वतन छोड़कर जा रहा हूँ—खुदा हाफिज।

मिरजा

महसुन साहब ने कहा—"कमाल है साहब ! लेकिन यह हरफन मौला था ।" और दूल्हा भाई बोले—"बड़ी खूबियां थीं और बहुत ही लायक था ।"

हमने कहा—

"बुकरात कहिए बुकरात !"

❁ समाप्त ❁